गिररी गौरव

(राजस्थान का महाभारत—राजस्थानी दूहा में)

रचयिता

हनुवन्तसिंह देवडा

अनुवादक सम्पादक

लक्ष्मीकान्त जोशी

प्रकाशक

भगवती प्रकाशन संस्थान, जोधपुर

समर्पण

मरूधरा के महाभारत गिररी सुमेल
समर के अमर शहीदो की गौरव गाथा
'गिररी गौरव' शहीदो की
परम पावन स्मृति को अनन्य श्रद्धा युक्त
हृदय से सादर समर्पित—

—हनुवन्तसिंह देवडा

फोन 3713330
3713363

समाजवादी जनता पार्टी

16, डा० राजेन्द्र प्रसाद रोड
नई दिल्ली–110 001

दिनाक 24 2 95

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भगवती प्रकाशन सस्थान अपना द्वितीय शौयपूण ग्रथ गिररी गौरव' का प्रकाशन करने जा रहा है, जिसमे उन सभी वीर योद्धाओ के जीवन पर प्रकाश डाला जायेगा जि हाने अपने देश, जनता व सम्मान की रक्षाथ बलिदान दिया था।

राजस्थान के वीर योद्धाओ का गौरवमय इतिहास रहा है। स्वतत्रता सग्राम मे भी आजादी के लिए राजस्थान के अनेक जुझारू योद्धाओ ने कुर्बानिया दी। आज देश की आर्थिक सप्रभुता के लिये खतरा बना हुआ है, ऐसी स्थिति का मुकाबला करने मे यह प्रकाशित ग्रथ आम जनता के लिये प्रेरणा देगा, ऐसी मुझे उम्मीद है।

शुभकामनाओ सहित

चन्द्रशेखर
अध्यक्ष

UMAID BHAWAN
JODHPUR

दिनांक २८.२.९५

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भगवती प्रकाशन संस्थान वीरों की गौरव गाथाओं के प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य करने में प्रयासरत है। इसी क्रम में 'गिररी गौरव' ग्रन्थ का विमोचन २१ मार्च ९५ को किया जा रहा है।

इस शोधपूर्ण ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

गजसिंह

महाराजा गजसिंह
मारवाड़-जोधपुर

प्रकाशकीय

इतिहास हमारे वतमान की आधार शिला और प्रशस्त भविष्य का वातायन है। किसी भी राष्ट्र, समाज अथवा जाति की प्रगति की पृष्ठभूमि मे उसकी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक उपलब्धिया होती है। अपने स्वर्णिम अतीत की अनभिज्ञता या उपेक्षा से हम आत्मबोध नही होता। जो समाज या व्यक्ति इतिहास की धारा से कट जाता है वह अपनी महान सास्कृतिक धरोहर से वचित होकर वतमान या यथार्थ की सतही, सकीर्ण भौतिक स्पर्धा मे निरुद्देश्य या दिग्भ्रमित हो जाता है।

"तिहास हमे राष्ट्रीय चरित्र सामाजिक मर्यादाओ जीवन की नैतिकताओ और मानवता के मूल्यो से ऊर्जस्वित करता है। स्वामी विवेकानन्द ने लिखा—

जिस दिन भारत सन्तान अपने अतीत की कीर्ति कथा को भुला देगा, उसी दिन उसकी उन्नति का माग बन्द हो जायेगा। पूवजो के अतीत पुण्य काय आने वाली सन्तान का सुकम की शिक्षा देने के लिए अत्यन्त सुन्दर उदाहरण है। जो चला गया वही भविष्य मे आग आयगा।'

सौभाग्य से शाश्वत भारतीय संस्कृति की अक्षुण्ण धारा हमारे बहुआयामी ऐतिहासिक ग्रथो मे सरक्षित है। चाहे वे रामायण, महाभारत जसे महाकाव्य हो या नाटक, उपाख्यान अथवा लोक सम्पदा हो या हमारे स्थापत्य शिलालेख, मन्दिर, देवल मुद्राएँ आदि। राजस्थानी नीति वाक्य है—

"नाव गीतश नै नींनडा सू रहय।"

आमुख

'गिररी सुमेल समरागण' अब तक देश काल और परिस्थिति-जन्य विकसित मानवीय जीवन आदर्शों का मुग्ध सस्कार है। वह अनत जाग्रत आत्माओं का निज आन मान और मर्यादा के लिए समय आने पर सवस्व न्यौछावर करने की तमन्नाओं का चिर प्रेरणा-स्पद आगार है, और है मानव जीवन की अब तक पनपी हुई महत्ता का मन भावन परम पावन मदिर। उसका गौरव गान, उन सुभट्ट शूरमो की पावन स्मृति मे अतस से उद्वेलित हो झूम झूम उठे तो क्या विस्मय, क्या आश्चर्य !

अपनी मातृभूमि की आजादी के सरक्षण के निमित्त मौत को मनुहारने वाले वीरवर जैताजी, कू पाजी खेमकरणजी उदावत, प चायणजी, अखैराजजी सोनगरा और अनेक जु भारू अमर शहीदो द्वारा लडा गया। यह मरुधरा का महाभारत, मातृभूमि के प्रति त मय हृदयोल्लास मे डूबा एक सस्कारित भाव सरोवर है जिसम डुबकी लगाने पर मानवीय जीवन की पवित्रता, सामाजिक निमलता वयक्तिक उज्ज्वलता तथा नैतिक उच्चता की लहरे लहर लहर लहराती है। उसके गौरव गीत जन मन का सगीत वन कर जन साधारण के स्वरो मे बिखर कर मुखर उठे ता क्या आश्चय ! क्या आश्चय !! राव मालदेव की मरुधरा पर जव विपदा के बादल छाय पचमागी भावावेश मे अपना ने ही जब शेरशाह सूरी को मातृभूमि के विध्वस के लिए आमत्रित किया और जब मालदेव पचमागिया के जाल मे फस गए। वहम से वशीभूत मरुधर नरेश मालदव अपने स्वामिभक्त सरदारा के प्रति अविश्वास कर गिररी सुमेल समरागण से पलायन कर गया। अपने विरोधियो को पराजित करने के लिए शक्ति की अपेक्षा दृढता अधिक आवश्यक है। दृढता की चट्टान से टकराकर

विरोधी तरगें उसी प्रकार नष्ट हो जाती हैं जिस प्रकार काल मे टकराकर जोवन। इस दृढता की प्राप्ति का सरलतम साधन है विवेकपूरण निणय लेने के अभ्यास की पुनरावृति। यह सब कौन समझाता आत्म विस्मृत किंकतव्यविमूढ राव मालदेव को। बस यह हुआ कि सुख आहत हो गया मरुधरा का, उमग शात हो गई और करुणा बरवस रो पडी बेवस कोने मे। शौयमय साधना का दीप प्रज्ज्वलित नही कर सका राव मालदेव। आत्म ज्योति की लौ से जीवन दीप नही जला सका वह। वह यह नही समझ सका कि यदि आजादी का सरक्षण चाहते हो, उसके उपभोग का सच्चा सुख चाहते हो तो सवप्रथम दारुण दुख झेलने के लिए तत्पर हो जाओ, स्थिर ऐश्वय चाहते हो तो भिखारी बनना स्वीकार करो, सुखदाई राज्य चाहते हो तो दासता के कटु अपमान का अनुभव करना सीख जाओ और वास्तविक शाति चाहते हो तो क्रूर सघष की तयारी मे जुट जाओ। ठीक ही तो है—

स्वतत्रता का मूल्य प्राण है
देखें कौन चुकाता है।
देखे कौन सुमन शया तज
कटक मग पर आता है॥
सकल मोह ममता को तजकर
माता जिसको प्यारी हो।
मातृभूमि के लिए राज्य तज
जो बन चुका भिखारी हो॥

ऐसे ही नरपुगवो के चिर श्रद्धास्पद समूह ने अपनी आन मान, मर्यादा एव मातृभूमि की आजादी की सुरक्षा का महत्ता उत्तरदायित्व झेला था गिररी सुमेल समरागण मे, शूरो ने वीरो ने।

गिररी सुमेल समरागण

किन शब्दो मे तुम्हारा वदन अभिनदन करू ? तुम्हारी पावन स्मृति स्वय मे गदगद भावुकता भरा भव भव भाने वाला सरस *सुधारस मय काव्य है। तुम्हारी स्मृति मात्र मे कितने ही सुभग्ने अकवि* कवि नजर आये तो क्या विस्मय। क्या आश्चय। तुम्हारा गौरव विस्मृति के सागर म कोई वहाए तो क्यू कर ? कसे ? क्षण आते

हैं और चले जाते है। उनके आवर्तन मे स्मृतियो की छाप लगती और घुलती चलती ह। घुले हुए पारद के भीतर से भी कुछ आकार भाककर रूपरेखा से परिचय कराया करते हैं। ये आकार क्षणा के शृगार भी हो सकते है, चाहे स्वत कितने ही दुखमय हो और ये आकार क्षणो के अभिशाप भी हो सकते हैं, चाहे स्वत कितने ही सुख पूण हो। वे व्यक्ति, वे घटनाए वे परिस्थितिया धन्य ह, जिनकी अमिट छाप क्षणो का शृगार है। उनके लिए विस्मृति समय के प्रवाह को रोक कर स्वय घटो प्रतीक्षा करती है। मन मे स तत्व और विराग की वर्षा हुआ करती है— गिररी सुमेल गौरव गाथा ऐसे ही व्यक्तिया ऐसी ही घटनाओ और ऐसी ही परिस्थितियो का निकु ज है और उनकी स्मृति मन का पावन पुण्य है।

जिन्दगी और मौत को दोना मुट्ठियो मे दवाकर मरुधरा की आजादी की रक्षा के लिए शेरशाह सूरी के आक्रमण की उलझन भरे बादला को छिन्न भिन्न करने के लिए प्रवल प्रभजन का रूप धारण किया था। शूर शिरोमणि वीरवर जताजी ने, कू पाजी ने खेमकरणजी उदावत न अखैराजजी सोनगरा ने और उनके अनेकानेक सुभट्ट शूरमाओं ने जिनम उल्लेखनीय इस प्रकार ह। इनके नेतृत्व मे हजारो राजपूत वीरो ने मौत का वरण किया।

1 वीरवर जताजी पचायणोत
2 वीरवर कू पाजी महराजोत
3 राठौड बीदाजी भारमलोत
4 बीदा पवतोत
5 राठौड हरपाल
6 राठौड पत्ता कानावत
7 राठौड कल्ला सुरजणोत
8 राठौड भोजराज पचायणोत
9 राठौड भवानीदास
10 सोनगरा भोजराज अखेराजोत
11 भाटी भेरा अचलावत
12 देवडा अखेराज बनावत
13 साखला धनराज
14 भाटी शूरा पातावत
15 जयमल बीदावत
16 भाटी गागा बजरगोत
17 भाटी माधाराघोत
18 सोढा नाथा देदावत
19 साखला डू गरसिंह माधावत
20 चारण भाना सेतावत
21 राठौड उदयसिंह जेतावत
22 राठौड बीरसिंह
23 राठौड हामा सिहावत
24 राठौड भद्दो पचायणोत
25 सूरा अखैराजोत
26 सोनगरा अखेराज रणधीरोत

27 राठौड़ नेमकरण उदावत
28 राठौड़ सुजानसिंह गागावत
29 राठौड़ रायमल अगराजोत
30 राठौड़ जयमल
31 राठौड़ नीवा अरणदात
32 भाटी पचायण जोधावत
3४ भाटी कल्याण आपलोत
34 भाटी नीवा
35 उहड सुजन नरहरदासोत
36 इ दा किसनाजी
37 राठौड़ भारमल वालावत
38 भाटी हमीर लखावत
39 उहड वीरा लखावत
40 मागलिया हमा नरावत
41 पठान गनीदादखा

(वीर विनोद से साभार)

इन सुभट्ट शूरमाओ और अनेकानेक अमर शहीदो के प्रति अर्पित है म दोहो के रूप म अर्चना के रत्न कण गिररी गौरव ग्रथ अकिंचन की अमर शहीदो के प्रति सतत अमृत वरसाता फुहार के रूप म आने वाली पीढियो के लिए मझधार म वचाती पतवार के रूप म उपेक्षाओ के दौर मे जब दम घुटने लगे तब जीवन देन वाली सजलधार के रूप म दुर्दिनो की सहारक कटार के रूप म और समाज के उठते अकुरो एव नवकलियो के लिए उपहार के रूप म, दिशा और दृष्टि वन जाये। ऐसी मेरी ममतामयी मातेश्वरी आशापुरा से विनम्र प्राथना है। पथ भ्रमित समाज के लिए चिर प्रखर ददीप्यमान यह सरचना मशाल वन जाय शहीदो का यह घोष नई पीढी म रच वस जाय कि—

दुसमण म्हारा दसरो
ज जीतो घर जाय।
म्हारा मरण त्यू हारडो
रीतो ही रह जाय॥

गिररी गौरव– यह मरुधरा का महाभारत 'राजस्थानी दूहा काव्य' की सरचना करने के प्ररणा स्रोत सदाशयी पुरुषो की प्रथम पक्ति म निस्पृह समाजसवी साहित्यप्रमी ठाकुर साहिव भीमसिंह जी सुवाणा धुन के धनी वधुवर माहनसिंहजी वारदा क्षत्रिय दशन के यशस्वी सम्पादक उदारमना अचलसिंहजी भाटी एव श्रद्धास्पद पडित इ द्रराजजी दवे साहव का साभार उल्लेख विनम्रता पूवक करना चाहूगा। मैं उनके प्रति विनयभाव से कृतज्ञता भाव प्रकाशित करता ह। साथ ही माननीय भीमसिंहजी साहिव सुवाणा अध्यक्ष भगवती

प्रकाशन सस्थान', महामत्री, मोहनसिहजी बोरन्दा एव कार्यकारिणी के सदस्यो का इस ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए कृतज्ञता प्रकाश ।

यह मेरा जघन्य अपराध होगा कि मैं साहित्य सुधाशु हिन्दी के मूधन्य लेखक, विचारक प्रोफेसर लक्ष्मीलालजी जोशी का अनन्य स्नेह से स्मरण न करू । उन्होने गिररी गौरव काव्य ग्रन्थ के सपूण सपादन का गरिमामय उत्तरदायित्व अपने पर लेकर मुझ कृताथ किया। मातेश्वरी आशापुरा उन्ह सुख समृद्धि से सराबोर करे। भाई भवरलालजो सुथार का प्रकाशन म त्रुटि सशोधन एव ग्रन्थ की साज सज्जा का निखार देने मे महत्वपूण योगदान रहा तदहेतु शत् शत् साधुवाद ।

अपनी मातृभूमि के लिए बलिदानो से सराबोर काव्य रूप मे यह श्रद्धा सुमनमय गौरव गान पाठको को पसन्द आएगा, उसे जन-मन का प्यार व दुलार मिलेगा ।

इन कामनाओ के साथ

—हनुवन्तसिह देवडा

13/21, देवडा मेनशन, दुर्गादास नगर,
पावटा 'बी' रोड, जोधपुर–342 010
दिनाक 14 फरवरी 1995

सम्पादकीय

शौर्य राजस्थान का पर्याय रहा है, वसे इस मरुभूमि म आध्यात्मिक सन्त साहित्य की विपुल शाश्वत निधि रची गई, प्यासी धरित्री मे मानव के सौन्दर्य बोध की अगणित रस सरिताएँ प्रवाहित हुई जिससे प्रत्येक बालू कण रूप राशि पुज बन गया। आर्नोल्ड जे० टायनबी के लिए यह रहस्य ही रहा कि थार या मरुकान्तार म मृगमरीचिकाओ की अपेक्षा जीवन के इतने बहुआयामी रगो की चिरस्थायी सास्कृतिक रगोलियाँ कसे कण कण म रच बस गई ? मगर शौर्य का औदात्य ही सन्तो की सात्विकता सतियो की पावनता, शक्तियो की मागलिकता प्रणय की निश्छलता और शृगार की शुचिता का उद्गम स्रोत रहा है।

कनल टॉड ने अतिशयोक्ति या स्तुति के रूप म नहीं अपितु ब्रिटिश साम्राज्यवाद को सचेत या सतर्क करने हेतु लिखा कि राजस्थान म एक भी छोटी रियासत नही है जहाँ थर्मोपोली जसा युद्ध न हुआ हो, न कदाचित कोई एसा नगर हो जहाँ लियानिडास जैसा योद्धा उत्पन्न न हुआ हो।

'गिररी गौरव' के चरित नायक जता कू पा जीवकरण प्रसराज और उनके सभी बारह हजार वीर बधु शौर्य के तेजपुज थे। जिन्होंने शेरशाह सूरी की ज्वालामुखी सी तोपो और अस्सी हजार सैनिको के अपार बल को निस्तेज कर दिया।

कवि हनुवन्तसिंह देवडा ने गिररी महासमर के गौरव को पाच सौ ग्यारह दोहो मे प्रबंध काव्य शैली की अपेक्षा उन्मुक्त रूप से क्षात्र धर्म, वीरों के महामानवीय चरित्र, मरण वरण या प्राणोत्सर्ग अथवा बलिदान की महासाधना, राष्ट्र भक्ति की मांगलिकता यहाँ तक कि मरुधरा के प्रेरक परिवेश को ओजस्वी भाषा मे व्याख्यायित किया है। देवडाजी सरस्वती पुत्र है आशुकवि। एक ही रात्रि मे महान महाकाव्य जितने दोहों की श्वासो, उच्छ्वासो की गति से रचने है। लगता है हृदय मे वीर गाथाओ के पारावार का ज्वार उमडता हो। जिसकी तेजस्विता इतनी वेगवान रहती हो कि वे खण्ड काव्यो के द्वीप या महाकाव्यो के महाद्वीपो को निर्मित करने की अपेक्षा अबाध गति से सीपियो शखो मूगो और मुक्ताओ (मोतियो) की बौछार करते रहे। स्पष्ट है कि ऐसी विलक्षण रचना प्रक्रिया मे वयण सगाई अलकरण, काव्य शिल्प जो सहज रूप मे सिद्ध हो गये अन्यथा चरम भावावेग मे अनघड शब्दो मे गिररी के महाभारत को साक्षात चित्रित कर दिया। ऐसे ओजस्वी चित्रण मे पुनरावृतिया अपरिहार्य है। किन्तु जसे पुण्य मन्त्रो या अपने इष्टदेव के नाम को बार-बार हजार या लाख बार उच्चारित करने से साधना सघन हो जाती है। प्राय हम अपने कथन को वजनदार बनाने के लिए शब्दो को दोहराते है, जसे 'बहुत अच्छा' की अपेक्षा 'बहुत बहुत बहुत अच्छा' म श्रेष्ठतम की अभिव्यक्ति हो जाती है। इसीलिए भावातुर कवि देवडाजी ने गिररी के महासमर के महावीरो जैता व कू पा को आधार स्तम्भ मानकर या उस ऐतिहासिक विलक्षण निर्णायक महायुद्ध का केन्द्रीय घटना बना कर कथा बुनना, सुभट्टो की जीवन जय यात्रा का वृतान्त लिखना, युद्ध शैलियो का वर्णन करना उचित न मान कर एक विशाल दार्शनिक चिन्तन फलक का सृजन किया।

राजस्थानी भाषा साहित्य मे वीर गाथा परम्परा का मैं नये सिरे से उल्लेख नही करूगा क्योकि प्राध्यापको की यह प्रवृति है कि वे पाठ्यक्रमो की भाति प्रत्येक वीर गाथा रचना मे भूमिका के रूप मे उसे बार बार दोहराने को शास्त्रीयता मानते है। सुमेल गिररी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि महान इतिहासवेत्ता, श्रद्धेय प्रो० रामप्रसाद जी व्यास ने लिखी है। वह अपने आप मे एक अनुसन्धानात्मक विस्तृत आलेख है, निस्सन्देह इस ग्रन्थ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अध्याय।

देवड़ाजी की इस दोहावली मे क्षत्रिय को जाति क रूप म व्यक्त नही किया गया। क्षात्र धम तो मानवीय चरित्र का परम औदात्य है, राजपूती एक विराट बलिदानी परम्परा है। क्षत्रिय को इतिहासविदा, फिर प्रगतिशीलो ने केवल सामन्त के रूप म चित्रित किया। किन्तु गिररी गौरव का क्षत्रिय मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समान है, जो आदर्शों के प्रति सकल्पबद्ध है।

शौय महज मासल शक्ति या आक्रामकता नही। प्रचण्ड वीर केवल महायोद्धा प्रबल पराक्रमी ही नही अपने दनिक जीवन म अहिंसक, त्यागी तपस्वी अति विनम्र होता है उसम अनन्त करुणा होती है। वह युद्ध केवल राष्ट्र की स्वाधीनता या लोक परित्राण हेतु करता है।

जता और कूपा महाबली ही नही, निष्काम कमयोगी थे। उनके पूवजा ने मारवाड के सत्ता सिंहासन का परित्याग किया। अगणित अवसर एसे आय कि वे महावीर सहज ही स्वय सम्राट बन जाते कि तु उ होने अपनी जन्मभूमि की अखण्डता और भावनात्मक एकता हेतु रक्षा प्रहरी का माग ही चुना। देवडाजी ने इस दुराग्रही धारणा को खण्डित किया है कि राजस्थान के पूव कथित सामन्त स्वाथ केंद्रित पारस्परिक स्पर्धा और अ तक्लह स अभिशप्त रहे। यह विदशी तथा उनके अनुयायी भारतीय इतिहासकारा का घणित पूर्वाग्रह रहा है।

पचायण, महराज, जता कूपा खीवकरण, अखराज तथा एम लाखा क्षत्रिय सहस्राब्दिया क इतिहास मे तलवार के धनी जरूर थे मगर उससे अधिक व गौ पालक, लोक रक्षक, परम भक्त तथा सास्कृतिक महापुरुष रहे। राजस्थान की अमृतमयी भक्ति की धाराएँ उच्च मानवीय लोक मर्यादाएँ, विराट दाशनिक नतिकताएँ इ ही युद्धवीरा क सरक्षण म पल्लवित पुष्पित हुई। देवडाजी न इस पक्ष को निष्ठा से उजागर किया।

क्षत्रिया का स्वाभिमान, दभ या व्यक्तिगत अहम नही था। राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना थी अन्यथा वयक्तिक स्वामिभक्ति होती तो जता व कूपा भी मालदेव के साथ पलायन कर जाते।

उनकी प्रतिबद्धता जन्मभूमि के लिए थी। बारह हजार पारम्परिक शस्त्रास्त्रों से सज्जित क्षत्रियों द्वारा शेरशाह सूरी की अस्सी हजार आग्नेयास्त्रों से परिपूर्ण सैन्य दल के खेमों को धराध्वस्त करना अति मानवीय विलक्षण शक्ति का परिचायक था।

'गिररी गौरव' में प्राणोत्सर्ग, आत्म बलिदान, मरण वरण जैसी राष्ट्रभक्ति की महान साधना को वन्दनीय रूप में अभिव्यक्त किया गया।

प्रौढावस्था में अखराज सोनगरा को जब युद्ध का सन्देश मिला तो वे भाव विभोर हो गये। उन्होंने सन्देशवाहक को अपने हाथ के सोने के कड़े उपहार में दे दिये। क्षत्रिय युद्ध के लिए युद्ध नहीं, मानवता की अस्मिता की रक्षा हेतु समर में मरण को वीरगति या मोक्ष का मार्ग मानते थे। ऋषि मुनियों की भांति आध्यात्मिकता का यह दूसरा उदात्त पहलू था, जिसे कवि हनुवन्तसिंह देवड़ा ने महा मानवीय दर्शन के रूप में व्यक्त किया है।

गिररी गौरव' में क्षत्रिय राजमुकुट से भी अधिक मरुधरा की रेणुका को पूजनीय मानता है। भले ही शेरशाह या मरुधरा के बाहर के लोग इसे बंजर रेगिस्तान मानते हों, मगर क्षत्रियों ने बालू मिट्टी को अपने रक्त से सिंचित कर नन्दन कानन सा बना दिया। जिसका प्रतिफल है कि आज भी राजस्थान की संस्कृति विश्व में अभिनन्दनीय मानी जाती है।

देवड़ाजी के दोहों में जैता व कूंपा जैसे महायोद्धाओं के गौरव गान के साथ झोंपड़ियों का उल्लास है, ढाणियों की गरिमा है, धोरों (बालू के टीलों) का वैभव है, बाजरी के पूंख (सिट्टे), खेजड़ी, बावल कुमटियों की झाड़ियां, मयूर अम्बर में विहारते पक्षी नाड़ियां सुहासिनियां और सौभाग्यवतियों के पनघट, खेत जोतते बैल, मरुस्थल में दूध की नदियां बहाने वाली गायें हैं, वीर प्रसविनी जननियां, वात्सल्य सूचक पालने और मरण पर्व से ऊर्जस्वित लोरियां हैं। इस परिवेश में ही जैता और कूंपा जैसे अपराजेय योद्धा जन्म लेते हैं।

देवड़ाजी तो प्रार्थना के समान पवित्र गौरव गान लिख कर धन्य हो गये मगर वर्तमान की नपुंसक और शिखण्डी पीढ़ियों का

अपने गौरव पूर्ण अतीत से ऊर्जस्वित करने का बीड़ा परम पूज्य, वयोवृद्ध ठाकुर साहब भीमसिंहजी सुवाणा ने उठाया है। जिसे क्रियान्वित कर रहे हैं श्रद्धेय ठाकुर मोहनसिंहजी बोरन्दा और आदरणीय श्री अचलसिंहजी भाटी साहब।

इलेक्ट्रोनिक मीडिया जिस तीव्रगति से हम अपसंस्कृति से अभिशप्त कर रहा है, पाश्चात्य भौतिकता हम निस्तेज, अनिकेत, दिशाहीन और अपराधी बना रही है। सत्तालोलुपता के कारण जैसी अराजकता है, जिसमें हमारा राष्ट्रीय चरित्र विलुप्त हो गया है, ऐसे संक्रमण काल में हमारे इतिहास को उलटा जा रहा है। सामाजिक मर्यादाओं को रद्द कर दिया गया है। हमारी मानवता या नागरिकता तो क्या राष्ट्र की अस्मिता घोर संकट में है। तब जेता और कूपा ही हमारे प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। न जाने हम कितने गिररा जैसे महासमरों से जूझना है। इसलिए ऐसे विकट काल में भगवती प्रकाशन संस्थान ने यह प्रेरक उद्बोधक जागृत और ऊर्जस्वित करने वाली कृति का प्रकाशन कर राष्ट्रभक्ति का पावन अनुष्ठान किया है।

मैं न तो राजस्थानी का पण्डित हूँ न इतिहासवेत्ता। फिर भी परम पूजनीय ठाकुर साहब भीमसिंहजी सुवाणा के आदेश का मैंने यथाशक्ति पालन किया है। 'महात्मा फुले सत्य शोधक' के सम्पादक और राजस्थानी हिन्दी अंग्रेजी' (त्रिभाषी) कोशकार श्री भंवरलाल जी सुथार के अनन्य सहयोग बिना मैं इस कार्य में असमर्थ रहता। ईश्वर से प्रार्थना है कि महाकवि हनुवन्तसिंहजी देवड़ा शतायु हों और उनकी लेखनी से एक ऐसे महाकाव्य की रचना हो जो हमारे लिए अमूल्य सांस्कृतिक निधि बन जाये। कहने का पृष्ठभूमि है मगर श्रद्धेय प्रो० आर०पी० व्यासजी का अमूल्य आलेख इस ग्रन्थ का स्वर्णिम अध्याय है।

—लक्ष्मीकान्त जोशी

(१)

सिवरू देवी सुरसती, अधरा पर अब आव ।
सत जस लिखणो सूर रो, अतस माय उमाव ।।

सम्पूर्ण सृष्टि की अगणित सवेदनाओ को अभिव्यक्त करने वाली मानवता के वाड्मय की अधिष्ठात्री वीणापाणि सरस्वती का स्मरण वन्दन करता हूँ कि हे देवी ! मेरे अन्तमन मे तेजस्वी वीरो के प्रशस्ति गान का जो उत्स' उमड रहा है उसे शौर्य गाथा के रूप मे मेरे अधरो पर मुखरित कीजिये ।

(२)

जग मे थारै जाम री, कथणै कीरत काज ।
अरपण करवा अजली, आजे सुरसत आज ।।

इस विराट विश्व म अपनी कीर्ति के बलिदानी आलेख अंकित करने वाले आपके पराक्रमी सुपुत्रो को मैं काव्याजलि समर्पित कर सकू इसलिए हे वाग्देवी ! मैं आपका आह्वान करता हूँ ।

(१)

सिवरू देवी सुरसती, अधरा पर अब आव।
सत जस लिखणो सूर रो, अतस माय उमाव ॥

सम्पूर्ण सृष्टि की अगणित सवेदनाओ को अभिव्यक्त करने वाली मानवता के वाड्मय की अधिष्ठात्री वीणापाणि सरस्वती का स्मरण व दन करता हूँ कि हे देवी ! मेरे अन्तमन मे तेजस्वी वीरो के प्रशस्ति गान का जो उत्स' उमड रहा है उसे शौय गाथा के रूप मे मेरे अधरो पर मुखरित कीजिये।

(२)

जग मे थारे जाम री, कथणे कीरत काज।
अरपण करवा अजली, आजे सुरसत आज ॥

इस विराट विश्व मे अपनी कीर्ति के बलिदानी आलेख अकित करने वाले आपके पराक्रमी सुपुत्रो को मैं काव्याजलि समर्पित कर सकू इसलिए हे वाग्देवी ! मैं आपका आह्वान करता हूँ।

(३)

कथणें नूं गाथा किती, गावण नूं घण गीत।
वारा लिखसूं गीतडा, पाळी धर री प्रीत।।

वसे तो इस बहुआयामी ससार म अगणित प्रकार के क्रियाकलापा की अनन्त गाथाएँ है प्रकृति और मानव की रागात्मक जीवन जययात्रा क गीता के अनेक प्रसग है किन्तु मैं तो ऐसे ही युगान्तकारी महावीरा का वन्दन गान करूगा जिन्होने इस धरित्री की मर्यादा को गौरवान्वित किया है।

(४)

जस आखर लिखें न जठै, वा धरती मर जाय।
सत सती अर सूरमा अे ओझळ व्है जाय।।

जो वाणीपुत्र शब्दसिद्ध कवि अपनी मातृभूमि की गौरवपूर्ण धरोहर के गीत नही रचता है उस समाज म दिव्य सत्ता, शक्ति रूपा सतिमा और बलिदानी वीरो की परम्परा लुप्त हो जाती है।

जलम मरण विधना नियम, जाणै मिनखा जात ।
पलक झपैह मरा परा, फिर जीवा परभात ।।

मानव विधाता के इस विधान से अवगत है कि जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है । वैसे दुलभता से प्राप्त यह मानव देह इतनी क्षणभगुर है कि रात्रि को हमारी पलक बद होते ही हम मृत्यु की गोद मे लीन हो जाते हैं और प्रभात मे आखे खुलते ही फिर जडता से विमुक्त होकर प्राणवान हो जाते है ।

(६)

मरवा नू कितरा मरै, जीवैह आप जतन ।
जे मर रहवै जीवता, पूजैह पाव वतन ।।

राष्ट्र देवता की अभिवन्दना हेतु प्राणोत्सग के लिए कितने लोग हैं जो मुक्ति के रूप मे मृत्यु का वरण करते हैं । सामान्य जन तो क्षुद्र जीवन के सरक्षण के लिए न जाने कितने अवसरवादी यत्न करते हैं किन्तु जो मातृभूमि के लिए न्योछावर हो जाते है उनके प्रशस्त चरणों की वन्दना सम्पूण राष्ट्र युग युगो तक करता है ।

गिररि* समर गगोतरी, निरमळ पावन धाम।
सूरापण जस रो समद, आदर होणो आम॥

राजस्थान मे गिररी स्थान पर महाभारत के समान जो महा समर हुआ था, उस शौय स्थल को आज भी राष्ट्र भक्त वीरता की गगोत्री के समान पावन तीथ मान कर पूजते हैं। जहा वीरता का पारावार उमड पडा था उसकी यशोगाथाएँ आज भी मरुधरा के जनमानस म पुण्य श्लोकों सी अकित है।

(८)

जागृत जन मन रो जबर, समर साच पहचाण।
मातृभोम हित मरण रो, ओ साप्रत अहनाण॥

राठोड कुलभूषण शौय के साकार स्वरूप जैताजी और कू पाजी ने मातृभूमि के स्वाभिमान हेतु दुधष युद्ध म अद्वितीय पराक्रम से जन मन को देशभक्ति और बलिदान के लिए प्रेरित किया है। अपनी जननी की मुक्ति हेतु स्वातन्त्र्य यज्ञ म जीवन को होमने का एसा साक्षात दृश्य और कहा दिखाई देता है?

---

* राजस्थान के जागलय प्रदश म गिररी नामक गाव के पास समरागण मे राठोड वीरद्वय जैताजी और कू पाजी न ई सन् 1543 म शरशाह सूरी की विशाल सेना को प्रकपित कर प्राणोत्सग का अपूव दृष्टात प्रस्तुत किया। ज्ञातव्य है कि शरशाह सूरी के चालीस हजार सनिको का राठोडा के बारह हजार योद्धाओं ने जुझारू समर म धराशायी कर दिया।

(९)

मनन इण महा समर रो, वदण मुगती द्वार ।
नैतिक जीवण नाम रो, या सवणी आधार ॥

महाभारत के समान इस महासमर का मनन हमे ऊर्जस्वित करता है। उन अपराजेय योद्धाओ की वन्दना से मुक्ति के द्वार महज रूप से खुल जाते है। ऐसे वीरो के चरित स्मरण से हम नैतिकता पुरुषाथ और पराक्रम का सौन्दय बोध होता है।

(१०)

मरै जियै जग मोकळा, सिरजै सिरजणहार ।
जो मर रहवै जीवता, वा जरणी बलिहार ॥

इस सृष्टि का सतत सृजन करने वाला अगणित मानवा को रचता है जो इस मृत्युलोक के आवागमन चक्र मे जन्म लेते और अज्ञात रूप से मर जाते है लेकिन बलिहारी उस जननी की है जिसकी कोख से एसा योद्धा जन्म लेता है जो राष्ट्रहित मर कर भी इतिहास के पृष्ठो मे सदा जीवित अमर रहता है।

गिररी सुमेल या समर, बदरी अर केदार ।
अनडा भर उघाडियो, देस मुगती रो द्वार ।।

सुमेल नदी के तट पर गिररी के प्रागण मे जताजो और कू पाजी ने जो मानवता की अस्मिता और धरित्री के प्रति निष्ठा और आस्था हेतु जो धमयुद्ध किया इससे वे स्थल बदरीनाथ और केदारनाथ जस पावन तीथ बन गये । सुभट्ट वीरा के बलिदानो ने राष्ट्र की मुक्ति के द्वार खोल दिये ।

(१२)

पुन री धरती प्रागवड, गीता उससं ज्ञान* ।
जुभारां भुज जोवता, बडभागी बलिदान ।।

शौय पु ज राठौडा के बाहुबल के प्रचण्ड तेज ने बलिदान शब्द को अधिक महातेजस्वी आयाम प्रदान किया । जुझारा ने गीता के ज्ञान को चरिताथ किया और अपने पुनीत रक्त स युद्ध स्थल को तीथराज प्रयाग बना दिया ।

---

* गीता म भगवान कृष्ण न अजु न को आदेश दिया कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय ।

(१३)

गिररी गौरव मरुधरा, सुरगा सिरेह सोपान ।
सूरा चढिया समर मे, कमधज आया काम ।।

राठौड वीरवरो ने जब राष्ट्रभक्ति से अभिभूत होकर महासमर मे अपने गर्वोन्नत प्राणो का पूजा के पुष्पो की भाति न्यौछावर किये तो गिररी रणस्थल मरुधरा का गौरव केन्द्र और स्वग का शीर्षस्थ सोपान बन गया ।

(१४)

समर गिररी सुमेल रो, इणमे विडद बखाण ।
सत ऊजळ या सुरसरी, प्रगळै नित पाखाण ।।

अमरशत बलिदानी गिररी सुमल समर मातृभूमि हित मरण त्यौहार मनाने वाले शूरवीरो की गौरव गाथा की ज्वाजल्यमान मुख बोलती चिर प्रेरणास्पद पावन स्मृति है । गिररी सुमेल समरभूमि के पाषाणो से उनके अनुपम शौय की सुरसरि प्रवाहित है । ऐसे सत्य एव सैद्धान्तिक समर का साकार स्वरूप समाहित है उसमे । ऐसे ऐतिहासिक आख्यान ये अमर शत बलिदान हमारे लिए आने वाली पीढियो के लिए प्रेरणा पुज है ।

(१५)

पाखाणा मे पेखियो, प्रभु रो प्रादुर्भाव।
म्हो रखण मुख बोलतो, रस बस चित रो चाव ॥

प्रखर शौय से ऊर्जस्वित राठौड वीरा ने जब पराक्रम की पराकाष्ठा, त्याग के चरम रूप को साकार किया तो प्रस्तरखण्डा ईश्वरत्व आलोकित होने लगा। प्रत्येक रजकण उन वीरा द्वारा ज मभूमि की रक्षा के महा तेज के आवेग से चकित जीवन्त जागत मुखरित हो गया।

(१६)

अखतौ दीसै ओळखो, गिर आई पर बण गाज।
दोजख मेटो देस री, पुन रो बाधो पाज ॥

राठौड सुभट्टा के शौय से अनुप्राणित गिररी का सम्पूर्ण परिवेश बिजली सा कौध कर ललकारने लगा --उठो! देश को नारकीय शक्तियो से मुक्त करो और पुण्य की मर्यादाओ को रचो।

(१७)

सह जग भाया साभळो, प्रभू तणो परिवार।
चाले सह ससार मे, सत बळ री सरकार।।

हे विश्व लोक समुदाय के बधुओ ! हम सभी उस एक विराट अनन्त अनादि शक्ति के वशधर है। सारा ससार एक ही परम शक्ति का परिवार है। जिसमे केवल सात्विक सत्ता ही शाश्वत और नियामक हो सकती है।

(१८)

आवध सत बळ आदरो कुळ री राखो काण।
गिररी समर गगोतरी, इस्ट देव री आण।।

हे योद्धाओ ! आपको अपने अभीष्ट की शपथ है, गिररी के गगोत्री जसे पावन समर ने हमे यह नतिकता की प्रेरणा दी है कि शस्त्र आतक और अनाचार के लिए नही धारण किये जाते। शस्त्रास्त्रा का प्रयोग कुल के स्वाभिमान और सद्धम की स्थापना के लिए ही किया जाता है। शस्त्र भक्षक नही रक्षक है, जितनी तीक्ष्ण उनकी धार होती है उतनी ही उनके प्रयोग की कठोर मर्यादा।

(१६)

अै दूहा या अजली, बडका प्रीत विछाण।
गौरव और गुमेज रो, अतस माय उफाण॥

मेरे ये दोहे शौय की साहस भरी अजलिया है जिनम हमारे प्रशस्त महापुरुषो के प्रति ऐसी अनन्य श्रद्धा है जिनके वाचन से हमारे हृदयो मे गव और स्वाभिमान की भावनाए उमड जाये।

(२०)

कीरत सूरा केवटी, अो धन वीर अपार।
आराधन या आपरो, सूर पूर स्वीकार॥

किसी भी राष्ट्र की अक्षय सम्पदा उसकी वीरत्व से आलोकित कीर्ति होती है। ह गिररी महासमर के वलिदानियो आपने मातृभूमि के शौय की निधि को अक्षुण्ण रखा। इसलिए मैं शूरा को साक्षात देव मान कर उनकी आराधना करता हू। मेरे इस व दन को स्वीकार कीजिये।

(२१)

आया सूरो तेड ने, वीरम ने कलियाण* ।
इला मरुधर उजाडवा, घर घलियो घमसाण ।।

वीरम और कल्याण के षडयंत्र से भ्रमित और पथ भ्रष्ट होकर शेरशाह सूरी ने मरुधरा की स्वर्ण-भूमि को विनष्ट करने हेतु प्रचण्ड युद्ध के लिए अभियान किया ।

(२२)

बादळ छाया विपत रा, मरुधर धरतो माथ ।
अरिया हृदो नाक मे, नर कुण घाले नाथ ।।

स्वाधीन स्वर्णभूमि मरुधरा पर शेरशाह सूरी की विशाल सेना घोर विपत्ति के मेघा सी आच्छादित हो गई । तब जोधपुर के राव मालदेव के सामने एक ही प्रश्न था—ऐसे विकराल शत्रु की नाक मे कौन नाथ डाल सकता है ? उसे अंकुशित कर सकता है ?

---

* बीकानेर के राव जैतसी के पुत्र कल्याणमल और राव दूदा के पुत्र वीरम ने दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूरी को छल बल से राजा मालदेव के विरुद्ध युद्ध के लिए उकसा कर मरुधरा पर धावा बोला ।
शेरशाह सूरी आगरा से पचास हजार योद्धाओं की सेना लेकर आया था ।

(२३)

मालै मायो धूणियो, अरि लख असी हजार* ।
महिपत छिपियो महल मे, पाछो घरा पधार ।।

मरुधरा के महाबली राव मालदेव ने गिररी समरागण मे शेरशाह सूरी के अस्सी हजार शत्रु योद्धाओ के अभियान का समाचार सुना तो वे सिर धुनने लगे। भारत के तत्कालीन सवशक्तिमान महाराजा मालदेव हताश हो कर राजमहलो मे छिपने जसा चि तन करने लगे।

(२४)

मालदेव या मरुधरा, आजादी हित आज ।
राजन बरजै राज ने, लाखोणी कुळ लाज ।।

या तो मालदेव सुरक्षित रहगे या मरुधरा के स्वाभिमान को अक्षुण्ण रखा जायेगा। मालदेव की उहापोह की मानसिक्ता मे राठोड वीर शिरोमणियो कू पाजी और जताजी ने महाराजा को उद्बोधित प्रेरित किया कि राजा या राज्य रह या न रहे मगर लाखो की जो कुल मर्यादा है उसे लज्जित नही होने देगे।

---

* शेरशाह सूरी की पचास हजार योद्धाओ की सेना के साथ जलाल खा जलवानी भी तीस हजार सनिको क साथ मालदेव स युद्ध करने आ गया।

(२५)

खत्रवट मरणो खामदा, खराखरी रो खेल।
गिररी सुमेल रो समर, पाण छता मत मेल॥

क्षत्रियत्व कभी विचलित नही होता। मरुधरा के राजपूत सदैव छल-बल से नही प्रत्यक्ष रूप से चुनौती देकर युद्ध करते हैं। जिस तरह मालदेव युद्ध को टालना चाहते थे वैसे ही शेरशाह सूरी गिररी सुमेल महासमर से कतराने लगा।

(२६)

ढाला लिखिया कूडसा, फोकट रा फरमाण*।
साको करसी सूरमा, रण मे देसी प्राण॥

अपराजेय प्रबल पराक्रमी राठौड़ों की वज्र सेना से आतंकित होकर शत्रुओं ने ढालों में नकली फरमान छिपा दिये। मगर उन्हें क्या पता था कि इस षड्यन्त्र के उपरान्त भी राठौड़ योद्धा मरकर मरुधरा के भाल को अपने लहू से अभिनन्दित कर देंगे।

(२७)

मरीया देसा मरुधरा, अजर अमर अहनाण।
जासी कदै न जगत सूं, बडका बिडद बखाण।।

क्या ऐसे षडयत्रो से मरुधरा का गौरव नष्ट हो सकता है? उसके शाश्वत शौर्य और अखण्ड स्वाभिमान के अस्तित्व को मिटाया जा सकता है? हमारे पूर्वजो ने शौर्य की जो प्रशस्त परम्पराए अपने शीश समर्पित कर स्थापित की वे बलिदानी भावनाए ससार मे मिट सकती हैं?

(२८)

बाता सुणलो वेहम री, ओखद कोनी ग्रेक।
कुचमादी री कोथळी, वेखो आप विवेक।।

इस जगत मे अविश्वास या स देह अथवा भ्रम के निवारण की कोई औषधि नही है। जब कोई षडयत्रो की ग्रथियो से हम बाधने का प्रयत्न करता है तो हमारा विवेक भी विचलित हो जाता है।

मत न होवो माल दे, डळबळ डाभाचूक।
आगम सिर पर आपरे, थिर इतिहासा थूक ।।

भ्रमित, विक्षिप्त, विचलित मालदेव को उनके स्वामिभक्त सेनापतिया कूपाजी और जैताजी ने समझाया कि भविष्य हमारे सामने खडा है, जिसकी उपेक्षा से हमारे कुल के इतिहास मे एक स्थायी कलकित अध्याय जुड जायेगा। लोग धिक्कारेंगे।

(३०)

जैते कूपै जा कही, मानी न राजन माल।
पचमगिया* री पाधरी, समझ न सकियो चाल ।।

समर्पित स्वामिभक्त, परम विवेकशील और प्रबल पराक्रमी जैताजी और कूपाजी ने राजा मालदेव के समक्ष शत्रुओ की कुटिलता का रहस्योद्घाटन किया मगर भ्रमित राजा मालदेव पचमागियो की चाल को समझ नही पाये।

---

* कवि ने पचमागी जसे अत्याधुनिक कूटनीतिक शब्द का प्रयोग किया है जो फिफ्थ कोलमनिस्ट अग्रेजी शब्द का रूपान्तरण है सामान्य अर्थ है कुटिल षडयन्त्रकारी या छद्म देशद्रोही।

भिडियो कूप भाराथ मे, जैत जूझार जोर।
मानीजे महराजवत* , सूरापण सिरमोर ॥

मालदेव के अविश्वास और विचलित मानसिकता को समाप्त करने विशेष रूप मे मरुधरा के गौरव की रक्षार्थ कू पाजी ने प्रचण्ड युद्ध किया। जताजी भी प्राणपण से जूझने लगे। सग्राम मे महराजोत सदव शिरोमणि रहे है।

(३२)

मालदेव धर मरुधरा, आकळ बाकळ देख।
कमधज केसरिया किया, मारो अरि सिर मेख ॥**

मालदेव शासित मरुधरा भूमि म आकुलता व्याकुलता का वातावरण देख कर जैता कू पा के नेतृत्व मे राठौड वीरो ने केसरिया धारण कर शत्रु दल के मस्तिष्क पर भीषण प्रहार किये।

---

* महराज के पुत्र कू पाजी।

** क्षत्रिय मृत्यु पथ त युद्ध हेतु केसरिया परिधान धारण करत हैं या वसर का अभिषक करत हैं जिसका तात्पय है वे कभी पराजित जीवित नहीं लौटेंगे।



राव कू पा जी मेहराजोत माडा

स्वास छता निज खोळियँ, खागा रगता खाळ।
मान बचावण मरुधरा, वढिया वस ऊजाळ ॥

अपनी वज्र देह मे अंतिम श्वास तक राठौड महायोद्धाओ ने अपनी तीक्ष्ण विद्युत वेग से प्रहार करती तलवारो को शत्रुओ के अग प्रत्यग काटते रक्त रजित कर दी। मरुधरा के सम्मान के साथ वे अपने अपूर्व बलिदानो मे निज वशो को उज्ज्वल करने लगे।

(३४)

पराधीनता पाप है, अतस उससे आग।
माला म्हारी मानलो, अरि मुख पडसी भाग ॥

उन्होने मालदेव को हुकार कर कहा— आप हमारे सकल्प पर विश्वास करे हम शत्रुओ से ऐसा प्रचण्ड युद्ध करेगे कि उनके मुख से पराजय सूचक फेन (झाग) निकलेगे। क्योकि हम पराधीनता के पाप को स्वीकार नही करेगे। जताजी और कूपाजी के हृदय शौर्य के आवग से दहकने लगे।

दो भड जा लग जीवता, समर मझ समराथ ।
भव भेळा भाराथ मे, सप जठँ श्रीनाथ ॥

दोना महाभट्ट जला और कू पा न जव महायुद्ध मे अपना जीवन झाक दिया तो शेप सभी दृढ साहसी राठोड भी महाभारत जसे विकराल युद्ध मे शत्रु दल का सहार करन लग । जहा साम्य है, एकता है वहा स्वय श्रीनाथ (ईश्वर) उनके साथ हो जात है ।

(३६)

हेरे करण करण हेत सू, दूजो न धजवड दाय ।
जैतो कूपो जोरवर, चितवन गया समाय ॥

महा पराक्रमी शौय के साकार स्वरूप जैताजी और कूपाजी ने अपने विलक्षण रण कौशल और प्रवल पराक्रम से एसा वेगवान समर किया कि प्रत्यक शत्रु की आखो के सामने व दाना विभूतिया ही दिखाई देती । राठौड वीरो की दृष्टिया ता उनके व्यक्तित्व के औदात्य से उत्साहित, अनुप्राणित प्रेरित होकर तन मन की सुध भूल कर युद्ध के लिए रक्ताभ तेजोमय हा गई ।

(३७)

जंतो कूंपो जोरवर, अरजण वाळी आख।
सुमरण करने सूरमा, पछी सिवरं पाख॥

महा धनुधर अजुन को जैसे पक्षी के पख और अन्य सुन्दर अगा की अपेक्षा लक्ष्य सन्धान हेतु केवल उसकी आख ही दृष्टिगोचर होती थी वैसे ही वीरो मत्त रणातुर जैता और कूपा शौय से सचारित अपने मुख्य शत्रु का सन्धान कर भेदने मे लोप हो गये।

(३८)

केसरिया बडका किया, राखी सदा मरोड।
हरवळ उण पथ हालिया, रणबका राठौड*॥

जब कभी मातृभूमि के अस्तित्व पर सकट गहराया, कुल की मर्यादा पर किसी ने अगुली उठाई, स्वनियत्व को चुनौती दी तो जैता और कूंपा की भांति रण बाकुरे राठौडो ने केसरिया धारण कर युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर अविस्मरणीय बलिदाना के आलेख रचे।

---

* बल हठ बाका देवडा करतब बका गौड।
हाडा बका गाढ म रण बका राठौड॥

।

दो भड जा लग जो
भव मेळा भाराथ

दोनो महाभट्ट जैता औ
झोक दिया तो शेप सभी
विकराल युद्ध मे शत्रु दल का
है वहाँ स्वय श्रीनाथ (ईश्व

हेरे कण कण
जैतो कूपो

महा पराक्रमी श
अपने विलक्षण रण व
किया कि प्रत्यक शत्रु
दिखाई देती। राठाट
से उत्साहित, अनुप्रारि
युद्ध के लिए रक्ताभ

(४१)

लावा लोधा लाडला, अरि सिर काटिया आप ।
खळबळ बहिया रगत मे, धरती धापा धाप ।।

मरुधरा के दुलारे जन-नायका ने शत्रुग्रा के मस्तको को काट कर अम्बार लगा दिया वैसे ही उनके शौय की जय जयकार होने लगी। प्यासी मर भूमि पर रक्त का ज्वार उमड आया जिससे वीर प्रसविनी धरा तृप्त हो गई।

(४२)

रगत फाग रमिया अमर, आजादी हित अग ।
तन झडिया तरवारिया, रजपूता ने रग ।।

कमध्वजो जुझारओ ने मरण पव को वास ती उल्लास पव मे रुपातरित कर दिया। स्वत त्रता देवी की आराधना मे अग प्रत्यग का रक्त से अभिषेक किया। असि धारा के प्रहारा से देह पुष्प लताओ से झरन बिखरने लगे। शोणित स्नान ही राजपुत्रा का वास्तविक रग या शृगार होता है।

(४३)

धार रजवट धारणा, जूझारू जबरेल।
जैता कूपा जोरवर, वारू रजवट वेल॥

राठौड वीर श्रेष्ठो ने क्षत्रियत्व की तेजस्विता धारण कर रण मे प्रचण्ड रूप से जूझ कर जुभारुग्रो की परम्परा को महान बना दिया। शक्तिपुज जता और कूपा ने क्षात्र धम की वल्लरी को अमर बेल बना दिया जिस पर हम सभी थौछावर है।

(४४)

किणने नह वालो कुरब, आन मान सनमान।
देवण सिर निज देस ने, अनमी आगीवाण॥

अपने राष्ट्र की सावभौम सत्ता के सरक्षण हेतु वे अपन शीश समर्पित करने मे अग्रणी रहे। उन्होने अपने कुल के मान सम्मान और सकल्पा को प्राणा की बलि देकर गौरवान्वित कर दिया।

सिव आया जोवण समर, अणथग मुंड अपार ।
झुंड अरि रा झाडिया, जैत कूंप जूंझार ।।

परम पराक्रमी महा योद्धा कमधज कुल गौरव जैता और कूंपा ने जुझार रूप के औदात्य आवेग में शत्रुओं के यूथों (सैन्य दलों) को वृक्ष के प्रकम्पित पत्तों की तरह काट दिया। गिररी महाभारत में अपार शीशों के अम्बार देख कर मुण्डमाला धारी महारुद्र देवाधिदेव शंकर स्वयं हर्षित होकर युद्ध के दृश्य देखने पधारे।

(८६)

गिरि जुध जमघट माचियो, थायो लोथां थट्ट ।
कूंपा री किरपाण सूं, मेटियो अरियां मठ ।।

गिररी के समरांगण में जहां शेरशाह सूरी और मरुधराधीश मालदेव की जीवन्त जागृत आवेशित सेनाओं के रूप में वीरता का पारावार उमड़ रहा था, वह विकराल युद्ध के कारण जमघट में बदल गया। अपराजेय कूंपा की प्रलयकारी कृपाण से शत्रु सेना का मान मर्दन हो गया।

(८७)

मद अरिया रा मारिया, वारू धरम विसेस।
मारू मरुधर देस रा, केसरिया कमधेस।।

बलिदानी केसरिया धारण कर कमधेश (राठौड वीर शिरोमणि) मरुधर के महानायक बन गये क्योंकि उन्होने कपट कूट से नहीं महा वीरा की भाति सम्मुख साक्षात धमयुद्ध की मर्यादाओ से अरि दला के अहकार को खण्डित किया था।

(४८)

हालरिये हलराविया, गौरव भरीया गीत।
धरिया पग धन धाड मे, मिनखा जीवण मीत।।

आज भी वीर प्रसू मरुधर जननिया पालने म अपने सुपुत्रा को जता कृ पा के शौयगान लोरो के रूप मे सुनाती है। जिन्होने धमयुद्ध मे अगद की तरह अपने पाव पशाचिक शत्रुओ के विध्वस के लिए स्थिर से आरोपित कर दिये थे। वे मानवता के अस्तित्व सूचक अमर मित्र है।

(४६)

कू पा कमधज राज री, सौरभ देस विदेस।
धजवज सह धरती धुकै, दीखे अगनी देस॥

हे कमधज कुलगौरव कू पाजी! आज भी जब यह धरित्री अनाचार कदाचार और अमानुपिकता की भयावह अग्नि मे दहकती है तो देश विदेशो मे व्याप्त आपकी शौय सुरभि हमे सन्ताप मुक्त कर उल्लसित करती है।

(५०)

गिरी जुध सकर जोयने अतस मोद अछेह।
बरसे बारा मास ही, मरुधर जस रो मेह॥

गिररी के महाताण्डवकारी युद्ध को देखकर पाप सहार के महादेव शकर के अन्तमन मे अथाह हप का ज्वार उमड पडा। तभी से चिरप्यासी मरुभूमि जो प्रकृति से उपेक्षित है उसमे बारह महीनो ही यश की निरन्तर वर्षा होती है।

(५१)

कीरत रा कोटा सिरै, होटा मुळक हमेस।
आजादी रो अलख है, तू कूपा कमधेस* ॥

हे कमधेश कूपाजी! आपका नाम स्वतन्त्रता का सिद्ध महामंत्र बन गया है। आपकी कीर्ति के शिखर शोभायमान है। आपकी यशोगाथा जन जन के अधरा पर पुण्य श्लोका सी मुखरित होती है।

(५२)

थारी सेवा साधना, मरुधर धरती मान।
अतस वसियो आपरै, गोरख जीवरण ज्ञान ॥**

आपकी लोक साधना, सतत मातृभूमि की सेवा मरुधर वासिया के लिए गौरवगान बन गया है। आपके हृदय मे सदैव गौ रक्षा (गाय जा धम और भारतीय सस्कृति की प्रतीक है) का ज्ञान आलोकित है।

---

* राव कूपा ने अपने जीवन का प्रथम युद्ध वि स 1570 की माघ वदी दशम को मिरियारी के समीप अरावली की घाटी म गाया की रक्षा के लिए किया था।

** कवि गुरु गोरखनाथ के नान से कूपा का विभूषित कर रहे हैं। गोरक्षनाथ जो महाज्ञानी के साथ महाबली थे जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा हेतु सतो को क्षात्र धम म दीक्षित किया। राजपूताना के क्षत्रिया को सगठित किया।

(५३)

डग डग थरपू देवळा, प्रेरक कूपा पूज ।
दिक दिक रहवै दीपती, गौरव गीता गूज ॥

राष्ट्रीय भावना से ऊजस्वित, शौय के आराधक वीर रस विभोर कवि हणुवन्तसिह देवडा मरुधरा के प्रेरणा पुरुष राव कूपाजी के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को अभिव्यक्त करते कहते है -हे महामानव कूपाजी! म इस धरती पर वीरता के सचार हेतु कदम कदम पर आपके मन्दिरो की स्थापना करू ताकि विश्व समुदाय शौय साधक बने । मैं ऐसे गीतो की रचना करू कि दिगदिगन्त तक आपकी गौरव गाथा निरन्तर गूजती रह ।

(५४)

हेली सुरग बधामणा, गाईजै जस गीत ।
अपसर उतारे आरती, राख्या रजवट रीत ॥

हे स्वग की अमृतमयी परम लावण्यवती अप्सरा सखियो आज देवलाक मे क्षात्र धम की मर्यादा के महारक्षक कूपाजी पधार रहे हैं इसलिए उनके स्वागत अभिनन्दन गीतो (बधावणा) मे उनके यश की स्वर लहरियो को ही गुजित करना है ।

(५५)

आरत रोटी आपरी, सह जीवै ससार।
चोटी हित सिर समपियो, गुण गारी बलिहार ॥

आत, उत्पीडित, अभावग्रस्त सासारिक लोग तो रोटी के लिए जीवन व्यथ कर देते है किन्तु आपने अपने शीष स्वाभिमान हेतु मस्तक को समर्पित किया तब क्यो न इस जग के प्राणी ही क्या अप्सराएँ भी आप पर न्यौछावर होती है।

(५६)

मसीह लोया माडिया, दिल री आख्या देख।
रगिया आखर रगत सू, आगम ओळ अवेख ॥

गरिमा मण्डित भविष्य की रचना के आलेखा के अक्षर आपने अपने रक्त से इतिहास के पृष्ठो मे अकित कर दिये। आप महान भविष्यद्रष्टा थे इसलिए हृदय के नेत्रा से गिररी समर की महत्ता को परख कर लहू की लेखनी से शौय लेख लिखे।

(५७)

प्रगट रगत पखाळिया, मरुधर माता मान।
चरण कूपा केहरी, बढ कीधा बलिदान ॥

हे सिंहपुरुष कूपाजी ! आपने आगे बढ कर अपने को बलिदान किया। मरुधरा जननी शत्रुओ के अपवित्र परो से धूमिल न हो जाये इसलिए उसे आपने अपने रक्त से प्रक्षालित कर अधिक वन्दनीय बना दिया।

(५८)

मरणो आदर मरुधरा, कूप चुकायो नेग।
अरि भजण आग्राजणो, वळै नह पवन वेग ॥

मरुधरा के सुपुत्र सवस्व समपण से मातृ ऋण चुकाते हं। कूपाजी आपने भी युद्ध मे मरण का सहप वरण कर इस रीति का निर्वाह किया। सिंह की भाति घोर गजना कर आपने अरि दल का सहार किया और पवन वेग से निरतर शत्रुसय व्यूह को चीर कर आगे बढते रहे।

(५६)

घावा छकिया सूरमा, जैंतो कूपो जोय।
जलम भोम हित जूझिया, होड न दूजो होय ।।

वीर रस म छक कर असीम बल के आवेग से जैंता और कू पा ने शत्रु दल पर विद्युत गति से घावा बोला जसे अकस्मान वज्राघात हुआ हो। जन्मभूमि के रक्षाथ वे ऐसी समग्रता से जूझे जसा दृष्टान्त अन्यत्र नही मिलता।

(६०)

अजसं समर आप पर, धर मरुधर रा धींग।
भुरजाळा अग भागियो, शेरशाह बिन सींग ।।

आपके रण कौशल से गिररी महासमर ओज के पारावार म रूपान्तरित हो गया। आप मरुधरा के सवश्रेष्ठ शीपस्थ महाबली योद्धा के समान राठौड सन्य दल म स्थापित हो गये। उधर शेरशाह जो सम्राट का मुकुट धारण कर आया था बिना सीग की बकरिया की तरह पलायन कर गया।

रेती मरुधर राज री, करै न समवड कोय।
जैते कूपे बोय दी, जस री खेती जोय।।

मरुधरा की पावन रेत अब अन्य धूल कणा जसी सामान्य नहीं रही क्योकि इस सौभाग्यशाली माटी मे जैता और कूपा ने अपनी विलक्षण वीरता के यश बीजो को अकुरित कर दिया है।

(६२)

पचमगिया कीधी परी, साबत कूपा चूक।
बैठ गयो गढ मायने, मालदेव वण मूक।।

वीरम और कल्याणमल जैसे पचमागियो (देशद्रोहिया) ने ऐसा कुटिल जाल रचा कि जिसम कूपा जैसे निश्छल परम स्वामिभक्त सेनापति भी शकाओ के कठघर मे घिर गये। मालदेव तो आतकित होकर राजमहल मे मूक होकर बठ गया।

सहारा लूटे बहार ने, कूपा किण पर क्रोध।
जीत बदळ वै हार मे, आगम बिगडै ओध ।।

जब सहारा का रेगिस्तान ही नन्दन कानन की बहारा को लूटने पर आमादा हो, जब मालदेव ही अपने अतिविश्वसनीय सरदारा पर सन्देह करें तो वीरवर कूपा किस पर क्रोध करे ? इस षडयन्त्र से जीत हार मे परिणत हो जायेगी तो भविष्य तो कलकित होगा ही राठौडा की वश परम्परा भी भ्रमित विकृत हो जायेगी।

(६४)

समत सोला पोस मे, इगियारस तिथ ओह* ।
भगता सिर कर भामणै, मरुधर रगता मेह ।।

विक्रम सवत सोलह सौ पौष माह मे ग्यारस की तिथि म एक ओर शेरशाह सूरी विशाल सेना सहित घनी मेघावली सा आच्छादित हो गया दूसरी ओर जता और कूपा ने मरुधरा म शोणित की वर्षा का अनुष्ठान किया।

---

* प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थो म विक्रम सवत 1600 को चैत्र बदी पचमी का उल्लेख है जो इस काव्य म वर्णित तिथि स भिन्न है।



राव जताजी पचायणोत, बगडी

(६५)

जिण घर सूर न जलमिया, वा धर बाझ कहाय।
कायर हदी कूख री, मेहणो लागे मोय॥

जो विशाल अवनि वीरो को ज-म नही देती वह वन्ध्या बाँझ या वजर रह कर वदनाम होती है कि-तु जिस धरती ने कायरो को जन्म दिया वह भीपण रुप से अभिशप्त और कलकित मानी जाती है।

(६६)

अमृत धारा सुर अमर* , सूर सूरा की होड।
खग धारा अमर हुआ, सूरा रग करोड॥

देवगण तो समुद्र मथन से प्राप्त अमृत का पान कर अमर हो गये कि-तु वीर पुरुप तलवार की तीक्ष्ण धार धारण कर अमर होते है। सुर और शूरो की इस प्रतिस्पर्धा मे शूरा की यह विशेपता है कि शौय बलिदान के कोटि आयामा से विलक्षण युद्ध शलियो मे मर कर अमरत्व प्राप्त करते हैं।

---

* शूर जब मानव धम की रक्षाथ या राष्ट्रभक्ति हेतु वीर गति को प्राप्त करता है तो अमृत पान किय देव गण भी एस वीरो का स्वग म पुष्प वर्षा से स्वागत अभिन दन करते है। मरण से अमरत्व प्राप्ति शौय साधना से ही सम्भव है।

(६७)

प्रगट त्रिवेणी प्रागवड, श्रो तीरथ श्रभिराम।
कूपा तीरथ साभळो, धनो धर्णेरी गाम* ॥

नैसर्गिक लावण्य, गगा यमुना सरस्वती जैसी पावन सरिताओं क सगम तथा तपोपूत ऋषियों की साधना से प्रयाग को तीथराज माना गया किन्तु कूपा का जन्म स्थल धणेरी ग्राम तो उनके बलिदानी व्यक्तित्व के कारण महातीर्थ बन गया।

(६८)

उगे रवि नित श्राथमे, श्राथ्या घोर श्रधास।
मरुधरिया महराजवत, श्राथम कियो उजास॥

अगणित रश्मियों के अनन्त स्रोत भास्कर सूर्य जब उदित होता है तो जगत प्रकाशित हो जाता है किन्तु प्रति सन्ध्या काल में उसके अस्त होते ही घोर अंधकार आच्छादित हो जाता है मगर कूंपा ऐसे शौर्य के सूर्य है जिनके उदय (जन्म) में ही मरुधरा प्रकाशित हो गई और जिनके अस्त या महानिर्वाण के पश्चात सम्पूर्ण विश्व उनकी तेजस्विता से आलोकित हो गया।

---

* सोजत परगना म धणेरी गाँव म राव महराज न शकर भगवान की तपश्चर्या जलकूप प्राप्त कर अपनी सौभाग्यवती पत्नी को पिलाया जिससे कूपा का जन्म हुआ। जलकूप के कारण ही कूपा नाम रखा गया। शकर से प्राप्त कूप जल निरसन्देह गगा यमुना सरस्वती के जल से अधिक पावन था।

(६९)

आवध कस आरण अडै, घडचै अरि घमसाण ।
वा जीवण टावर भणौं, गा गा गौरव गाण ।।

महायोद्धाओ के शस्नास्त्र कभी कु द और कुण्ठित नही होते । वे तो शत्रु सन्य के महाअरण्य मे भट्ट रूपी वक्षो को भटके से काटते महासमर करते और अधिक पैने हो जाते है । ऐसे अजेय महावीरो के गौरव गीत गा कर राष्ट्र की शिशु पीढिया देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित होती है ।

(७०)

पढिया पोथ्या मोकळा, सूरा विया सपूत ।
पचायण रा पूत* तू, रणवको रजपूत ।।

कूपा के वडे पिताजी पचायण शास्त्रो मे पारगत और शस्त्रो के दक्ष वीर थे । उनके पुत्र के रूप मे रण मे सदैव बाकुरे रहने वाले वश परम्परा को आलाक्ति करने वाले जैताजी ने जन्म लिया ।

---

* वीर शिरोमणी जता बगडी के जागीरदार और राव मालदेव के प्रमुख सेनापति थे ।

श्रीधरा फुलडा चढ़ै, सुमरै सुरसत पूत ।
मानीता महराजवत रणबका रजपूत ।।

क्षात्र धम के सरक्षक महराज के परम यशस्वी पुत्र राव कू पाजी पर लक्ष्मी की भी असीम अनुकम्पा थी । वे अपने युग के महादानी थे शौय के तो वे साक्षात मातण्ड थे । ऐसे रणबका राठौड गौरव का स्मरण करते सरस्वती पुत्र कवि भी नही अघाते ।

(७२)

प्रण पाळ्यो खत्रवट परम, नरा निभायो नेम ।
इतिहासा रहसी अमर, सुत पचायण प्रेम ।।

महाभाग पचायण के पुत्र रत्न पराक्रम की पराकाष्ठा के प्रतीक जताजी ने क्षात्र धम के प्रण को प्राणा का होम कर निभाया । अपने प्रशस्त व्यक्तित्व से मानवता की मर्यादा रखी । एसे मर्यादा पुरुष का नाम आज भी इतिहास म अमर है ।

(७३)

रवताणी महराज री, जबरो जायो जाम ।
भड अम्मर कीधो भला, कुळ कूंपै आ काम ।।

शिव के परम आराधक महराज की तपोपूता महारानी ने विलक्षण शक्ति पुंज पुत्र कूंपा को जन्म दिया। कूंपा ने गिररी महासमर में वीर गति प्राप्त कर अपने कुल को इतिहास में अमर बना दिया।

(७४)

संकर नह कर सक्कियो, वस कर हिम गिरवास ।
रंगता कीधा छांटणा, मरुधर मे उजियास ।।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखरों पर आरूढ होकर प्रलयकार शंकर ने भी नहीं किया वैसा अपूर्व अनुष्ठान कूंपा ने किया मरुधरा के आंगन में रक्त की रंगोली रच कर वीरता का प्रकाश प्रसारित कर दिया।

रगता पाटी रेणका, डाटचो अरिया दभ।
गिररी समरा सुरसरी, गौरव रा थिर थभ* ।।

मरुधरा की प्यासी बालुका को कूपा ने शत्रुग्रा के रक्त प्रवाह से तृप्त कर दिया। गिररी के समरागण मे शौय की मरिता प्रवाहित हो गई जिसम अरिदल के दभ की चट्टानें वह गई उसके स्थान पर क्षात्र धम के गौरव स्तम्भ स्थापित हो गये।

(७६)

दे माथा रणखेत मे, दजडो लीधो राज।
अरपण कीधा ओपता, सीस देस रे काज।।

महाभारत के समान गिररी के प्रचण्ड विकराल युद्ध म मरुधर वासिया की पराधीनता की श्राशका के कष्ट निवारणार्थ आपने रण क्षेत्र म अपने मस्तक आरोपित कर वीरता की केसरिया कमल पल्लवित कर दी। राष्ट्रदेवता को अर्पित आपके शीश अद्वितीय उपहार बन गये।

---

* गौरव स्तम्भ जताजी और कूपाजी के लिए प्रतीकात्मक विशेषण है।

(७७)

धर खोसे कुण देस री, ऊभा सूर सपूत ।
परपरा पाळी परम, परम धीर रजपूत ॥

जिस राष्ट्र मे शौयवान बलिदान योद्धा मातृभूमि के समर्पित सुपुत्र औदात्य की भावना से ऊजस्वित जागत और रण के लिए कटिबद्ध रहत ह उनकी व दनीया धरती को कौन छीन सकता है ? जब कभी राष्ट्र की अखण्डता का किसी ने चुनौती दी तो क्षत्रियो ने अपने अपराजेय पराक्रम द्वारा देश की रक्षा की परम्परा का निर्वाह किया है ।

(७८)

जीणो मरणो जगत मे इण मे नह अदेस ।
अजसे मरणे ऊपरा, दीपै जग वह देस ॥

इस मत्यु लोक मे ज म लेने और मर जाने का विधि का क्रिया-कलाप तो सदैव जारी रहता है । मत्यु ज म से ही जुडी है, यह ध्रुव सत्य है इस आवागमन की प्रक्रिया को कौन अवरुद्ध कर सकता है ? कि तु जो राष्ट्र भक्त अपनी पावन धरित्री की रक्षाथ उल्लास सहित मत्यु का वरण करते है उनकी तेजस्विता से युगयुगो तक देश आलोकित हो जाता है ।

लज रजवट मरती लखी, खत्रवट खोई खाग।
रगता रग फिर बाध दी, पुलता पण री पाग ।।

पराक्रमी राठौड महावीर द्वय कू पाजी और जताजी ने जब गिररी के रणागण मे राव मालदेव के सकुचित हो जाने पर क्षत्रियत्व की महान मर्यादा को विनष्ट होते देखा, शत्रुदल के कपटजाल से राजपूती की तलवार अपनी गत्यात्मकता खाने लगी तो उन बलशाली स्वाभिमानी जुझारुओ ने शोणित से रग कर मरुधरा के क्षत्रिय वग के शीश पर गौरव पूर्ण प्रण पालन की पगडी सुशोभित कर दी।

(८०)

की गगा की गोमती, नदिया धारो धार।
थारी रगता धार पर, वार वार वलिहार ।।

मरुधरा की चिर प्यासी शुष्क धरा पर कू पा और जता के नेतृत्व मे केसरिया धारण करने वाले क्षत्रिय वीरवरो ने अपने प्राणो की बलि देकर सुरसरिता गगा और पतित पावनी गोमती जसी रक्त धाराएँ प्रवाहित कर दी। हे कमध्वज कुल श्रेष्ठ कू पा आपके द्वारा प्रवाहित रक्त धारा पर हम वार वार वलिहारी होते हैं क्योकि आपने अपने रक्त से स्वाधीनता का इतिहास लिखा है।

(८१)

अजरायल रण उठिया, जैतो कूपो जोय।
मरुधर राखी माल री, करै न समवड कोय॥

सिंह पुरुषो की भाति अद्वितीय परम शौर्यवान योद्धा जैता और कूपा रणभूमि मे वीरता के ज्वार मे उमड पडे। अपने विलक्षण पराक्रम से उन्होने राव मालदेव के विशाल राज्य मरुधरा की सार्वभौम सत्ता को अक्षुण्ण रखा है। हे इतिहास पुरुषो! आपके समान अन्य कोई बलिदानी पराक्रमी हुआ है?

(८२)

जठै न पूजै सूरमा, पाळै न पडित प्रीत।
रजवट रीती रीतडी, आवै न गौरव गीत॥

जिस लोक समुदाय म अपने राष्ट्र के प्रखर प्रहरियो, शौर्य के साधको की आराधना नही होती, जो समाज अपनी बलिदानी परम्पराओ से श्रद्धानत नही होता। वहा का क्षत्रियत्व शौर्य से शून्य हो जाता है और वह देश गौरव गीतो से वचित एव अराजक भीड मात्र रहता है।

(८३)

रगत धपावै धरण रण, अरि न आवै अेक।
पावै पाछी प्रेरणा, आरण वीर अनेक॥

जिस पुण्य धरा के देशभक्त योद्धा अपनी गौरवमय परम्पराओ को शाश्वत रखने हेतु अपने पवित्र रक्त से ज मभूमि के धूल कणा को सदव तृप्त रखते है जिनके पराक्रम से मातृभूमि मे एक शत्रु भी प्रवेश नही कर पाता। उनकी यशोगाथाओ से भविष्य की योद्धा पीढिया देशभक्ति हेतु न्योछावर होने की प्रेरणा प्राप्त करती है।

(८४)

जलम अकारथ जीवणो, भौमी नाहक
विपत पडै री वार बढ, पूत न

अपनी जन्मभूमि पर विपदाओ के घने
जो स्वाधीनता के लिए महासमर हेतु
जननी के वात्सल्य को भूल जाते है, उनका
व्यर्थ है। ऐसे जड निष्प्राण वीयविहीन
स्वरूप ही रहते है।

सिसकावै नह समर मे, लहै न बधण लेस ।
धन मरणो रण सूरमा, ढहिया गावै देस ।।

जो दुधप महायुद्ध मे अगणित घावा के बावजूद भी सिसकने कराहने की बजाय अपन वीरता के उ माद मे हपविभोर रहते है, जो चतुर्दिश शत्रुओ से घिर जाने के उपरात भी लेशमात्र ब-धन का अनुभव न कर निर्भीकता से युद्ध करते है। ऐसे शौयपु जा का वनिदान ध य हो जाता है। उनके महानिर्वाण के पश्चात भी देश के गौरव गीतो मे उनका नाम अमर रहता है।

(८६)

था जिसडा जलमे थका वीरा रसि रण दूठ ।
अबागळ अह अहकतो, अरि जावै अफूठ ।।

हे कमधज कुल सूय कू पाजी ! आप जसे योद्धा जब ज-म लेते ह तो मरुधरा के वीर योद्धा रणभूमि मे सदव अग्रणी रहते है। आपके शौय अभियान के नगाडो की प्रचण्ड ध्वनि सुन कर ही शत्रुदल अपनी पीठ दिखा देता ह, भयभीत होकर पलायन कर जाता है।

महकेली मरुधर धरा, सूरा थका सपूत।
जस रा डका जोरवर, सत साका साबूत ।।

हे महायोद्धा कू पाजी ! आप जैसे महाबली ज मभूमि के अन य गरिमा मण्डित तेजस्वी सपूत की विलक्षण वीरता से सत (धमराज्य) और साका (महायुद्ध) की परम्परा प्रशस्त रहती है। यश का सदव जयघोप अम्बर को निनादित करता है और यह पावन मरुधरा आपके बलिक सम्पूण क्षत्रियत्व के सौरभ से महकती रहगी।

(८८)

आसी पीढी आगली, गासी थारा गीत।
समर मरण री सीख ले, जग आसी घर जीत ।।

ह महावीरा कू पाजी और जताजी ! आपने राष्ट्र गौरव हतु जसा जुभारु युद्ध किया, वलिदान का जो अपूव शौयपूण दृष्टात प्रस्तुत किया उसस प्ररित होकर भावी पीढिया सदैव अपने महागीतो म आपका पुण्य स्मरण करेगी। व इतन तेजस्वी हागे कि महायुद्ध मे मरण के वरण की प्ररणा प्राप्त कर सदैव विजयश्री मे विभूपित हाकर ही घर लौटेंगे।

सूरा सिर सोहे सदा, सिव गळ बण्या सुमेर ।
वा सूरा राजन रे ऊपरा, बलि जावा लख बेर ॥

कू पाजी जैसे राठौड श्रेष्ठ वीर शिरोमणियों के गर्वोन्नत मस्तक जो महासमर मे राष्ट्र हित समर्पित हो जाते है वे देवाधिदेव शकर के कण्ठ की मुण्डमाला मे सुमेर (मुख्य मणिका) बन कर शोभित होते है । ऐसे महायोद्धा सम्राटो से भी महान होते हैं जिन पर कवि और सम्पूर्ण राष्ट्र लाखा बार बलिहार होता है ।

(९०)

जूझ मरै वै जीवता करण देस रो काम ।
सिर आख्या रे ऊपरा, रहवै वारो नाम ॥

जो अपने स्वर्ग से भी महान राष्ट्र की मुक्ति के लिए प्रचण्ड युद्ध मे जुझार के रूप मे महानिर्वाण प्राप्त करते है । वे मर कर भी इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठो मे शाश्वत रूप से जीवित रहते है । लोक मानस उन्हे देव तुल्य अपने शीश और पलको पर विराजित करता है । ऐसे पराक्रमियो का नाम ही अमर रहता है ।

(९१)

दोळा आवै देस रे, अरि रोळा जिण दाण।
जामण नाहक जलमिया, जे न करै घमसाण॥

जब आततायी अपने पाशविक बबर अनाचार से मातृभूमि को विपदा मे उत्पीडित कर देता है उस घनघोर सकट काल म जो वीर राष्ट्र की रक्षा हेतु महायुद्ध कर प्राणो की बलि नही देता ऐसे कायरो को उनकी अभागिन जननिया ने व्यथ ही ज म दिया है।

(९२)

थें तो मरुधर मात री, वीर बधाई बात।
फाटी काळी रातडी, उजळियो परभात॥

हे शौयपु ज डूगजी और जवाजी ! आपन ता अपने महाबलिदान मे मरुधरा मातृभूमि की वीरता को अधिक प्रखर और तेजस्वी आयाम दिया। आपन पराधीनता, राष्ट्र सकट और मानवता के अस्तित्व क्षय की काल रात्रि को चीर कर हम स्वाधीनता का स्वर्णिम उज्ज्वल प्रभात प्रदान किया है।

(६३)

अदावत अरिया करी, दीधी दावत देख।
मुडा री मिजमानिया, मरुधर सीमा रेख॥

यद्यपि शेरशाह सूरी ने शत्रुता के उन्माद मे पावन मरुधरा मे कुटिलतापूर्ण अतिक्रमण का दुस्साहस किया किन्तु कूपाजी और जैताजी जैसे उदार चरित राठौड वीरो ने उसे आमत्रण मानकर अपनी जन्मभूमि की सीमा रेखा पर शत्रु मुण्डो का अम्बार लगा कर विचित्र आतिथेय किया।

(६४)

सीस सत्रुवा साज ने, नाख्या तोरण द्वार।
उमा सकर आवियो, हिवडा रो दे हार॥

प्रलयकारी शकर और शौर्य की महाशक्ति उमा के शुभागमन हेतु आपने अपने हृदय के द्वार के तोरण पर शत्रुओ के शीश अलकृत कर दिये ताकि वे भक्ति विभोर होकर प्रवेश कर सके।

(९५)

जते कूपे जा कही, घणी अमोलक बात।
अरिया थारी रात है, (पण) म्हारो परभात॥

राठौडा के महायोद्धा सकल्पसिद्ध प्रबल पराक्रमी वीरवर जैताजी और कूपाजी विकराल शत्रु दल को ललकार कर एक अमूल्य बात कही हे आततायियो ! अपने अपार सैन्य बल के कारण केवल रात्रि तक तुम्हारा कुटिल युद्धाचार है किन्तु प्रभात होते ही हमारे शौर्य के सूर्य का वर्चस्व होगा।

(९६)

दुसमण म्हारा देस रो, जे जीतो घर जाय।
म्हारो मरण त्यूंहारडो रीतो ही रह जाय॥

राठौड वीरो ने उद्घोष किया—अरे हमारे राष्ट्र का आततायी पाशविक शत्रु जीवित ही घर लौट जायेगा तो हमने अपने क्षात्र धर्म की बलिदानी परम्परा के अनुसार जो मरणोत्सव आयोजित किया है उसका विजय उल्लास रिक्त रह जायगा।

(१०५)

भूले विधना जग रचण, धरती ढावण नाग ।
भारत कदै न भूलणो, रण रो सिंधु राग* ।।

सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा चाहे ता अपनी रचनाधर्मिता को भूल जाये । शेषनाग धरती को धारण करने के अपने शाश्वत उत्तरदायित्व को भूल जाये किन्तु भारत भूमि के महायोद्धाओं ने सिन्धुराग को कभी विस्मृत नही किया ।

(१०६)

ओ हिज प्रण अरमाण ओ, अतर आ हिज आग ।
रगता हरियो राखणो आजादी रो बाग ।।

जैताजी और कू पाजी जैसे शायपु जा का एक ही महान प्रण होता है एक ही प्रमुख महत्वाकांक्षा हाती है, उनके हृदय मे वीरता से प्रज्ज्वलित एक ही अग्निशिखा ज्वलन्त रहती है कि वे अपने रक्त से सिंचित कर स्वत त्रता के कानन को सदैव हरा भरा रखना चाहते है ।

---

* रणभूमि म उद्घाषित शौय गीत को सिन्धुराग कहत है ।

(१०७)

झुकै न झंडो देस रो, भल आभो झुक जाय ।
सेस नाग रो सीस भी, पाताळा पठ जाय ।।

इस धरित्री को धारण करने वाला शेषनाग भी अपनी मर्यादा भूलकर चाहे पाताल म चला जाये । चाहे अनन्त नभ भी झुक जाये मगर क्षत्रिय वीरा के जीवित रहते राष्ट्र का ध्वज कभी नही झुकेगा ।

(१०८)

गुम जाव किम गीतड़ा, नर रतना पर नाज ।
जैता कूपा राज री, ओल्यू आवै आज ।।

आज हमारा राष्ट्र एक भीषण सक्रमण काल के दौर से गुजर रहा है । कही हमारे गौरव गीत विलुप्त न हो जाय और शौय से यह धरा शून्य न हो जाये इसलिए हम जताजी और कूपाजी जसे नररत्नो का स्मरण करते है । उनकी वीरतापूण स्मृतिया हमारे हृदयो म राष्ट्रभक्ति का सचार करती ह ।

(१०९)

बादळ बोल्यो बीजळा ओ आछो सिणगार ।
रगता राती होयगी, गिररी समरा जार ॥

गिररी के महा रण क्षेत्र मे पीतवर्णी मरुधरा को जताजी और कू पाजी ने घनघोर समर से रक्तरजित रक्ताभ कर दिया । आकाश मे विचरण करते बादल भी स्तम्भित और चकित होकर बिजली को यह कहने लगे—दखो राठौडो ने अपनी मातृभूमि का कैसा शुभ शृ गार किया है ।

(११०)

सुरगा पूगा सूरमा, आयो कर अगवाण ।
ऊच्चासण आरूढ कर, इद्र कियो अघमाण ॥

गिररी के समरागण मे शेरशाह सूरी की सेना का सहार करते जुझारु रूप मे जब जैताजी और कू पाजी ने वीरगति प्राप्त की तो स्वय देवाधिदेव इ द्र ने उनकी अगवानी की । उ हे सर्वोच्च सिहासन पर विराजमान कर स्वग लोक के सर्वोत्तम अभिन दन से विभूपित किया ।

(९९)

धोकण थारा देहरा, तरसै तीनू लोक।
थिर रथ सूरज थामियो, तेगा माथै तोक॥

हे मरुधरा के महान सुपुत्रा ! आपकी विराट शौय साधना से प्रभावित होकर आपके देवालया या तीथ तुल्य द्वारो की अचना हेतु तीनो लोको के निवासी तरसते है क्योकि आपने अपनी तीक्ष्ण महा-प्रहारक वज्र सी तलवारो से सूय के रथ का स्थिर कर दिया। जसे आपके असियुद्ध की विलक्षणता से स्तब्ध चकित होकर सूय भगवान रुक से गय।

(१००)

गरणासो था गीतडा, घर घर भारत माय।
पवन फैलो परमला, जुग जाता किम जाय॥

ह राठौड सिह पुरुषा ! आपकी शौय गाथाओ के महागान भारत भूमि के घर घर म जन जन के कण्ठ से मुखरित हाग। चाह कितन ही युग बीत जाये किन्तु शीतल मन्द सुरभित मलयानिल मे आपके व्यक्तित्व की विराटता के परागकण महकेंगे।

(१०१)

धोरा वाळी ढाणियां, बाजरिया रा पूख।
ओळू करसी आपरी, रगता हरिया रूख* ॥

हे वीर सुभट्टो! आपके अद्वितीय रणकौशल और धरा की स्वाधीनता हेतु उल्लासपूर्वक बलिदानों का स्मरण मरुभूमि का कण कण और उनमें स्थित ढाणियां करती हैं। बाजरी के सिट्टों पर आपका नाम जैसे अंकित हो। आपने अपने पावन रक्त से सिंचित कर इस मरुभूमि के वृक्षों को हरियाली का सौंदर्य प्रदान किया।

(१०२)

चवर ढुळंता चोसरा, गाता अपसर गीत।
जैते कूंपे जूझ ने, राखी रजवट रीत ॥

अपराजेय महायोद्धा जैताजी और कूंपाजी ने शेरशाह सूरी की टिड्डी दल सी सेना में जुझारु युद्ध कर क्षत्रियत्व की मर्यादा का सम्मान रखा। उनकी वीरगति पर स्वर्ग की अप्सराएँ वंदन पुण्यश्लोकों के गीतों को गाती पुष्पहार अर्पित करती देवताओं की भांति सम्मानित करने हेतु चवर ढुलाती हैं।

* इस दोहे में कवि ने प्रकृति का मानवीकरण किया है।

लाख नमण बका अनड वदण बारमबार ।
था जिसडा जलमे जठै, किम लोपै अरि कार ।।

हे रणबाकुरे राठौड सुभट्टा ! हम आपको लाख लाख बार नमन करते हैं और निरन्तर आपके राष्ट्रभक्तिपूर्ण महातेजस्वी व्यक्तित्व की अभीष्ट आराध्य सम वन्दना करते न अघाते । आप जैसे मातृभूमि के बलिदानी योद्धा जहा जन्म लेते है वहा कोई शत्रु हमारी स्वाधीनता सीमा को लुप्त कर सकता है ।

(व०४)

हिवडो भरियो धर समर, पोघळियो पैय धार ।
बरसण लागो अब धर, मारू खेत मजार ।।

आपकी अपूव युद्ध शली से हर्षित होकर वज्रधारी इन्द्र देवता का हृदय भी द्रवित हो गया । घनघोर मघ अब पुण्य भूमि पर वषा करने लग । मरुधरा के खेत सजल हो गये ।

(११३)

करण भीखम द्रोण क्रन, खयगा खागा खाय।
दुरजोधन रण छोडियो, जळ मे छिपियो जाय।।

महाभारत जैसे पृथ्वी के महासमर मे सूयपुत्र अमोघ कवच कुण्डलधारी कर्ण, देवव्रत इच्छा मृत्यु के वरदान से अनुप्राणित महाबली भीष्म पितामह और शास्त्र तथा शस्त्रो के अद्वितीय आचाय द्रोण भी असिधाराओ के अगणित प्रहारो से वीरगति को प्राप्त हुए मगर दुर्योधन जिसके पास पाण्डवो से अधिक सेना थी, जो दभ से दहाडता अ त मे कायरतावश युद्धभूमि से पलायन कर एक जलाशय मे छिप गया।

(११४)

पारथ धरमराज भीम भट, छोड गया वनवास।
भारत* रचा जैत कू प, छोड गया जस वास।।

पाथ अजु न धमराज धतराष्ट्र भीम जैसे महाकाय सुभट्टो ने युद्ध के पश्चात प्रायश्चित हेतु हिमगिरि मे आत्म निर्वासन का निणय लिया कि तु राठौड वीर जताजी और कू पाजी गिररी के रणागण म नये महाभारत की रचना कर अ त म यशलोक म लीन होकर अमर हो गये।

---

* इतिहासविदा न गिररी के महासमर को महाभारत के महायुद्ध के समान माना है।

(११५)

जीवै जितरै जूझ वै, अतर करै उजास।
देवै सूरा देस ने, मर समरा मधु मास।।

राठौड वीरो का यह महान चरित्र रहा है कि शत्रुओ के ललकारने पर उनके हृदयो म शौय का उत्हास आलोडित होने लगता है फिर जब तक उनके जन मे प्राणो की अन्तिम श्वास और लहू की आखिरी बूद रहती है वे जूझते रहते है व जुझार बन जाते हैं। एसे शूर अपने प्राणो की बलि देकर राष्ट्र को सम्पन्नता समृद्धि, सुख और यश का वसन्त प्रदान करते है।

(११६)

सत सूरा रण सूरमा, प्रीत देस प्रण धार।
सोया खागा समर मज, वदण वारमवार।।

सात्विक व्यक्तित्व के महातेजस्वी राठौड योद्धा रणभूमि म क्षत्रियत्व का सकल्प और राष्ट रक्षा का धम धारण करत हैं। दश के प्रति अपार प्रीति क कारण व युद्ध भूमि म तलवारो की धार पर चिरनिद्रा मे लीन हो जाते हैं। ऐसे महावीरो की वदना हम युगयुगान्तरो तक सतत करत न अघाते है।

(११७)

आया अरि लख प्राहुणा, जग बढ लिया जुहार ।
तातो रगत सिर तिलकियो, कर खागा मनुहार ॥

युद्ध जैसे आतंक विध्वंस नहीं है, एक महान वीरोत्सव है। इसलिए राजस्थानी क्षत्रिय शत्रुदल को अतिथि आगमन जैसी उल्लास पूर्ण परम्परा मानते हैं। युद्ध भूमि में वे उन्नत शीश स्फीत हृदय और हर्षित मन से शस्त्रों से उनकी अगवानी करते हैं। उष्ण रक्त से मस्तकों पर अभिषेक करते हैं और तलवारों के प्रबल प्रहारों की मनुहारें करते हैं।

(११८)

भव बोल्या ऊमा अहो, सत्रां रो कर सूड ।
सवाई सुरग सू करी, घोरां वाळी धूड ॥

कैलाश पर्वत पर विराजमान संहार के प्रलयकारी महादेव ने गिररी के युद्ध क्षेत्र में राठौड़ वीरों के विलक्षण रण कौशल को देख कर हर्षित वाणी से भगवती भवानी से कहा—हे उमा देखो इन सुभट्टों ने किस विद्युत वेग से शत्रुदल का दमन कर दिया है। इनके शौर्य से मरु भूमि की शुष्क बालुका स्वर्ग की पावन रज से भी सवाई पवित्र हो गई है।

धन जरणी सूरा धनो, धन धन मावड गोद ।
थारा करतब ऊपरा, देस मनावै मोद ।।

महा तेजस्वी जैताजी और कू पाजी आपका अपराजेय पराक्रम धन्य है । ऐसे महावीरो को जन्म देने वाली जन्मभूमि और माता की कोख भी धन्य है । आपने युद्ध मे वीरता के जो अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किये है । उनसे मुदित होकर सम्पूर्ण राष्ट्र उल्लास पर्व मना रहा है ।

(१२०)

कायर कई कुमलाय मुख, लाघ गया पत लोप ।
रोप्या पग धर रघडा, चाह उमाह सचोप ।।

शेरशाह सूरी की विकराल सेना और कुटिल तन्त्र से आतंकित होकर अनेक कायरो के मुह पतझड के पत्ता से पीले पड गये । वे अपने कुल की मर्यादा की प्रशस्त रेखा को लाघ कर पलायन कर गये । मगर जो प्रबल स्वाभिमानी योद्धा थे उन्होंने अगद के पाव की भाति रण भूमि मे अपने समत्त पर स्थिर कर दिये, उनके हृदयो का उत्साह वर्णनातीत है ।

(१२१)

परहित मरणो विसरिया, श्रपजस मिळै श्रछेह ।
प्राण निछरावळ रण किया, सरगा जाय सदेह ।।

जा योद्धा लोक कल्याण परमार्थ या राष्ट्र भक्ति हेतु मृत्यु के वरण को विस्मृत कर आत्म केन्द्रित स्वार्थी हो जाता है, वह अथाह अपयश के दल दल मे फस जाता है किन्तु जो वीर रण भूमि मे राष्ट्र देवता की अर्चना हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर देता है, वह सदेह स्वर्ग को सिधारता है ।

(१२२)

देस लाडला देवला, झालर री झणकार ।
कमधजिया आसो कदे, जग करसी जयकार ।।

जब कभी राष्ट्र आततायियो से आक्रान्त होता है हमारी स्वतन्त्रता के अपहरण के षडयन्त्र रचे जाते है, भारतीयता की अस्मिता विचलित होती है तो वीरा की समाधि रूपी देवला मे झालर की झनकार करते देशवासी प्रार्थना पूर्ण आह्वान करते है—हे कमधज राठौड वीरा, आप कब पधारोगे, हम आपके शौर्य स्वरूप की जय जयकार करते है ।

(१२३)

लेवै लूरा वारणा, रमिया रगत फाग।
जौहर जिम जाग्रत हुई, अतस सूरा आग।।

रण के नगाड़े बजते ही क्षत्राणिया भाव विभोर होकर मरण पव हेतु वास तों गीत गाती है, अपने प्रियजन समृद्ध वीरा पर बलिहारी होती है कि लहू के रग से फाग (होली) खेलेंगे और परानमी वीरा के अ तमन से प्रज्ज्वलित शौय की अग्नि से हम जौहर की ज्वालाएँ सतीत्व और राष्ट्रभक्ति हेतु अर्पित करेंगे।

(१२४)

झुर झुर विलख झू पडा, वलण करो अब वीर।
लावो नवजुग लाडला, नव फूला तकदीर।।

हे प्रवल पराक्रमी राष्ट्र भक्त जताजी और कू पाजी आपकी गौरवमयी स्मतियो मे मरुधरा की झापडिया विलख विलख कर अश्रुधारा प्रवाहित कर रही है। आपका पुकार रही है कि हे देशभक्तो आप पधारिये। आपके शुभागमन से नव शौय युग का शुभारभ होगा। सम द्धि के नव कुसुमा से राष्ट का सौभाग्य शृगारित होगा।

पग छता धर पागळी, रतन रुगदे रेत।
बावड कूप केहरो, बाड खायगी खेत॥

पैर होते हुए भी पुरुषार्थ के बिना अपने जडपुत्रों के कारण धरित्री पगु हो गई है। प्रतिभा के रत्नों को रेत में धूमिल कर दिया गया है। अब बाड जैसे खेत को खाने लगती है वैसे राष्ट्र के तथाकथित कणधार देश का विघटन कर रहे हैं। ऐसे विपदकाल में हे पुरुषसिंह कूपाजी आप राष्ट्रोद्धार के लिए पधारिये।

(१२६)

राजस कूपा राज री, मिनखा जीवण मोल।
नव जुग हाला नूतवा, हालण आव हरोल॥

हे परमवीर कूपाजी! आप क्षात्र धर्म के साकार स्वरूप है। आपने अपने उदात्त चरित से मानवता के उच्चतम मूल्यों की स्थापना की है। आज फिर धरित्री अमानवीकरण से अभिशप्त है। इसलिए हम नवयुग निर्माण हेतु आपको आमन्त्रित करते हैं कि आप पधारिये और अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित होकर हमारा नेतृत्व कीजिये।

(१३१)

दिल दरियो दानेसरी,* हर पल ऊचा हाथ।
मरुधरियो महराजवत, सत करमा रै साथ॥

शौय और तपश्चर्या के साकार रूप महराज के सुपुत्र कू पाजी ने मरुधरा मे असद् को मिटा कर सत की स्थापना की। उनका हृदय समुद्र के समान विशाल था। वे दानदाताओ के अधीश्वर थे, जिनके हाथ सदव ऊपर रहते।

(१३२)

जुध बावन लडिया जिका, जबर पागडै जीत।
इतिहासा रहसी अमर, गौरव कूपा गीत॥

अपराजेय योद्धा राव कू पाजी ने गिररी के महासमर से पूव बावन युद्धो मे विजय श्री प्राप्त की। उनके रण कौशल से प्रभावित होकर राजा मालदेव न उनको अपना प्रधान सेनापति बना कर शौय मुकुट से सुशोभित किया। ऐसे परमवीर का नाम सदैव अमर रहेगा।

---

* कू पाजी की दानवीरता को परखने उनके मामाद मेवाड के राणा उदयसिह न एक चारण का भेजा जो कू पाजी का एक नाडी म स्नान करते मिला। कू पाजी के इष्टदेव शकर की कृपा स नाडी के ककर पत्थर माणक मोती बन गये जिन्ह प्राप्त कर चारण विस्मित हो गया।

कुलविदरा रा काम मे, विटळ गयो बरणवीर ।
उणरो दमन अगेजियो, वंगो समर वहीर ।।

जब गिररी के युद्ध में कुल विद्रोही विभीषणों ने कुटिल शेरशाह सूरी को षडयन्त्र रचने में सहयोग दिया। अपने ही बाधव भ्रमित हो गये और राव मालदेव पलायन कर गये तो कू पाजी ने मातृभूमि के आंचल की रक्षा के लिए महाप्रयाण किया।

(१३४)

घात उदय पर घालतो, विटळा की विसवास ।
जे न भोड़ जावतो, ओर हुतो इतिहास* ।।

यदि राव मालदेव अपने ही सरदारों से भ्रमित होकर कू पाजी के प्रति भी अविश्वास व्यक्त कर पलायन न करते। अगर राठौड़ सरदार भी कू पाजी की स्वामिभक्ति पर विश्वास कर महासमर में युद्ध करते तो भारत वर्ष का इतिहास ही बदल जाता।

---

* शेरशाह सूरी की पराजय से दिल्ली पर मरुधरा का राज्य होता।

मरुधरिया महराजवत, सबल प्रेरणा स्रोत।
लिखता तव जस सूरमा, हरख अथग मन होत ॥

हे मरुधर श्रेष्ठ महराज के सुपुत्र परमवीर कूंपाजी ! आप राष्ट्रभक्तों के लिए सशक्त प्रेरणा स्रोत है। हे शौर्य मार्तण्ड ! आपकी यशोगाथा को लिखते समय हृदय में हर्ष का पारावार उमडता है।

(१३६)

आटोला अंबर धरा, जग नह सूरा जोड।
खातीला महराज रा, रणबंका राठौड ॥

इस अनन्त अम्बर और विशाल धरित्री में आपके समान सकल्प सिद्ध स्वाभिमानी बलिदान हेतु हठी महावीर क्या कोई दूसरा हो सकता है ? हे महराज के पुत्रश्रेष्ठ कूंपाजी ! आप तो रणसिद्ध रहे सदैव रण बांकुर राठौड रहे।

(१३७)

जसधर जैता राज रो, अप्रबळ जग आपाण।
प्रेरक थारा पूजणा, महापवित्र मसाण।।

हे वीर जैताजी! आपने अपने बाहुबला के पराक्रम से नव इतिहास की रचना की। आपके अपराजेय शौर्य से ऊजस्वित व्यक्ति की पूजा हमें देश भक्ति की प्रेरणा से अनुप्राणित करती है। आपने दुधष मघष से श्मशान को भी पवित्र बना दिया।

(१३८)

कूपा कदे न होवणो, अणथग जस रो अंत।
आसी भारत आगणे बारा मास बसंत।।

हे राष्ट्र देवता के अनन्य आराधक कूपाजी! आपके बलिदानी व्यक्तित्व के यश आलोक धारा का कोई अन्त नही है। आपके शुभागमन बल्कि स्मरण मात्र से भारत भूमि के आगन मे बारह महीनो बसन्त की लावण्य समृद्धि लहराती रहेगी।

भोळो सकर भेटियो, अतस मन उदात ।
अबखा ने नित आसरो, थें दीधो वरदात ।।

भोले शकर ने अपने अ तमन म औदात्य की भावना से कू पाजी के बलिदानी व्यक्तित्व का साक्षात्कार किया। महादेव ने कू पाजी को यह अटल वरदान दिया कि सदव सकटग्रस्त विभिन्न निराश्रित लोगा को अपना सरक्षण प्रदान करना।

(१४०)

पौरस पिरथीनाथ रो, इतरो कू प अछेह ।
बरसै बारा मास ही, मरुधर दूधा मेह ।।

वीरवर कू पाजी का पौरुष वास्तव म पृथ्वी वल्लभ चक्रवर्ती सम्राटा की भाति अनन्त था जिसके प्रभाव से अभावग्रस्त प्रकृति से विपन्न मरुधरा मे बारहा मास दुग्ध वर्षा होती अर्थात कू पाजी जसे लोक नायक की छत्रछाया म मरुधरा के लोग सम्पन्न सुरक्षित हर्षित जीवन जीने लग।

(१४१)

अछन प्रसन्न मन आपरा, गाया गौरव गीत।
सौरभ धर सरसावणी, रण मरण री रीत॥

जब आपने क्षात्र धर्म और स्वदेश की रक्षा हेतु युद्ध मे जुझारु बन कर मरण की मर्यादा का पालन किया तो यह धरती आपके उदार विराट बलिदानी व्यक्तित्व की सौरभ से महक उठी। जन जन अत्यधिक उत्साह और उमग से रोमाचित होकर आपके गौरव गीत गाने लगा।

(१४२)

अथग चरित बळ आपरो, पळ पळ करै प्रकास।
पगल्या थारा पूजसी, आगम री इतिहास॥

आपके महान व्यक्तित्व मे अपार बल समाहित था जिसके प्रभा-मण्डल से प्रतिपल मरुधरा आशा और उल्लास के आलोक से ज्योतिमयी हो गई। भावी इतिहास मे आपके शौर्य से तेजस्वी चरणो की वन्दना की जायेगी।

आखरिया जस आकसी, आगण फलसी अब ।
टळसी जग प्रताडना, वलसी भावक भब ।।

कवियो और इतिहासविदा के अक्षरा म आपके महान यश का पावन अकन होगा । मरुधरा के आगन मे वस त की समद्धि के प्रतीक आम्रफल फलेंगे। विश्व आततायियो की प्रताडना, अपमान और अत्याचार से विमुक्त होगा । कष्ट कपट कुटिलता की नागफणिया जल कर नष्ट हो जायेगी ।

(१४४)

दीप थिरचक देघता, खत्रवट फबतो खभ ।
सत आखो मुख चारणा, उणरो सहायक अब ।।

क्षनियत्व की शौय परम्परा के हे महास्तम्भ ! वीरता के दवता आपकी शौय ज्योति का दीप शाश्वत रूप से जग और लोक मानस मे प्रज्ज्वलित रहेगा । स्वय शक्ति रुपा अम्बा चारणो के मुख से आपके सत्कार्यो के गौरव गान मुखरित करायेगी ।

(१४५)

कुळ कालच लागे न कदे, मरणो रण मज मूळ ।
कूपे केसरिया किया, दृढ समर सादूळ ।।

सिंह की भांति गर्जना कर महायोद्धा कूंपाजी ने केसरिया धारण कर प्रचण्ड युद्ध में जूझते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये ताकि मालदेव के पलायन और शेरशाह सूरी की कुटिलता के बावजूद राठौड़ कुल कलंकित न हो।

(१४६)

माभी कूंप महराज रै, धर मरुधर री ढाल ।
गिरी समर जा जूझियो, लोया धरती लाल ।।

महराज के सुपुत्र पराक्रम के शिखर पुरुष राव कूंपाजी ने मरुधरा की रक्षार्थ स्वयं ढाल बन कर गिररी के महासमर में जुझारू बन कर धरती को शत्रु के शोणित से रक्ताभ कर दिया।

मालदेव निज महल मे, जा लुकियो घर जाय ।
ना झुकियो महराजवत, लागी उर मे लाय ।।

मरुधरा नरेश मालदेव अविश्वास और अनिश्चय से विचलित हो, रणक्षेत्र से पलायन कर, राजमहलो मे छिप गये। तब महराज के सुपुत्र कमधज श्रेष्ठ कूपाजी का हृदय शौर्य की अग्नि से दहकने लगा। उन्होने झुकने की अपेक्षा मरण का अमर मार्ग चुना।

(१४८)

वाली इज्जत आबरू, सँ सू वालो देस ।
कूप किया धर ऊवरी, केसरिया कमधेस ।।

कमधेश महाबली कूपाजी को स्वाभिमान प्रिय था। उससे भी अधिक अपने राष्ट्र की प्रतिष्ठा अभीष्ट थी इसलिए मालदेव की कायरता से बाझ होती मरुधरा को उन्होने केसरिया धारण कर अपना मस्तक आरोपित कर उवरा वीर प्रसविनी बना दिया।

(१४९)

रतना सागर राज रो, वतन भाव विसेस ।
जा जतन उणरा किया, केसरिया कमधेस ॥

वैसे तो कूपाजी मानवीय मूल्यो के महासागर थे। उनकी दानवीरता प्रख्यात थी किन्तु उन्हें अपने सुयश की अपेक्षा राष्ट्र भक्ति अधिक वरेण्य थी। इसलिए अपने राष्ट्र की स्वाधीनता हेतु कमधेश कूपाजी ने केसरिया धारण कर प्रबल पराक्रम का प्रदर्शन किया।

(१५०)

गिरी भारत भड माडियो, साम धरम मनचीत ।
कमधज जुग जुग केसरी, गासी गगा गीत ॥

स्वामिभक्ति के महान धर्म की रक्षा हेतु वीर शिरोमणि कूपाजी ने गिररी की युद्धभूमि को महाभारत में परिणत कर दिया। उस नर केसरी कमधज श्रेष्ठ के यशोगान युग युगों तक गंगा की लहरियाँ भी मुखरित करेंगी।

(१५१)

पागा खागा खायने, रजपूतो पर रीझ।
फळिया अर नित फाळसो, बोयाह बिडद बीज ।।

शौय की देवी ने क्षत्रिया को अपने शीश पर तलवारा के प्रचण्ड प्रहार झेलते देखे। शत्रुदल के प्रतिघातो मे भी क्षत्रियो के मस्तक, उनकी पगडिया गर्वोन्नत रहे तो शौय की देवी क्षत्रियत्व के इस औदात्य पर रीझ गई। ऐसे महावीरा के प्रशस्ति गान के फल सदव प्रफुल्लित रहते है। भविष्य म भी यश क अकुर फलीभूत होने रहगे।

(१५२)

देणो कमधज जाणियो, लेणा नहीं लगार।
गहणो गुणाह रो गजण, सरण आया साधार ।।

कमधज वीरो की यह विराट परम्परा रही है कि वे सदव दना जानते हैं, चाहे दान हो या मस्तक। व कभी मागना नही जानते। वे सदैव विलक्षण गुण ग्राहक रहे है और शरणागत की रक्षा के लिए विश्वविख्यात हैं।

(१५३)

अवरा कूपा अमर धन, मरुधर धरती मान।
हर पल सूरा हेत सू, धरियो सिव रो ध्यान ॥

बावन युद्धा मे अपराजेय रहे महान योद्धा वीरवर कूपाजी ने आततायियो से आक्रान्त उत्पीडित मरुधरा के सम्मान को अक्षुण्ण रखा। उनके इस अमर धन मे राठौड वश अनुगृहीत हो गया। प्रलयकारी युद्ध मे प्रतिक्षण महा सेनापति कूपाजी ने शकर का ध्यान कर विकराल सहार किया।

(१५४)

सदगुणा कूपो समद, इणरो थाग अथाह।
बिरदाळा रण बाकुरा, चितवन सवणी चाह ॥

राव कूपाजी महावीर ही नही परमदानी तथा सभी मानवीय सद्गुणो के महासागर थे। चाहे दानवीरता हो या स्वामिभक्ति, राष्ट्र-प्रेम हो या रणकौशल किसी भी आयाम मे इनके गभीर व्यक्तित्व की गहराइया का मूल्याकन असभव था। परम यशस्वी रण बाकुरे के सम्मोहक स्वरुप को निरखने हेतु जनजन के नेत्र लालायित रहते।

(१५५)

हर पल कीधो हेत सू, जप मृत्यु जय जाप ।
सगती मन मे सचरी, अणहद भगती आप ।।

हे शकर के वरद भक्त कूपाजी ! आपने रणसाधना के माध्यम से प्रतिपल महामृत्यु जय मत्र का जैसे जाप किया हो इसीलिए आप मे मा भवानी ने अनन्त शक्ति का सचार कर दिया । आप शक्तिपु ज थे ।

(१५६)

माळा गिणी महेस री, मरुधर गौरव माप ।
अवसल राखी ओपती, धणिया री धणियाप ।।

आपने देवाधिदेव महादेव की स्मरण माला का जाप करते करते मरुधरा की सीमा रेखा को मुण्डमाला से अभिरक्षित कर गौरवान्वित कर दिया । आपन अपने स्वामी की सत्ता को स्वय प्राण समर्पित कर चिरस्थायी बना दिया ।

रजपूती रो राठवड, कूपो कीरत मान।
मूरत जन मन मे बसो, धर रो सुमरण ध्यान ।।

राठौडो के क्षत्रियत्व की अपार कीर्ति को कूपा ने गिररी के महासमर मे धूमिल नहीं होने दिया। अब जब कभी हम मरुधरा का प्रशस्ति गान करते है तो सहज ही जनमानस मे आपकी उदात्त छवि प्रतिविम्बित हो जाती है।

(१५८)

प्रमला कूपा प्रेम री, महकै गहकै मोर।
चिडिया चहकै सुमर ने, हिवडै भरी हिलोर* ।।

हे मरुधरा के महानायक आपके राष्ट्र प्रेम और जन स्नेह की सुरभि से मरुधरा का सम्पूर्ण परिवेश महक रहा है जिससे उल्लसित होकर जनमन तो क्या मयूर भी झूम कर कुहुकते है। भावातिरेक से तरगित चिडिया भी चहचहाती है।

* कवि ने अभिव्यक्त किया कि कूपाजी के अपूर्व त्याग से न केवल मरुधरा के लोक समाज की रक्षा हुई बल्कि प्राकृतिक परिवेश भी विध्वस से उन्मुक्त रहा।

(१५६)

गिरी जुध जोधा जोय ने, कलरव पछी कोड ।
गावै गौरव गीतडा, रण बका राठौड ॥

गिररी के महासमर मे राठौड योद्धाग्रा के ग्रपराजेय शौय को निरख कर उत्पीडित होकर क्रदन करने की ग्रपेक्षा पक्षी भी झूम झूम कर कलगान करने लगे। उनके सुरा मे रण बाकुरे राठौडा के गौरव गीत मुखरित होने लगे।

(१६०)

रज उड जासी गगन मे, धुड जासी गढ भीत ।
उड उड हर हिय मायने, गरणासी जस गीत ॥

ऐसे प्रचण्ड महासमर मे धूल उड कर गगन को ग्राच्छादित कर देती है। भयाक्रान्त ग्रनेक दुर्भेद्य दुर्ग भी ढह जाते हैं किन्तु हमारे हृदया मे लहरा लहरा कर राठौड वीरा के यशगान निरन्तर गूजते रहते हैं।

(१६१)

आखरिया री आरती, उर उरजा री जोत।
वीरा थारी वदणा, गौरव लेसी गोत ।।

हम मागलिक अक्षरो मे ऐसे महावीरा की आरती करते है। उनके शौय स्वरूप का स्मरण कर हृदयो मे ऊर्जा की ज्योति सजोते ह। ऐसे जैताजी कू पाजी आपने अपने गौत्रो को धन्य कर दिया है जिसका गौरव गान आपकी वन्दनाओ म अभिव्यक्त होता है।

(१६२)

ज्योति कळस अे राज रा, झलकै छलकै भाल।
मुळकै माटी मरधरा, नव जुग वियो निहाल ।।

आपके महात्याग से ज्याति कलश ऐसे छलक उठा है जैसे आपका प्रशस्त प्रदीप्त भाल हो। मरधरा का कण कण स्मित हर्षित है क्योकि आपके राष्ट्रहित महानिर्वाण से समृद्धि दायक निहाल करने वाला नवयुग आ गया है।

लागण दो मत लाडला, दुसमण रो घर दाव ।
मरुधर श्रा महराजवत, कमधज पाळो काव ॥

हे महराज के सुपुत्र परम वीर कू पाजी ! आपन कमधज राठौडा के इन वचना का अपने प्राणो की आहुति देकर चरिताथ कर दिया कि हमारी पुण्य धरा पर कभी शत्रु का आधिपत्य नही होगा उनके दाव प्रहार कुण्ठित हो जायेगे ।

(१६४)

सबदा सरसी सुरसरो, नाखा जीवण नाव ।
मात्र भोम हित मरण रो, चित मे राखो चाव ॥

आपके यश गान के शब्दा से प्रवाहित सुरसरिता गगा मे हमन अपने जीवन की नौका को सतरित कर दिया है अर्थात हम आपके यशस्वी व्यक्तित्व का ही अनुसरण करते हैं । आप से हमने मातृभूमि की रक्षा हेतु मृत्यु को उल्लास पर्व मानने का सस्कार प्राप्त किया है ।

(१६८)

कूपै कागद मेलियो, हिवडा आस अवेख।
पख सवारो पछिया, लिखिया नव जुग लेख ॥

गिररी के महान योद्धा ने अपने बलिदान के माध्यम से अ तर-दृष्टियों से उज्ज्वल भविष्य हेतु आलेख लिख कर हमे पक्षियो के उन्मुक्त पखो के माध्यम से प्रेषित किये है जिसमे मानवता के अभ्युदय के नवयुग का आह्वान है।

(१६६)

कर जुग आयो हे नरा, काम समझले राम।
काम राम रो रूप है, धर धर पुन रो धाम ॥

हे भारतवासियो! हमारे बलिदानी योद्धाओ के पुण्य स्वरूप अब कर्मयुग का शुभारभ हुआ है। हमे काम अर्थात कर्म को राम या ईश्वरत्व की आराधना समझनी चाहिये। कर्म मे राम रमा है। कर्म साधना से ही हम अपनी मातृभूमि को तीर्थ बनायेगे।

अेको अमोलक चीज है, आगम देखो आप।
रजवट धर पर रहवणी, जपिया श्रम रा जाप॥

एकता मे अनन्त शक्ति है। एकता सफलता का सिद्ध मंत्र है। एकता से ही हम गौरवशाली भविष्य का सृजन कर सकते हैं। एकता और श्रम से ही इस धरा पर सर्वकल्याणकारी मंगलमय क्षात्र धर्म स्थिर रहेगा।

(१६८)

आथडता आगे बढो, भुजा जन बळ भार।
श्रम सजल करें इळा, व्हे जुग रा जूझार॥

हे नवपीढी के होनहार राष्ट्रभक्तो सदैव समृद्धि और लोकमंगल मार्ग पर आगे बढते रहो। मातृभूमि के अभ्युत्थान हेतु अपने बाहु-बलो से हमें ऐतिहासिक परम्परा से मिले प्रशस्त उत्तरदायित्वो को निभावो। हे नव युग के जुझारुओ श्रम से जननी को शृंगारित करो।

(१६९)

घावा छक घायल मरै, सीस कट इक बार।
कट कट ने जीवैं जिका, व्है जुग रा जूझार।।

समर भूमि म अगणित घावा से आहत तडप तडप कर मरने की अपेक्षा प्रथम प्रहार मे ही शीश को राष्ट्र देवता को समर्पित करना श्रेयस्कर है। जो जुझार होते ह उ ह मारना आसान नही, प्रत्येक अग कटन के पश्चात भी वे भीषण युद्धरत रहत है।

(१७०)

मरै वट राखण वीरता, रण सूरा इक बार।
आता वट दे जीविया, व्है जुग रा जूझार।।

अपने राष्ट्र के परम सकल्पा और स्वाधीनता हेतु एक बार मर कर परमवीर अमर हो जाते है। क्षात्र धम के युग के जुझारू योद्धा जैसे जैसे क्षत विक्षत होते है तो उनकी तेजस्वी आत्मा अधिक विराट रूप धारण कर हमे शौय और बलिदान के लिए प्रेरित करती है।

(१७१)

रोटी वाळा राग मे, हिम्मत मत न हार ।
चोटी आप सभाळ ले, रे जुग रा जूझार ॥

रोटी की रागिनी अर्थात स्थूल क्षुद्र जीवन जीने वाले शरीर की सतह पर जीने बाले स्वार्थी राष्ट सकट के समय हिम्मत क्यो हारते है? मगर युग निर्माता देशभक्त अपनी शीश शिखा स्वाभिमान के मुकुट की रक्षाथ जुझार हो जाते ह। देश ऐसे ही जुझारुग्रा से गौरवान्वित रहता है ।

(१७२)

सस्कृति अर सभ्यता, धरम हिवडै धार ।
पाण पसीने आपरै, जीवण वट जूझार ॥

वीरता केवल हत्या या हिंसा नही है । शौय म राष्ट्रीय नवनिर्माण का श्रम निहित रहता है । शूरवीर सदव अपने हृदय म सभ्यता का आलोक, सस्कृति का अमृत और धम की पावनता को धारण कर मातृभूमि हित जूझने के लिए जीते है ।

क्षात्र धरम रै खूटिया, होणी अणहद हाण ।
रोसीलो हो राखणो, मिनखा जीवण माण ।।

इस धरित्री से जब मगलमय, लोक हितकारी, परमार्थ परिपूर्ण क्षात्र धर्म समाप्त हो जायेगा तो मानवता की अपार क्षति होगी। मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है जबकि वह अपने देश, समाज के सम्मान हेतु शक्ति पुंज बना रहता है।

(१७४)

आ सदेस सुरलोक सू, इण मे मीन न मेख ।
कूपै कागद मेलियो, सेर वण रजवट रेख ।।

गिररी के महासमर मे वीरगति प्राप्त कर स्वर्ग मे सर्वोच्च राठौड शिरोमणि कूपाजी ने हमारे लिए यही सन्देश प्रेषित किया है कि हम कभी क्षात्र धर्म की महामानवीय मर्यादा से विचलित न हो।

सहसी पीडा सब हिता, मन रहसी मजबूत ।
जे बहसी जन धार मे, रहसी वे रजपूत ॥

जो सभी के लिए मानव क्या यहा तक कि पशु पक्षिया सूक्ष्म जीव ज तुग्रो ग्रोर वक्ष लताग्रा के हित हेतु पीडा सहन करते ह जो अपने हृदय म बाहर की प्रतिकूलता के उपरात सुदृढ रहते ह जो राष्ट्र या विश्व चेतना की मुख्य धारा म प्रवाहमान हैं वे सच्चे क्षत्रिय है ।

(१८०)

ढहसी सह ढकोसला, कुटिल कथणी कूड ।
मिनखा वारै माजने, घोबा पडसी धूड ॥

सम्पूण मिथ्या ग्राडम्बर बालू की दीवार की तरह ढह जाते हैं । जा कथनी ग्रौर करनी मे ग्र तर रखते है ऐसे कुटिल दोहरे व्यक्तिया मस्तक पर लोक समुदाय ग्रजलिया भर भर धूल डालता है ।

पावन रजवट परमपरा, सीतल मद सुगध।
तीन ताप तारण तरण, मेल मति मतिमद ।।

क्षात्र धम की परम्परा पवित्र है मलयानिल के ममान शीतल, म द और सुरभित। हे म दबुद्धि के स्वार्थी लोगा! इस पुनीत परम्परा से क्यो मिचलित हाते हो। क्षत्रियत्व से दैहिक दैविक भौतिक तीना तरह के स ताप मिट जाते हैं।

(१८२)

कागद या कमधेस रो, इमरत भरीयो श्रेह।
इणने घट ऊतारियो, श्राणद भोग श्रछेह ।।

कमधेश राठौड वीर कू पा ने क्षात्र धम के सकल्प का अमृत भरा पत्र हमे स्वर्ग लोक से प्रेपित किया है। यदि हम राष्ट्रभक्ति और शौर्य के इस स देश को अपने प्राणा मे रमा देते ह तो हम जीवन का अथाह आन द मिलेगा।

मानीतो महराजवत, आखे योगी अरूड ।
राजनीत रा रोगिया, कदे न कथणो कूड ।।

महराज के पुत्र वीरवर कूंपाजी तो तपश्चर्या भक्ति और योग साधना से तपोपूत महा तेजस्वी और सब समर्थ थे ऐसे महायोगी के समक्ष सत्तालोलुप रुग्ण जना का क्या कूटनीतिक कुटिल तंत्र सफल हो सकता था ?

(१८४)

गिररी री गरिमा गजब, धरती धनो सुमेल ।
जैतो कूंपो जोरवर, मणि कचण रो मेल ।।

गिररी के समरागण म जहाँ महाभारत जसा युद्ध हुआ उसका गौरव विलक्षण है । सुमेल नदी के तट भूमि भी धन्य है जहाँ मणि काचन सहयोग के समान जैनाजी और कूंपाजी ने सम्मिलित दुधर्ष महायुद्ध किया ।

(१८५)

अरि मरदन ने आकता, जैंते झटका झीक ।
तेगा अरि दल ताडिया, मानीता मसरीक ।।

राठौड योद्धा जताजी राष्ट्र भक्ति के प्रबल प्रवाह मे झटके से वज्राघात के समान शत्रुदलो का सहार करते । अपनी तीक्ष्ण तलवारो से महामान्य सेनापतियो ने अरिदल को प्रताडित खण्डित मुण्ड मुण्ड कर दिया ।

(१८६)

मालदेव री मरुधरा, डब डब नयणा देख ।
जैतो कूपो जूझिया, विकट वगत ने वेख ।।

पलायनवादी मालदेव को निरुत्साहित देख जब मरुधरा जननी की आँखें डबडबाने लगी, अश्रुपूरित हो गई तो ऐसे विकट काल को परख कर जताजी और कूपाजी जुझार बन गये ।

(१६५)

अरि दल नेडो आयने, जावै किमकर झाक।
मातृभोम हित मरण रा, इतिहासा मे आक॥

राठौड महायोद्धाओ ने विकराल टिड्डीदल से शत्रु सैन्य को अपने समीप आया देख कर रक्ताभ नयना से अरिव्यूह परख कर उसे धरा शायी कर दिया। ऐसे मातृभूमि के बलिदानिया के पुण्य नाम इतिहास म अकित हो जाते है।

(१६६)

मरुधरिया महराजवत, मन नह कीधी माग।
आई जिण पुळ आपदा, रगता भर दी राग॥

मरुधरा के गौरव महराज के सुभट्ट सुपुत्र राजा वलि के समान दानवीर थे। उन्होन मागन पर किसी का भी खाली नही लौटाया। राष्ट्र पर जब घनघोर विपदा के बादल छा गये। स्वाभिमान का दुग ढहने लगा ता उसे सुदृढ करने हेतु उसकी नीवा को रक्त से सिंचित कर दिया।

सामधरम रा सेहरा जैतो कूपो जोड़।
अवर पीडा अवधारणा, रण वका राठौड़ ॥

रण में बांकुरे राठौड द्वय जताजी और कूपाजी ने सदैव अपने गर्वोन्नत प्रशस्त मस्तक पर समता का मुकुट धारण किया। वे अपने लिए नही जीते थे बहुजनहिताय उन्होंने प्राण समर्पित कर दिये।

(१६८)

गढ गया गढपत गया, राज करण री रीत।
जन कठा मे गूंजिया, गौरव हदा गीत ॥

काल के प्रबल प्रवाह में न जाने कितने दुर्भेद्य दुर्ग ढह गये, उनके स्वामी चक्रवर्ती सम्राट विस्मृति के गर्त मे खो गये किन्तु कालजयी जैताजी और कूपाजी के गौरव गान आज भी जन जन के कण्ठों से मुखरित होते हैं।

मग निरखा महराजवत, अब लीजो अवतार।
जैता जूझण आवजो, पेखण धर रो प्यार॥

हे महराज के राष्ट्रभक्त सुपुत्र कूपाजी ! हम आपके पधारने हेतु सतत पथ को निहारते है। हे महावीर जैताजी अपनी जन्मभूमि की प्रीति निभाने आप फिर जुझार बन कर आइये क्योंकि राष्ट्र संकटों से अभिशप्त है।

(२००)

बिन माथ खग बाहता, मरुधरिया सिरमोड।
जैतो कूपो जूझिया रण बंका राठौड॥

रण बाँकुरे राठौडो के सिरमौर जैताजी और कूपाजी ने गिररी के प्रचण्ड समर में शीश कट जाने पर भी भीषण युद्ध किया। वे अमर जुझार के रूप में मरुधरा के मुकुट बन गये।

(२०१)

सेरसाह सूरी सुणो, भाग सके तो भाग।
कमधज कूपा जैत रो, श्रतस मरुधर श्राग ॥

कमधज शिरोमणि जैताजी श्रौर कूपाजी के हृदय मे मरुधरा को मुक्त करने हतु शौय की प्रचण्ड दहकती श्राग का देख कर शेरशाह सूरी के सैनिको ने कहा—सुनिये शहँशाह श्राप भाग सकते ह तो शीघ्र पलायन कीजिय क्याकि सम्मुख साक्षात महाकाल है।

(२०२)

जस रह जासी जगत मे, गासी जन मन गीत।
मही राखण मिनखा धरम, जत गयो जग जीत ॥

श्रपनी जन्मभूमि की स्वाधीनता को श्रक्षुण्ण रखने श्रौर मानव धम की रक्षा हेतु वीरवर जताजी ने वीरगति प्राप्त कर विजयश्री का वरण किया। ऐसे शौय मातण्डो के यशोगान श्रमर रहते ह जिन्ह युग युगान्तरो तक जनमन प्राथना के समान गाता है।

(२०३)

हरवल दोन्यू हालिया, जैतो कूंपो जोड़ ।
अस जस हँसै आपरो, रण बंका राठौड़ ।।

महापराक्रमी जैताजी और कूंपाजी ने अग्रिम मोर्चा सभाला। इन युगल वीरों के महायुद्ध और विलक्षण शौर्य से रण बांकुरे राठौड़ों के यशोगान की परम्परा प्रशस्त रही।

(२०४)

मरुधरिया महराजवत, तो जरणी बलिहार ।
अधपत धारी ओढ़णी, त झाली तरवार ।।

मरुधर गौरव महाराज के यशस्वी सुपुत्र कूंपाजी आपकी जननी धन्य हो गई क्योंकि जो अधिपति राव मालदेव थे उन्होंने तो स्त्रियों की भांति चूंदड़ी धारण करली मगर आपने तलवार थाम कर राष्ट्र का स्वाभिमान रखा।

(२०५)

जैत कूप रा जीव मे, क्रोडा गाडा फोड ।
ध्यावा थारी धावना, रण बका राठौड ।।

गिररी के प्रचण्ड युद्ध मे जैता और कूपा के हृदय मे शौय का सागर तरगित होने लगा, आज भी रण बाकुरे राठौड और मरुधरवासी आपके शौय स्वरूप के अपने मानस म श्रद्धा से धारण करते है ।

(२०६)

धर अमर या मरुधरा, जीया जितँह जतन ।
जेत कूप मिळ ने किया, वालो जाण वतन ।।

महा पराक्रमी जता और कूपा ने जब तक जीवित रहे अपने शौय, स्वामिभक्ति स्वाभिमान, दान और धम से मरुधरा को अमर रखा क्याकि आपको सत्ता और स्वग से अपनी ज म भूमि अधिक प्रिय लगती थी ।

(२०७)

महादानी ज्ञानी गजब, बलिदानी बड भाग* ।
रगत चिता धधकी रणा, अरि मुख पडिया झाग ॥

शौय के शक्तिपु ज, पराक्रम के परम प्रतीक जताजी और कू पाजी राष्ट्रभक्त स्वाभिमानी और विलक्षण याद्धा के ज्ञान के सरोवर तथा दान म शिरोमणि थे। गिररी के प्रचण्ड सग्राम मे उन्होने खौलते हुए रक्त का सलाब इस तरह प्रवाहित किया, जमे चिताओ की लाल ज्वालाए लपक रही हो। उनके पावन बलिदानी वीरता से शत्रु सैनिका के मुख से झाग उफनने लगे।

(२०८)

इमरत मय समाज रा, सूरा सिरजणहार ।
आप भुजा अमापियो, सुख जीवण ससार ॥

मरुधरा के कुल गौरव जताजी और कू पाजी ने केवल युद्धो द्वारा शत्रुओ का महार ही नही किया बल्कि राज्य विस्तार के साथ अगणित अमृतमय लोक कल्याण के काय किय। ससार के सभी सुख उनके यशस्वी तेजस्वी बाहुबल की कृतिया थी।

---

* हीरावाडी की प्रजा ने वीरवर जताजी का मुक्ति के सम्मान म एक लाख बीस हजार रुपिये (तत्कालीन सिक्के) समर्पित किये मगर उन्होने उस धनराशि से प्रजा के हित हेतु एक विशाल बावडी का निर्माण कराया। मालदेव का राज्यतिलक जताजी ने ही किया था। मारवाड के अभूतपूव राज्य विस्तार की याजना जताजी ने ही क्रियान्वित की।

(२०६)

भुरं जुतिया देस रं, जेतो कूपो जोर।
आराधन यारो करे, धरती मरुधर धोर॥

राष्ट्र के विजय रथ को सदैव अग्रगामी, गत्यात्मक और अखडित रखने के लिए जैताजी और कूपाजी जसे महाबली स्वय अपने जीवन को समर्पित कर उससे जुत गये। इसीलिये मरुधरा का हर धोरा (टीला) आपकी महायात्रा की आराधना करते नही अघाता।

(२१०)

धर पाडी रगता धरा, रखवाळी मरु भोम।
जैते कूपे जूझ ने, कीधी ऊजळ कौम॥

मरुभूमि जो सदैव प्यासी रहती है उसे उन दानो महावीरो ने शत्रुदल सैन्य के सतत रक्त प्रवाह से परितृप्त कर दिया। जैता और कूपा ने राजा मालदेव की निराशा के बावजूद जुझारु महायुद्ध से क्षात्र धर्म और राठौड कुल के गौरव को उज्ज्वल किया।

गाद मरधर देस राह, देस प्रेम रा देव।
सुमरण सघणो सूरमा, नज भज साया सेव॥

गान्ट्र के प्राय अलख ज्ना और गूपा मरुधरा के महानायक थे। उनके उदात्त आदर्शों वाले भारी व्यक्तित्व के कारण सामान्यतः उन पावन विभूतियों की देवतुल्य आराधना करता है। उनकी तेजस्वी लीलाओं की स्मृति गांव गांव घर घर दुनाय होती है।

आडा आया देस रै, लाग बिना लवलेस ।
इतिहासा रहसी अमर, केसरिया कमधेस ।।

निष्काम भावना से बिना किसी उपलब्धि के प्रलाभन से, निश्छलता पूवक निर्भिकता से जैता कूपा ने अपने प्राणा को देश पर न्यौछावर कर दिय । ऐसे महायोगी परमवीर कमधेश कुल गौरव का त्याग मरुधरा के इतिहास मे सदव अमर रहेगा ।

(२१४)

घावा छकिया सूरमा, देख देख अरि दग ।
जेता कूप जूझ अग, शेरशाह चितबग ।।

अगणित जरमा से बावजूद और अधिक पराक्रम से जुझारु होते देख शत्रु स य भी स्तम्भित रह गया । जैता और कूपा के अग प्रत्यग जसे जैसे कटते वे उतने ही वेग और विस्फोटित शौय से महा समर करते जिसे देख कर शेरशाह सूरी भय से चकित हो गया ।

(२१५)

माझी मरधर देस रा, श्ररि दल लियो श्ररोड ।
जग मे राखो जोवती, मूछा श्रर मरोड ।।

राठौडा के महानायक जताजी श्रौर कूपाजी मरुधरा के रक्षक सरक्षक श्रौर महान कर्णधार थे जिन्होने अपनी तीक्ष्ण विद्युत गति सी तलवारा से शत्रुदल को धरा ध्वस्त कर दिया। जब तक उनकी बलशाली तपोपूत देहो मे अन्तिम श्वास थी उन्होने मूछो की मरोड अर्थात राष्ट्र के स्वाभिमान को खण्डित नही होने दिया।

(२१६)

वजबजिया घर वाहरू, धारू धरम विसेस।
धजवजिया धन मरुधरा, दीपै जगमग देस ।।

मरुधरा की महान धरित्री की स्वाधीनता की रक्षा हेतु उन्होने क्षात्र धर्म की महान तेजस्विता धारण कर जुझारु युद्ध किया। उनके दुर्धर्ष सग्राम और श्रद्भुत रणकौशल से देश कृतार्थ हो गया। श्राज भी उनकी श्रोजस्वी तेजस्विता से हमारा राष्ट्र श्रालोकित है।

(२१७)

मिनखापरा राखरा मही, जामै इरा धर जाम।
जेतो कूपो जोरवर, कमधज श्राया काम॥

इस विराट धरित्री की यह प्रशस्त परम्परा रही है कि यहा की जननियाँ ऐसे सिंह पुरुषो को जन्म देती है जो अपने पौरुष से मानवता की रक्षा करते है। अपराजेय जुझारू योद्धा जैताजी और कूपाजी ने राठौड जननियो की कोख को गौरवान्वित करने महायुद्ध मे अपने प्राणो की बलि दे दी।

(२१८)

पोळै उठ परभात रा, नर रतना रा नाम।
हलरासी नित हेत सू, जाया श्रागम जाम॥

प्रात रवि की स्वर्णिम किरणें जब हमारे भवनो पर स्वर्णिम धूप के आलेख चित्रित करती है तो उनमे जैता कूपा जैसे महावीरो के नाम अकित हो जाते है। भविष्य मे वीर प्रसू जननिया अपने कुल-दीपको को जैता कूपा के यशोगानो से हलराती दुलराती उन्हे वीरत्व से सस्कारित करती दुलारती है।

(२१६)

करतब मग पर पग पडै, लड पर हित लोग ।
पूजण धरती प्रेम सू, जेतो कूपो जोग ।।

शौय के साक्षात चरम कीर्तिमान जता और कूपा बधु युगल ने क्षात्र धम की इस परम्परा को चरिताथ किया कि सदव सवजन हिताय सघष करना केवल अपनी क्षुद्र सत्ता प्राप्ति के लिए नही। हमारे चरण सदव कतव्य पथ पर अग्रसर रहे विध्वस के लिए नही। हम सदव अपनी मातृभूमि को व दनीय माने।

(२२०)

अपरिग्रह अवधारणा, काछ दढा कमधेस ।
जेत कूप भल जामिया, दरद मिटावण देस ।।

मरुधरा के कमधेश शिरोमणि जताजी और कूपाजी न अपने राष्ट्र को यातनाओ, विपदाओ और घोर सकटो से उन्मुक्त करने हेतु ही जन्म लिया था जो सदव अपरिग्रही रहे, उन्होने अपने सुख हेतु कुछ भी सचित नही किया। क्षात्रधम के चरित्र के तो विराट दृष्टात थे।

सरवर तरवर मरधरा, गिरवर गौरव गाज ।
जेता कूपा सिर चवर, अरवद ढोळै आज ॥

वीर प्रसू मरुधरा के सरोवरा म जता और कू पा जैसे राष्ट्रभक्ता की यश उर्मियां लहराती है। वृक्षा की शाखाएँ उनके गौरव गान गाती ह। विशाल अर्बुदाचल पर आच्छादित मेघ मालाएँ जैसे इन महावीरा पर चवर दुलाती ह और उनकी गजना म इन सिंहपुरषो की जय जयकार घोषित होती है।

(२२२)

मरुधर कजा मेटवा, टणका राखण टेक ।
जेता कूपा जूझ रो, श्रो उदाहरण श्रेक ॥

महायोद्धा जता और कू पा न अपनी महान गौरवमयी मरुधरा के सकट को विनष्ट करने तथा क्षात्रधम की मर्यादा को अटल रखने हेतु अद्वितीय अपूव विलक्षण जुभारूपन का दृष्टा त प्रस्तुत किया जो आज भी देशभक्ता को प्रेरित करता है।

(२२३)

महाभारत सो मडियो, गिररी समर सुमेल।
रजपूती राखण इला, रगत दीयो उडेल ॥

सुमेल और गिररी के रण क्षेत्र मे शेरशाह सूरी की विशाल वाहिनी से दुधष समर कर भारत के इतिहास मे दूसरा महाभारत रच दिया। अपनी वन्दनीया जन्मभूमि और जीवन के आधार क्षात्र धम की रक्षा हेतु उन्होने जैसे अपनी पराक्रमी बाहुओ से रक्त को उलीच दिया, प्रवाहित कर दिया।

(२२४)

सकर हेरयो सीस ने, गुरजण हेरया गुद्ध।
बिन माथै लडिया समर, जीत गयाह जस जुद्ध ॥

सुमेल गिररी के महासमर मे राठौड वीरो ने अपने मस्तक कट जाने पर भी ऐसा अभूतपूव युद्ध किया कि लाशा के अम्बार म से शकर भगवान अपने कण्ठ म शोभित मुण्डमाल मे सुमेर हेतु जता और कू पा के गर्वोन्नत पुनीत मस्तक खोजने लग और गगन मे मडराते गिद्ध शत्रु की लाशो को तलाशने लगे। जता और कू पा ने तो विना शीश के युद्ध कर विजय श्री का वरण किया और मरुधरा को चिर यशस्वी बना दिया।



राठोड पचायण जी कर्मसिहोत, खींवसर

(२२५)

मरवा नू मगळ गिणे, मरुधर गौरव मोत।
रूडो रजवट री तडो, जीव गया तो जीत ॥

मरुधरा के रणबाकुरे क्षत्रिय अपनी जन्मभूमि के प्रति सदैव गौरवान्वित रहते हैं। वे राष्ट्र की रक्षा के लिए मृत्यु को मगलमय मानते हैं। क्षात्र धम की ऐसी प्रख्यात मर्यादा है कि वे युद्धभूमि से सदैव विजिता बन कर ही लौटते है अ यथा अपने प्राण न्योछावर कर दते हैं।

(२२६)

दोळा आवं देस रं, अरि दल रा टोळाह।
बागड ज्यू बैठ्यो रहे, अनमी ले ओळाह ॥

जब आततायी अनाचारी शत्रु सैन्य दल हमारी जन्मभूमि पर प्रचण्ड पाशविक आक्रमण करता है तो राष्ट्रभक्त केसरिया धारण कर सवस्व समपण हेतु उत्सुक आतुर रहते है किन्तु जो कायर होते है कई तरह के बहाना का आश्रय लेकर पलायन कर जाते ह।

(२२७)

जायो नाहक जीवडो, भड धरती पर भार।
मैणी लागै माईता, सह लाज ससार।।

जिस कुल मे कायर ज्न्म लेते ह वे अपने माता पिता और पूव-जनो हेतु कलक बन जाते है उस कुल को धिक्कारा जाता है। ऐसे कापुरषो का ज म लेना ही निरथक है, वे इस पृथ्वी पर भार स्वरूप जीते है उनके कारण यह ससार लज्जित रहता है।

(२२८)

कल्याणी सत करम री, वाणी इमरत वेल।
जग रा भूखा जाम ने झोल्या माय झेल।।

वीर प्रसू जननियाँ जो साक्षात ज मभूमि की प्रतीक ह, व अपन ऐसे जुझारु बलिदानी सुपुत्रा को अपनी झाली अथात गोद म झल कर या धारण कर मुदित होती है। एसी मातृशक्तिया साक्षात सात्विक कर्म की कल्याणी महादेविया होती है जिनकी लोरिया अमृत वेल सी होती है।

(२२६)

की माडो हथ माडणा, जग नह थिरचक जाण।
मडिया दीसै दोय हथ, मेहदी और मसाण॥

वीर क्षत्राणिया अपने तेजस्वी योद्धा पतियो के सौभाग्य का स्तुति गान करते हुए परस्पर सवाद करती है—हे सखि ! हम क्या हाथा मे यह मेहदी रचाये जो स्थूल और अस्थायी है। वीर पुरुषो के हाथो मे और उनकी रमणिया के पावन दोनो करो मे तो स्थायी रूप से त्याग की मेहदी रची रहती है। दूसरे हाथ मे श्मशान अर्थात समर भूमि की रक्त रजित रगोलिया चित्रित रहती है।

(२३०)

जूझारा धर जानणी, सता देस सवाय।
गुरु पद भारत देस रो, या छता नह जाय॥

जब तक इस देव भूमि महान भारत वर्ष मे महावीरा को जन्म देने वाली शक्ति स्वरूपा जननिया है। शौर्य पुत्रो के साथ जहा मानवता के साधक सन्त जन्म लेते है या सन्तो के समान सवाये निष्काम कर्म योगी योद्धा अवतरित होते है तब तक यह तपोपूत तीर्थराज राष्ट्र विश्व मे जगदगुरु के गौरव से विभूषित रहेगा।

श्रे धुरपट श्रैं घ्रागडा, भारत मन न भाय।
श्रारत कूपा श्रोळखो जेता फेरू जाय ॥

राष्ट्र पर जब विपदा के मेघ श्राच्छादित हो गये, स्वाधीनता श्रौर स्वाभिमान को चुनौती देने वाले नगाडे बजने लगे तो भारत भूमि के महावीरा जता श्रौर कूपा ने देश की विपत्ति को श्रनुभूत कर जिस तरह विलक्षण रूप से श्रात्म बलिदान दिया ऐसा श्रविस्मरणीय गौरवपूण ग्रध्याय भारत के इतिहास म फिर कब लिखा जायेगा।

(२३२)

पचायण* पुन री प्रभल, रग रग जेत रमत।
कीरत थारी कमधजा, दमके दिग दिगत ॥

पचायण पुण्यशाली महापुरुष थे जिनकी सात्विकता की सौरभ जैताजी की रग रग मे रची थी। हे कमध्वज श्रेष्ठा श्रापकी कीर्ति दिगदिगन्ता तक सदैव दीपित रहेगी।

---

* जता के पिता श्री पचायण जा प्रखर योद्धा श्रादशवादी त्यागी तपस्वी थे। उन्हाने ही मरुधरा के राठौड शासन को सरक्षित रखा।

(२३३)

दोखी देख्यो देस ने, था तज दीधा प्राण ।
हमकारा तोने हमे, पाछल प्रीत पिछाण ।।

हे महाबलिदानी अनन्य राष्ट्र भक्त क्षत्रिय कुल श्रेष्ठ वीरवर जैताजी और कूपाजी ! आपने जब अपनी जन्मभूमि के अस्तित्व को सकट मे देखा तो आपने अपने प्राण समर्पित कर दिये । आज फिर हमारा राष्ट्र सकट पीडित है इसलिए हम आपके शुभागमन हेतु विगत प्रीति देशभक्ति की दुहाई देकर आपको पुकार रहे है ।

(२३४)

इकर सू फिर आवजो, नूतै भारत देस ।
किम इतरी वेळा करो, केसरिया कमधेस ।।

हे कमधेश शिरोमणियो वीर श्रेष्ठो ! केसरिया धारण कर मातृभूमि पर न्यौछावर होने वाले परमवीरो, सम्पूर्ण भारत आपको आमन्त्रित कर रहा है । एक बार फिर आप क्षात्र धर्म की मर्यादा हेतु पधारिये । आप विलम्ब क्यो कर रहे है ?

(२३६)

श्रोभ समद उफरणे हियै, बडका बिडद बखाण ।
हेरे कीरत हेत कर, छत्र धर राज चहुश्राण* ।।

हे चौहान छत्रपति अखराजजी ! शौर्य की कीर्ति और पराक्रम का यश तो छाया की तरह अभिन्न रूप से आप मे जुडा है। आपकी बिरुदावली यशोगाथा विराटता और महानता की प्रतीक है। आपके हृदय मे सदव ओज का पारावार उमडता रहा ।

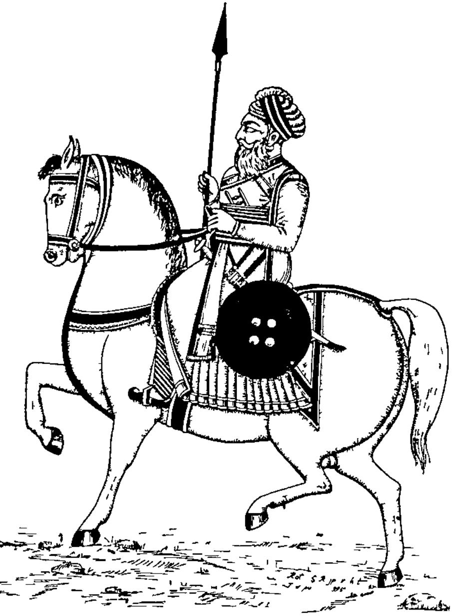
(२४०)

पत श्ररिया रा पाडणा, कुळ री राखण काण ।
पत पाळी श्रख श्रापरो, चावो जग चहुश्राण ।।

चौहान कुल गौरव अखैराज के लिए यह विख्यात था कि व अपने प्रण पालन के लिए सदव उल्लासपूवक कटिबद्ध रहते। कुल की मर्यादा पालन उनका प्रमुख धम और प्रचण्ड स प्रचण्ड विकराल शत्रु का मान मदन उनका कतव्य रहा।

---

* अखैराजजी भारत विख्यात चोहान कुल के यशस्वी वशधर थ ।



अखराज जी सोनगरा रणधीरोत, पाली

(२४१)

अखो गप्रबळ आतमा, धीर सुतन रणधोर ।
प्रेम प्रदोप पाली पती, निरमळ गगा नीर ॥

पान्नी नगर के अधिपति सोनगरा शोय शिरोमणि अखैराज जितन धयवान, सयमी विनम्र सौम्य और दानवीर थे, उतने हो अपार वल से ऊजस्वित महायोद्धा थे ।

(२४२)

पीळा चावळ पेख ने, रटक बजाडी रोठ ।
धर अवतारी धीर रा, कीरत मथा किरीट ॥

[illegible] ीर श्रेष्ठ अखराजजी को महासमर के पोले चावल (आमत्रण) मिलते ही वे क्षात्र धम की मर्यादा हेतु शत्रु दल मे लौह दोवार और अपनी सेना मे रीढ बन कर तन जाते। धरित्री मे ऐसे अवतारी महानायक कम हुए है, जो धैय के सागर हो और मस्तक पर शौय का अपराजेय मुकुट धारण करते हो ।

(२४३)

सावळ आयो शेरशाह, धर मरुधर धूजाण।
प्रळ घटा छाया प्रकट, सिर उणरै चहुआण।।

भारत की बादशाहत के घमण्ड मे शेरशाह सूरी अपने विध्वसक आग्नेय अस्त्रो और विकराल सेना को लेकर मरुधरा का प्रकपित करने की आकाक्षा से आया कि‍न्तु चौहान कुल श्रेष्ठ अखराजजी उसकी सेना पर प्रलय मघा की भाति आच्छादित हो गये विद्युत से कडक कर प्रहार करने लगे।

(२४४)

खागा बळ खेटा किया, पेटा रगता पूर।
आखेटा अखेराज रा, शेरशाह रा सूर।।

महायोद्धा स्वामिभक्ति और वीरता के अवतार अखराज सोनगरा के लिए शेरशाह सूरी की सेना का महा अरण्य जस प्रिय शिकारगाह हो। उन्होन अपनी तीक्ष्ण तलवार से जम कर आखेट (शिकार) किए। असिधार को शत्रु रक्त प्रवाह से परितृप्त कर दिया।

सुळियो सपनो साह रो, तळियो दिल्ली ताज ।
चळियो नह गिरी वेढ सू, अनड भड अखेराज ॥

मरुधरा को विजित करने का शेरशाह सूरी का स्वप्न खण्डित यातना मे बदल गया । दिल्ली के सुलतान का ताज कांपने लगा । अद्वितीय अपराजेय महाभट्ट अखैराज ने शेरशाह को विचलित कर भगा दिया किन्तु स्वय गिररी के महा समर से नही लौटे, वीर गति को प्राप्त हो गये ।

(२८६)

रण सदेसो राइकै, जिण पुळ दीधो जार ।
पट केसरिया पहरिया, सोनगरै सिरदार ॥

एक राइके ने जैसे ही महाबली शौय मातण्ड सोनगरा शिरोमणि को युद्ध का सन्देश दिया तो उसी क्षण उन्होने अस्त्र-शस्त्रो से सैन्य शृगार कर केसरिया धारण कर लिया ।

(२४७)

मुगतो मारग मानियो, मरणो समर मजार।
हथकड बगस्या हेम रा, सोनगरै सिरदार॥

युद्ध के स देश को मुक्ति महा निवाण का पुनीत आह्वान मान कर उन्होंने स देशवाहक का ऐसे शुभ समाचार हेतु सोने के कडे भेंटकर तत्काल महा समर के मध्य मरण के वरण का सकल्प कर लिया।

(२४८)

कारज अपणै कारणे, लडिया भारत लाख।
भडियो अख भाराथ मे, रजवट राखण साख॥

इस भारत भूमि के सहस्राब्दियो के इतिहास मे अगणित महायुद्धो म असख्य सुभट्टो न अपनी सत्ता शासन या राज्य हेतु प्रचण्ड युद्ध किये मगर सोनगरा अखराज न तो क्षात्र धम क गौरव हेतु निष्काम भावना से महासमर किया।

(२४६)

गहडवर ग्रबर वियो, उडियो रगत ग्रबीर।
उतरी गिररी ग्रपसरा सुरग रगवा चीर ॥

सुमेल गिररी के महासमर म अम्बर धूलि-कणो से नही रक्त की फुहारो से जैसे मेघाच्छादित हा गया हो। दिग दिग त तक उफनते रक्त से ऐसा लगता था जैसे ग्रबीर गुलाल कु कुम केसर का चक्रवात ग्रा गया हो। ऐसे विलक्षण दृश्य को देख कर भाव विभोर हो स्वग की ग्रप्सराएँ ग्रपने परिधाना को रक्ताभ रगने हेतु ग्रवतरित होने लगी।

(२५०)

समर मरण तो सुरग है, जैता कूपा जाण।
ग्रायो साथै ग्रापरै छत्रधर राज चहुग्राण ॥

जैता ग्रौर कूपा हेतु युद्ध मे मरण का वरण करना जैसे स्वर्गारोहण जसा पुण्य पव था। ऐसे ग्रविस्मरणीय सौभाग्य के क्षण मे छत्रधारी क्षत्रियत्व के दिव्य स्वरूप ग्रखैराज सोनगरा भी महा-प्रयाण हेतु पधार गये।

(२५१)

अरि लोथा कर दी अखे, अनमी समर अबार ।
होळी रगता हेत सू, जबर रमी जूझार ।।

शौय के मातण्ड महातेजस्वी परम सुभट्ट अखैराज सोनगरा ने युद्ध स्थल मे आततायी शत्रुओ के शरीर के लोथडो का अम्बार लगा दिया । उन्होने उल्लासपूवक ऐसा जुभारु युद्ध कर अविरल रक्त प्रवाह किया जैसे कोई रसिक अगाध स्नेह से लाल रग से होली खेल रहा हो ।

(२५२)

पत पाली वाळो तनै, कुळ रो कुरब महान ।
या समझ अखैराज तो, चढ आयो चहुआन ।।

अपने कुल की गरिमा मण्डित मर्यादा को अक्षुण्ण रखना है अपने स्वामी के स्वाभिमान को गर्वोन्नत करना है क्षात्र धम की आन को प्राणो की अतिम श्वास तक निभाना है। ऐसा सकल्प कर सोनगरा अखैराज महावेगवान झझावात सा युद्ध मे आच्छादित हो गया ।

समर मरण चहुआण रो, अजर अमर अभिमान ।
अखियाता अखैराज री, जलम भोम री जान ।।

रण भूमि मे पराक्रम का विलक्षण प्रदर्शन करते हुए चौहान अखैराज स्वय तो अमर हुए ही साथ ही राष्ट्र के स्वाभिमान का अक्षुण्ण रखा । महायोद्धा अखराज की वीर गाथा आज भी राष्ट्र को अनुप्राणित करती है ।

(२५४)

शेरशाह सजदा करी, पौरस लख पतसाह ।
ओळख ने अखेराज री, रजवट हदी राह ।।

वीरता के साक्षात अवतार चौहान अखैराज के प्रचण्ड क्षात्र धर्म के तेज को देख कर, सोनगरा के अपूर्व पौरुष के प्रभा मण्डल स चकित होकर शेरशाह सूरी ने अपने कुशल क्षेम प्राण रक्षा के अलावा दिल्ली के तख्त को बचाने के लिए युद्ध को विस्मृत कर प्रार्थना (इबादत) प्रारम्भ कर दी ।

(२५५)

पालीपत पत राखियो, मुळकै देस मठोठ।
अखियाता अखेराज री, हरदम उच्चरै होट॥

पाली के अधीश्वर ने अपने प्राण न्यौछावर कर अपने वंश को आत्म बलिदानी परम्परा को अक्षय रखा। उनके उस महात्याग से सम्पूर्ण देश स्वाभिमान से हर्षित है। चौहान वीर अखराजजी के वीरता के आख्यान आज राष्ट्र के जन जन के अधरो पर मुखरित है।

(२५६)

लगर कुळ री लाज रा, खनवट हवौ खाण।
कूपै कागद मेलियो, समर चढ चहुआण॥

महासमर के उफनते पारावार में अखैराज सोनगरा ने अपने कुल के गौरव पात को विचलित होने की अपेक्षा अपनी मर्यादा और मान की लगर से बाध रखा। जब वीरवर कूपाजी ने अखराजजी को युद्ध सन्देश का पत्र भेजा तो चौहान कुल भूषण ने महाप्रयाण कर क्षात्र धर्म को उजागर किया।

(२५७)

मालदेव री मरुधरा, अरि खोसे इण दाण ।
पेख परीक्षा प्रेम री, समर चढ चहुआण ।।

अखराज चौहान जो मालदेव के समधी और हितैषी मित्र थे, उनकी राज्य सत्ता पर शेरशाह सूरी जैसे शत्रु से आक्रान्त होने के समाचार मात्र से अपने मरुधरा और मालदेव के प्रति अनन्य प्रेम की परीक्षा देने चौहान वीर ने युद्ध हेतु अभियान किया ।

(२५८)

कूपा री सुणने कळप, अख कही उण दाण ।
जेतो कूपो जागता सत साथै चहुआण ।।

राव कूपाजी की पुकार सुनते ही वीर शिरोमणि चौहान कुल दीपक अखराज ने सन्देश भेजा—हे परम पराक्रमिया जैताजी और कूपाजी, आप युद्ध के लिए संकल्पबद्ध रहिये, चौहान भी सद्‌मार्ग का वरण करेगा । आप अकेले नहीं हो ।

मरणो तो सब ने मुदं, धन मरणो समराण ।
अखै खनायो ऊथळो, सूरवीर चहुआण ।।

शौय के चरम तेजस्वी रूप अखराज चौहान ने निश्चय किया कि मृत्यु तो अटल है। जो ज म लेता है उसकी मत्यु निश्चित है कि तु जो वीरता से मातभूमि के लिए महासमर मे मरण का वरण करते हैं व ध य है सौभाग्यशाली ह।

(२६०)

रण मरण तैयारिया, हसी उमगा माय।
म्हारी मावड मरुधरा, जीता जीता कदे न जाय ।।

मरण पव का शुभ अवसर देख कर चौहान वश गौरव महायाद्धा अखराज का हृदय आन द विभार हा गया। व प्राणा के उत्सग की भावना से ऊजस्वित हो गये। उ होने सक ल्प किया कि ह मरी मह्ान जननी मरुधरा गिररी के इस महाभारत म अत्र हम जीवित नहीं लौटेंगे। प्राणोत्सग से आपकी आराधना करेंगे।

मुजरो जेते मेलियो, कूप चढ केकाण।
अबखी पुळ मे आवजो, समर मरण चहुआण।।

महायोद्धा मरुधरा के अमर सपूत कूपाजी ने पराक्रम की पराकाष्ठा के प्रतिमान अखराज चौहान के पास द्रुत वेग के तुरग के द्वारा अभिवादन प्रेषित किया कि महासकट वेला मे मरुधरा की रक्षार्थ आप प्राणोत्सर्ग के लिए पधारिये।

(२६२)

धरपत ढोळै बैठियो, मालदेव महाराज।
पग पाछा रण फेरिया, या अबखी अखेराज।।

हमारे पृथ्वीनाथ महाराज मालदेव तो रण भूमि से पलायन कर सुख शया पर विराजमान हो गये है। हे महाबली अखराजजी ! यह कैसी विडम्बना है कि मरुधरा नरेश राठौडा की मर्यादा के विरुद्ध युद्ध से पलायन कर लौट गये है।

(२६३)

पडूतर पायो प्रेम सूं, जेता कूंपा जोड ।
अखेराज झट आवसी, रहो नडर राठौड ॥

राठौड के गौरव पुरुषा महावीर जताजी और कूंपाजी को रण म रमने वाल शौय शिखर अखराज न तत्काल प्रत्युत्तर प्रषित किया कि आप निर्भीकता अभियान कीजिय । अखराज ने महायात्रा का निश्चय कर लिया है ।

(२६४)

देसा मुख अरण दुसमरणा, आप भुजा आपारण ।
कहो जिका ही करी समर मर चहुआरण ॥

शक्ति के ज्वालामुखी प्रखर योद्धा अखराज न सन्देश भेजा शत्रु चाह कितना ही विकराल महाकाय और सख्या म अधिक हो हम अपने बाहुबल स उस घास चबवा कर छोडेंग । चौहाण वीर न समर म प्राणोत्सग कर अपन कथन को वास्तव म क्रियान्वित कर दिया ।

(२६५)

धन अे जाया मरुधरा, भाया भारत देस ।
याद करै अखेराज ने, आबू अर अचलेस ।।

हे मरुधरा तुम धन्य हो, क्योंकि तुम्हारे आंगन में अखेराज जैसे प्रबल पराक्रमी महान सकल्पसिद्ध योद्धा और राष्ट्र भक्त जन्मे हैं जो सम्पूर्ण भारत के अभीष्ट बन गये हैं। आज भी अम्बर को भेदता अर्बुदाचल (आबू) और प्रलयकारी शंकर अखैराज के प्राणोत्सर्ग अनुष्ठान का स्मरण करते हैं।

(२६६)

बाढाळो बाहो जठै हुई सत्रुवा हाण ।
पुनित परवाडा राज रा, छत्र धर राज चहुआण ।।

छत्रधारी शौर्य के शक्तिपुंज अखैराज चौहान के पावन आख्यान आज भी जन-जन में प्रेरणा के प्रार्थना गीत से अभिनन्दित है, क्योंकि जब कभी अखैराज ने अपने विशाल बाहुओं में तलवार धारण की तो शत्रुदल को तो क्षत विक्षत होना ही पड़ा।

मतवाली मन कामना, रूपाळी मरु रेत ।
रखवाळी सदभावना, रजपूती रण खेत ।।

युद्ध स्थल में वीरगति प्राप्त करने पर क्षत्रियत्व गरिमाशाली हो जाता है, जन-जन मे सद्‌भावना का संचार होता है। इस मरुधरा की प्यासी बालू भी लावण्यमयी और समृद्ध बन जाती है। प्रत्येक जन की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

(२७२)

गिररी समर गंगोतरी, सह भड जूझया साथ ।
मानीता महराजवत, महो झुकायं माथ ।।

गिररी का महाभारत सा महासमर हमारे पुण्य की गंगोत्री सा पावन बन गया जिसमें हजारों वीरों ने एक साथ जुझारू बन कर शौर्य की सुर सरिता प्रवाहित कर दी। महराज के सुपुत्र कूंपाजी तो अमर हो गये जिनके समक्ष श्रद्धानत सम्पूर्ण विश्व शीश झुकाता है।



राव खींवकरण जी उदावत, जतारण

इळ उदावत अडर अमर, खेमकरण* खत्रवाट ।
रेतो मरुधर राखली, जस री खेती लाट ॥

क्षात्रधर्म के तेजस्वी स्तम्भ खीवकरण उदावत ने निर्भीकता से महा समर व्यूह रचना कर मरुधरा को निहाल कर दिया। प्यासी धरती लहू से तृप्त हो गई। जिस पर उनके शौर्य की फसलें उगी। एस वीरा के कारण ही मरुधरा वीर प्रसविनी के गौरव से विख्यात है।

(२७४)

उदावत बको अनड, कटियो रण रै दीह ।
खेमे घोडो खेडियो, साह निसास भरीह ॥

उदावत प्रबल पराक्रमी, हठीले, बाके महायोद्धा थे। उन्होने जब अश्व पर आरूढ होकर शत्रु सेना को काट काट कर धराशायी करना प्रारम्भ किया तो शेरशाह सूरी भी भयभीत होकर उच्छवासें लेने लगा। अरिदल शिविरो मे निराशा व्याप्त हो गई।

---

* राठौड खीवकरण उदावत रायपुर वाला के पूवज थे।

झटका झीकाझीक कर, खेमकरण री खाग।
मरणो तेवड़ मरधरा, श्रनड़ प्रजाळी श्राग ।।

राठौड़ वीर खीवकरण उदावत ने अपनी विशाल बाहुओं, तलवारों की पनी धार से शत्रुओं के शीश झटक झटक कर काटने धरती पर बिखराने लगे तो अन्य वीरों के हृदयों में भी शौर्य की ज्वालाएं प्रज्ज्वलित हो गईं। उदावत तो मातृभूमि हेतु प्राणोत्सर्ग के लिए आतुर थे।

(२७७)

रगता खाटी भोमका, खागा रगता खाळ।
गोविंद* कू पावत फबै, सिव गळ मू डा माळ॥

मध्याह्न काल के रवि से तेजस्वी गोविंद कू पावत ने ऐसा प्रखर समर किया कि पृथ्वी रक्तरंजित हो गई और तलवारों से शत्रुओं की खालें चिपक गई। वे युद्ध मे ऐसे प्रतीत होते जैसे साक्षात शकर मुण्डमाला धारण कर ताण्डव कर रहे हो।

(२७८)

भोजराज[1] सिर भागिया, अरिया रा उण दाण।
बीदो बलो[2] जू झियोह, सूर वीर समराण॥

पचायण के वश गौरव भाजराज ने उस दुधर्ष सघर्ष मे अरिदलो के अगणित शीश खण्डित कर दिये और प्रचण्ड वीर बीदा बला तो शौर्य के ज्वालामुखी बन कर अपराजेय जुझारु बन गये।

---

* राठौड गोविन्ददास कू पाजी के आठवें सुपुत्र थे।

1 भाजराज पचायण राठौड क वशधर थ।

2 बीदा बला राठौड मारमलात मोकलसर वाला के पूवज थे।

(२७९)

भड भाटी भाराथ मे, नर नींबा अणदोत[1]।
साथै कटियो समर मे गांगो बजरंगोत[2]॥

गिररी के महासमर मे सुभट्ट नींबा अणदोत के साथ सिंह पुरुष गांगा बजरंगोत घमासान सनत जुभार हो कर शत्रु सैन्य को खण्ड खण्ड कर देवलोक सिधार गये।

(२८०)

उदा जैतवत[3] आवरा भादा पचाणोत[4]।
इतिहासा दीपै अमर, हरदो लगारोत[5]॥

उदा जैतावत और पचाणोत और हरदा लगारोत ने ऐसे विलक्षण शौर्य का परिचय दिया कि उनकी अनुपम युद्ध शमी और आत्मोत्सर्ग की उमंग की कथा क्षात्र धर्म तथा भावना में इतिहास में अमर हो गई है।

---

[1] भाटी नींबा अणदोत सवैरा भाटी के पुत्र थे।
[2] गांगा बजरंगोत भी भाटी कुल दीपक थे।
[3] उदा जैतावत—राठौड़ उदयसिंह जैतावत
[4] भादा पचाणोत
[5] हरदा—हरदास लगारोत

जोगा जोगा राज रा, मूगा मरुधर मीत।
बालावत भड भारमल, गूजे गौरव गीत॥

वीरवर जागा[1] और पराक्रमी जागा[2] वीरता पूर्ण बलिदान से वे मरुधरा के गौरव गीतो की अमूल्य कडिया बन गये। भारमल बालावत के शौर्य मे व्याप्त ओजस्विता के गान आज भी हमे गौरवान्वित करते है।

(२८२)

सूर डूगरसी साखला, वींज अखेराजोत।
गिररी समर सूरमा, हरख अथग मन होत॥

मरुधरा के सुपुत्र डूगरसी साखला और वीजा अखैराजोत जैसे रणकुशल योद्धाओ ने गिररी के समरागण मे ऐसे शौर्य के नये आयाम स्थापित किये कि आज भी उनका स्मरण कर हमारा हृदय अपार हर्ष से उल्लसित हो जाता है।

---

[1] जोगा अखराजोत
[2] जोगा रावलोत

(२८३)

कीरत कल्याणदास रो, आलण उकमलोत ।
अचलावत मेला अजब, गौरव लीधो गोत ।।

उस महाभारत मे प्रचण्ड युद्ध मे महाबली कल्याणदास परम, सुभट्ट आलण उक्मलोत और समर्पित बलिदानी मेला अचलावत ने राष्ट्र-भूमि हेतु अपने प्राणो को न्योछावर कर अपने कुल गौत्र की कीर्ति को अमर कर दिया ।

(२८४)

दामावत धनराज रा, दमकै बिडद बखाण ।
सूर सोनगरा भाण रो, प्रगळै जस पाखाण ।।

गिररी के रणागण मे महायोद्धा धनराज दामावत ने शौर्य के दीप प्रज्वलित कर अपने वश की विरदावली को आलोकित कर दिया । महाभट्ट सोनगिरा भाण ने ता वीरत्व भाव को ऐसा साकार कर दिया कि आज भी प्रस्तरखण्ड भावातिरेक से पिघल कर उनके यश को प्रवाहित कर रहे है ।

(२८५)

दिक दिक चावो देवडा, बन्नावत अखेराज।
अरपण चरणा अजली, सूर समर सिरताज ।।

बन्नावत अखैराज देवडा ने तो अपने पराक्रम से दिग दिगन्त को शौय से प्रदीप्त कर दिया। जिनकी गौरव गाथा आज भी हमारे वक्षा को स्फीत कर देती है। ऐसे वीरा के शिरोमणि के महाबलिदान को बडे बडे महारथी भी श्रद्धा से भावाजलि समर्पित करते ह।

(२८६)

नव जुग घोडा धूसता, आव बाजे पौड।
वलण करै धर वाहरू, रण बका राठौड ।।

आज फिर रण-बाकुरे राठौडा के विद्युत गति से वेगवान अश्वा की टापो की आहट सुनाई देती है। जैसे कोई नवयुग के सिंहद्वार पर दस्तक दे रहा हो। अराजकता और अधम से उत्पीडित पृथ्वी की रक्षा करने जस वे फिर अवतरित हो रहे ह।

आभी पुळ मे आथडं, आवै पल पल याद ।
बीच भवर राभा पडं, माभी मरियो बाद ।।

जब कभी हम शत्रुओ से आक्रान्त और आततायियो से उत्पीडित हो जाते है तो ऐसे घोर विपदकाल म हमे प्रतिपल उन महावीरो का स्मरण 'होता है जिन्होने दुधप सघप की धारा म कूद कर राष्ट्र को उ मुक्त किया, वे मर कर भी अमर हो जाते है, चिरस्मरणीय रहते है ।

(२८८)

आगम री अगवाणिया, जाजम चरित जमाव ।
कीरत हदा कोट परा, जस मूरती जडाव ।।

उन अपराजेय महायोद्धाओ ने अपने उदात्त और विराट चरित की भाव भूमि पर हमारे राष्ट्र के भविष्य की आधार शिला रखी । अपनी अथाह कीर्तियो के प्राचीर निर्मित किये, जो साक्षात महातीथ बन गये । जिनमे उनके यश की दिव्य प्रतिमाए स्थापित ह । हम फिर उनका विनत होकर आह्वान करते है ।

(२८९)

जन मन हित हरोळ मे, हितकर कमधज हाल।
वजणो वीरा वगत पर, धर री वण ने ढाल ॥

क्षात्र धम के प्रतिपालक कमधज राठौड लोक कल्याण हेतु सदव युद्धा मे अग्रिम पक्ति मे न्योछावर होने के लिए आतुर रहे। जब कभी जन्मभूमि विकट विपदा से अभिशप्त होने लगे तो ऐसे अपराजेय योद्धा पाप के प्रहारा को झेलने हेतु पुण्य की ढाल बन गये।

(२९०)

कमधज कूपो कोहिनूर, सूर समर सिरमौर।
भळकै मरुधर भाल पर, अणहद आठा पौर ॥

कमधज कुल श्रेष्ठ के विराट बहु आयामी व्यक्तित्व की आभा कोहिनूर महारत्न जैसी है जो सदव मरुधरा के रक्षाथ युद्धो मे शिरोमणि रहे ह। मरुधरा के विशाल यशस्वी भाल पर कूपाजी अनुपम रत्न की भाति शाश्वत रूप से दीपित रहते ह।

(२६१)

जेता थू ज्योति कळस, चमक दमक समराण ।
पचायण रा पूत रा, निरमळ अमर निसाण ।।

वीरवर जताजी तो साक्षात शौय के ज्योति कलश थे । जिनका तेजस्वी प्रभा मण्डल रण भूमियो को आलोकित करता रहा । महान त्यागी पचायण के उस सुपुत्र की निष्काम, निश्छल, महान पराक्रमी उपलब्धियो के प्रतीक तो आज भी लोक मानस मे अमर है ।

(२६२)

गिररी गौरव राज रो, समर थारो सुमेल ।
विष भरिया सह विश्व मे, इमरत दियो उडेल ।।

गिररी क जागल्य उपेक्षित प्रदेश को आपने शेरशाह सूरी से महायुद्ध कर वीरो का तीथ बना दिया । सुमेल प्रयाग सा पावन हो गया । आततायियो ने अत्याचार के विष से इस जगत को लीलना चाहा । मगर आपने शकर की भाति गरलपान कर जीवन का अमृत प्रवाहित कर दिया ।

(२६३)

जगती रा जुलमो सितम, झट छाती पर झेल ।
सर जमीन या सीख दे, गौरव गिररि सुमेल ।।

इस धरित्री पर जो पाशविक अत्याचार और घोर अनैतिक आपराधिक पाप बढ रहा था उसे जता, कूंपा और उनके जुझारू सरदारा ने अपने वक्ष पर झेल कर मातृभूमि की पावन अस्मिता को अक्षुण्ण रखा। गिररी सुमेल महायुद्ध का भावी पीढी के वीरो को यही महा मानवीय सन्देश है।

(२६४)

जीवण क्रांति जाण नेह, जलम भोम जूझार ।
मरिया तो हित मरुधरा, पाणा खाणा खार ।।

राठौड पराक्रमियो ने जीवन को स्नेह की सद् क्रांति का यज्ञ माना और मृत्यु को मातृभूमि की रक्षाथ जुझार का गौरव प्रदान किया। ऐसे वीर सदैव ही स्वतन्त्रता के किरीट की रक्षा हेतु तलवारो के अगणित घावो से वीर गति को प्राप्त हुए।

(२६६)

झड जासी सह जगत री, राज रीत रसाण ।
पळटै भल सारो प्रथा, पिगळ पर्ड पाखाण ।।

इस परिवतनशील ससार मे जगत के सम्पूण वैभव नष्ट हो जाते हैं। सत्तायें बदलती है। सामाजिक रीति नीतियो मे क्रातिकारी परिवतन होते है। प्रलय आता है, जिसम पृथ्वी का स्वरूप बदल जाता है। चट्टानें पिघल जाती है।

(३००)

गौरव गीत गमेज रा, थिर कीरत रा ठाण ।
वाणी वासुदेव री, अजर अमर अहनाण* ।।

ऐसे आमूल चूल सतत परिवतनो के पश्चात भी वीरो के गौरव गान स्थिर रहते है। उनके कीर्ति प्रतीक स्थायी प्रेरक पुज बन जाते ह। कृष्ण की गीता का ज्ञान ही अजर अमर म त्र बन जाता है।

---

* राठोड वीरो ने निष्काम कम योग को ही चरिताथ किया तथा गिरी सुमेल युद्ध म शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का ही चरिताथ किया।

(३०१)

महाभारत मरुधर तणो, समर गिररी सुमेल ।
मरिया देसा मरुधरा, जूझ मरघा जबरेल ॥

गिररी सुमेल जैसे सामान्य ग्रामा मे जो अविस्यात रहे वहा राठौड वीरा ने शेरशाह सूरी की आग्नेयास्त्रो से मज्जित अतिविशाल सेना से प्रचण्ड युद्ध कर मरुधरा म दूसरा महाभारत घटित कर दिया। इस महासमर मे महायोद्धाओ ने मरुधरा की रक्षा हतु आत्म बलिदान किया ।

(३०२)

जेता कूपा जोरवर, अखेराज चहुआण ।
खेमे खत्रवट राखली, भारत उगते भाण ॥

प्रचण्ड पराक्रमी महावीर जता और कूपा शौय तप से प्रदीप्त अखैराज चौहान और परमवीर खीवकरण ने न केवल क्षात्र धम की रक्षा की बल्कि भारत उदित स्वातन्त्र्य सूय को अस्त नही होने दिया ।

(३०३)

मोहन कचन कामणी, खत्रवट खागा खेल।
केसरिया पागा कमद, वाणी इमरत वेल॥

परम तेजस्वी क्षत्रिय सदैव कचन कामिनी के मोहपाश मे बधे नही रहते। वे तो क्षात्र धम की मर्यादा हेतु तलवारा की क्रीडा मे तल्लीन रहते हे। वे राठौड वीर कमधेश तत्काल केसरिया धारण कर शौय की अमत लता को अनुप्राणित रखते है।

(३०४)

रण बका धन राठवड मरुधरिया धन मन।
गौरव रख जेता प्रथो, आप उजाळियो अन्न॥

रण म सदैव स्वाभिमान और मर्यादा मे बाके राठौड मरुधरा के जन धन की रक्षा कर ध य हो जाते है। जता ने तो अपने पराक्रम से ज मभूमि के गौरव को अक्षत अखण्ड रख कर अन्न का मूल्य क्या चुकाया उसे अमर आलोकित कर दिया।

(३०५)

इक मुट्ठी भर बाजरो, कीधो उरणरो कूत।
जेते कूंपे जूझ ने, सत्रुवा रा सिर सूत॥

जताजी और कूंपाजी ने जब विकराल शत्रु सेना का सहार प्रारम्भ किया तो अरिदल शीश धरती पर लुढकने लगे। भारत में अखण्ड साम्राज्य का स्वप्न देखने वाला शेरशाह सूरी मुट्ठी भर बाजरे मे अपने जीवन का अस्तित्व खोजने लगा।

(३०६)

जुग जुग थारी आरती, भारत भारती गाय।
आखरिया जस रा अमर, जुगां जुगां न जाय॥

शेरशाह जैसे दुस्साहसी और विकराल सैन्य के सेनापति का मान मर्दन करने वाले राठौड योद्धाओं के चमत्कारिक विलक्षण शौर्य के प्रार्थना गीत सम्पूर्ण राष्ट्र गाता है। उन आत्म बलिदानी महावीरो के यश के गीत युगो तक अमर रहेंगे।

---

* शेरशाह सूरी का यह इतिहास प्रसिद्ध कथन है— मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं दिल्ली की सल्तनत खो बैठता।

(३०७)

झूपड़िया हित जूझणा, निरमल वगसण नेह ।
दिल मे वसिया देवता, जगत रा जस लेह ॥

राठौड वीर सत्ता सुख भाग के लिए नही झोपड़िया म रहन वाले सामा य जन की रक्षा हतु शूझते थे । वे सदव राजदण्ड के कठोर शासन की अपक्षा प्रजा जन म निश्छल निमल स्नह की वर्षा करत । इसीलिए मरुधरावासिया के हृदय म वे महायोद्धा दिव्य दवताओ के रूप मे स्थापित है । सारा ससार उनके कीर्ति गान गाता है ।

(३०८)

समरसता री सुरसुरी, उस प्रगळै उर माय ।
कूपा कमधज राज री जस अमना न जाय ॥

कमधज कुल श्रेष्ठ कूपा के हृदय म ममता की म दाकिनी प्रवाहित रहती । इसीलिए आज भी मरुधरावासियो का अ तमन उनके यश स सुरभित है ।

(३०६)

अे खेजड अे बावळा, लाखीणा घर लोग।
गौरव गीत गमेज रा, फिर फिर गावै फोग* ॥

जना और कू पा जसे उदारचेता शौयपु जो ने केवल प्रजा की ही नहीं अपनी ज म भूमि के सम्पूण पर्यावेश को सरक्षित रखा। इसलिए खेजडिया, बावलिया यहा तक कि फोग के पल्लवा पर उनके पुण्य श्लोक अकित है।

(३१०)

जैतो प्रतीक जीत रो, दाटीक जीवण दौड।
मरजादा महराजवत, राखी मर राठौड ॥

महाप्रतापी महराज के पुत्र अपराजेय कू पा ने आत्म बलिदान कर राठौडो की मर्यादा का मान रखा। इसी तरह पचायण के सुपुत्र महावीर जता तो साक्षात विजय श्री के प्रतीक थे वे आजीवन ज म भूमि की रक्षाथ युद्धरत रहे।

---

* फोग—मरुस्थल की एक विशिष्ट वनस्पति

जोधारा या जुध लड, पग पग अरि पछाड ।
जरणी धर जगमग करी, धन धन धरती धाड ।।

गिररी के महायुद्ध म इन महावीरा न सतत दुधप युद्ध कर पग पग पर शत्रु सैय का धराशायी कर दिया। उनक जुझारू स्वरूप से मातृभूमि धय हो गई और सम्पूण धरिनी मे जय जयकार की ध्वनियाँ गु जारित हा गई।

(३१२)

सिर फसला या सूरमा, वावरण कीधो वेख ।
पाणत रगता प्रेम सू, देसडला इग देख ।।

राष्ट्र दवता ने भावविभोर होकर देखा कि इन तेजस्वी शौय-पुजो न मरुधरा की अनुवर भूमि म शीश बीजारोपित कर दिये है। यश और वीरता की फसल निरन्तर लहलहाती रह। इसलिए उन्होन उह रक्त से सिंचित कर दिया।

(३१३)

भड सूरी रा भागिया, गायडमला गमेज।
उदावत खेमा अडर, हिय मरुधर भर हेज॥

निर्भीक महायोद्धा खीवकरण उदावत ने प्रलय वेग से शेरशाह सूरी के योद्धाओ को मिट्टी के खिलौनो की तरह ध्वस्त करना प्रारम्भ किया। उसके हृदय मे केवल मरुधरा की भक्ति की शक्ति का प्रचण्ड आवेग था।

(३१४)

शेरशाह सूरी कही, धन मरुधर धन जाव।
इक मुट्ठी भर बाजरो, देतो तखत गमाव॥

राठौड वीरा के जुझार युद्ध से प्रकम्पित शेरशाह सूरी के मुख से अनायास मुखरित हो गया– ध य है मरुधरा के योद्धा, मैं इस अमर शौय धन को अर्जित नही कर सकता, बल्कि मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं दिल्ली का तख्त खो बैठता।'

(३२३)

भड आजादी भाव री, नेगड कर दी नीम।
सिर खवै रहता छता, छेकड नह दी सीम ॥

राठौड और उनके हितैषी मित्र योद्धा ने अनन्य निष्ठा समर्पित रण साधना और आत्म बलिदानो स स्वत त्रता की भावना की नींव को और अधिक सुदृढ बना दिया। जब तक उनके धड पर शीश थे और प्राणो मे अन्तिम स्पन्दन, देह म अन्तिम रक्त कण तथा वक्ष वक्षा म आखिरी श्वास थी तब तक उन्होंने मरुधरा की सीमा को आततायियो को स्पश नही करन दिया।

(३२४)

धजबड माझी धरम री, अखेराज मन आव।
प्रमला महक प्रेम री, गहरो फूल गुलाब ॥

पाशविक, क्रूर, कुटिल, बबर शत्रुओ की विशाल आग्नेयास्त्रो स सजी सना म अखैराज चौहान क्षात्र धम के स्तम्भ और राष्ट्रभक्ति की ध्वजा सा स्थिर हो गया। उनक उस धम युद्ध की वन्दना आज भी प्रजाजन की प्रीति और गुलाब के फूलो म अभिव्यक्त होती है।

चीतारै चितवन तनै, मन पावन महाराज।
धनोह छोरु धीर राह, अनड भड अखेराज ॥

हे महराज के यशस्वी शौयपुज धमरक्षक पुत्र कू पा ! हमारी दृष्टिया आपको निहारती है। क्योकि आप कीरण विजेता छवि से हमारे मन पावन हो गये है। हे सिंह पुरुष वलिदान के अमर कीतिमान चौहान अखैराज, आपके परात्रम प्रसग सुन कर युवा पीढिया ध य हो गई। आप जैसा अनुपम, अपराजेय विलक्षण योद्धा और कौन होगा ?

(३२६)

मरण आदरै मुलक पर, राव हुवो वारक।
अजर अमर नित आखरा, लागै जस रा लक ॥

जो सुभट्ट क्षत्रिय अपने राष्ट्र की रक्षा हेतु सहष मृत्यु का सत्कार करता है वह सम्पदा से दरिद्र होते हुए भी चरित्र से सम्राटो से भी महान हो जाता है। उसका जीवन महाकवियो, इतिहासविदो और जन गाथाओ के अक्षरा मे अमर हा जाता है। उसका प्रभा मण्डल यश से विस्तत और महान हो जाता है।

(३२७)

चाद सूरज तारा जिते, है धरती असमान ।
गूज गूज ने गूजसी, गिररी गौरव गान ॥

जब तक अनन्त अम्बर मे चन्द्रमा सूय और अगणित तारक दल आलोकित रहेंगे । जब तक इस विशाल धरित्री और अछोर अम्बर का अस्तित्व रहेगा तब तक गिरी के गौरव गान निरंतर गूजते रहेंगे ।

(३२८)

धर्म धरम हित धाड मे, वारी ख्यात विसेस ।
इतिहासा सूरा अमर, दीपत रार्ख देस ॥

जो महावीर धर्म की रक्षा हेतु महासमर म अपने को न्योछावर कर देता है उसकी ख्यात (यशोगाथा) पौराणिक पावन ग्रन्थो सी विशिष्ट रचना बन जाती है । जिस राष्ट्र का इतिहास अमर वीरो के उदात्त चरित मे लिखित है । व पृष्ठ राष्ट्र को निरंतर ज्योतिमय रखते हैं ।

(३२९)

पर पीडा हरता रहो, पुन राह पग पडेस।
मरुधरियँ महराजवत, कही वात कमधेस ॥

महान मरुधरा के प्रतापी पुरुष महराज के सुपुत्र वीर शिरोमणि कू पा ने हमे एक ही सदेश दिया है कि सदव हम पुण्य धम के पथ पर अग्रसर रहे और परपीडा के लिए अपन प्राण तक समर्पित करते रह।

(३३०)

शेरशाह मद मुड रैं, नाका घाता नकेल।
रागा सिंधु रीझियो, खेमकरण डकरैल ॥

शेरशाह सूरी के सत्ता के मद से डोलते मुण्ड अथवा मुख मे महायोद्धा साहस के सूय राठौड खीवकरण उदावत ने उसकी नाक मे नकेल डाल दी अर्थात उसका दभ खण्डित कर दिया और गिररी के प्रागण युद्ध घोष की सिन्धु रागिनी को आलापित किया।

(३३१)

मात्र भोम हित मरण री, वाली जिणने वाट।
हर पल जन मन हेत रा, हिवडा रा समराट॥

जिन धम रक्षक मानवता के आराधक क्षत्रियो ने मातभूमि की रक्षा हेतु मरण के महापव का सहप सम्पन्न किया, एम जननायक प्रतिपल लोक कल्याण मे समर्पित रह कर लोक मानस के सम्राट वन गये।

(३३२)

महाभारत महराजवत, खत्रवट हवी खाण।
मरुधर हित मे माडियो, गिररी गौरव गाण॥

शकर क परम साधक महराज के रौद्र रूपा सुपुत्र वीरवर कू पा ने मरुधरा की मान मर्यादा हेतु क्षात्र धम को प्रशस्त करत गिररी मे शेरशाह सूरी की सन्य वाहिनिया के मध्य महाभारत की पुनरचना कर दी। उनके गौरव गान आज भी अमर है।

(३३३)

अमर रहसी आपराह जेता जन मन जान।
परवाडा धर प्रेम रा, अजर अमर बलिदान॥

हे मरुधर के महा गौरव जैता ! आपका पुण्य नाम सदैव अमर रहेगा। आप जन मानस के प्राणों में देव तुल्य प्रतिष्ठित रहोगे। राष्ट्र भक्ति की महान गाथा आख्यानों को आलोकित करेगी। आपका जुझारु बलिदान अजर अमर रहेगा।

(३३४)

गिरवर तरुवर मरुधरा, सरवरिया मन चीत।
गदगद हो ने गावसी, गिररी गौरव गीत॥

माता और शूरा को जन्म देनी वाली इस महान मरुधरा की पर्वत शृंखलाएँ, अरण्यों के घने वृक्ष, लहराते सरोवर जो गिररी के महाभारत के साक्षी रहे हैं। वे अनन्तकाल तक भावविभोर होकर गौरव गीतों को निनादित करते रहेंगे।

भारत रचियो था भडा, मावड राखरण मोद ।
जेते कूपे जूझ नै गजब उजाळी गोद ।।

राठौडो के महा तेजस्वी और प्रबल पराक्रमी जता और कूपा न अपनी जननियो की वीर प्रसविनी काखो का मदव उल्लसित रखने हेतु भारत राष्ट्र की रक्षा की । आपने अपनी माताओ की गोद को उज्ज्वल कर दिया है ।

(३३६)

प्रजाळी अगनी प्रखर, देस प्रेम री देख ।
पोया मोती प्रेम रा, लोया लिखिया लेख ।।

आपने अपने महान शौय मे देश भक्ति की आराधना हेतु आत्म वलिदान के दीप प्रज्ज्वलित किये । अपने मागलिक लोक कल्याण-कारी कार्यो से भारत माता के कण्ठहार म प्रेम मुक्ताओ को पिरोया और अपने लहू से अमर इतिहास के आलेख अकित कर दिये ।

(३३७)

भर दी अेकठ भावना, धर री बण ने ढाल ।
जेते कूपै जूझ ने, लोया कर दी लाल ।।

एक बार तो निराश विशृंखलित राष्ट्र मे आपने विकराल शत्रु हिनी के सामने आत्मोत्सग की ढाल बन कर एकता की भावना का संचार किया । हे जैता और कूपा ! आपने मरुधरा को विजयश्री अभिनन्दिन करने हेतु उसे लहू धाराओ से रक्ताभ कर दिया ।

(३३८)

मान रखण धर मरुधरा, सिर सत्रुवा छाग ।
थिर आजादी थरपवा, रगता भर दी राग ।।

वीरो की तपापूता तीर्थ सी मरुधरा का मान रखने आपने शत्रु शीशो को काट काट कर अम्बार लगा दिया । फिर अनन्त रक्त प्रवाह से स्वतन्त्रता के दुर्ग को अभेद्य अपराजेय शाश्वत से प्रतिष्ठित रखने हेतु उसकी नीवो मे भर दिया ।

(३३६)

सूरा गिररि सुमेल रा, जबर जूझिया जग।
मरिया मरुधर कारणं, रजपूता ने रग॥

गिररी सुमेल के महाभारत म योद्धाओ ने ऐसा विलक्षण जुझार युद्ध किया कि मरुधरा पीतवर्णी थी। उस के लिए मरण का वरण कर राजपूती रग अर्थात लहू से लाल कर दिया।

(३४०)

भारत रचिया ही भडा, भारत रूप कहाय।
भारत सू के दिन डरा, रहणो भारत माय॥

सुमेल गिररी के समरागण म आपने नये भारत (महाभारत) की रचना की। भारत वास्तव मे विश्व के भरण पोषण का राष्ट बन गया। भारत की पवित्र भूमि रहते हम कब तक भारत (युद्ध) से भयभीत रहगे ?

(३४१)

आरत भारत देस री, हिवडै राख हमेस।
सुख्यारत सह ने करो, दीपत राखो देस।।

हे राष्ट्र भक्तो! क्षात्र धम के प्रतिपालको! भारत को सदव अपने हृदय मे भारत (महान राष्ट्र) के रूप मे धारण करो। अपने रण कौशल और मागलिक जन सरक्षण से सभी को सुखी बनाओ ताकि हमारा राष्ट्र निरतर गरिमा से आलोकित रहे।

(३४२)

विश्व सह वसुदेव रोह, हिंदू जीवण हेत।
पय पीवै नित प्रेम रो, सह धरती सरसेत।।

वासुदेव कृष्ण ने हमे सदव विश्व बधुत्व और शौय से मानवता की रक्षा का उपदेश दिया है। जो हिन्दू है, वह समग्र मानवता का प्रिय रक्षक है। आओ हम स्नेह का अमृत पान कर अपनी रचनात्मक ऊर्जा से राष्ट्र को समृद्ध बनाए।

(३४३)

हळिया हाको हलधरा, खेत समझ रण खेत।
मावड रूपक मरुधरा, माग्योडा वर देत॥

हे मरुधरा के आराधको मरुधरा के रण क्षेत्रो को खेत मान कर स्वय हलधर बन कर इसमे अपने प्राणो का बीजारोपण कीजिये। यह धरती साक्षात हमारी मातृशक्ति है। जो हमे मनोवांछित वरदान देगी—स्वतन्त्रता, समृद्धि, धर्म और मानवता का।

(३४४)

दुसमण थारा देस रो, जे जीतो घर जाय।
थारो मरण त्यूहारडो, रीतो ही रह जाय॥

यदि आपका आततायी आक्रान्ता, पाशविक, शत्रु जीवित ही अपने घर लौट जाता है तो हमने राष्ट्र देवता की वन्दना हेतु मरण पर्वों की जो परम्परा स्थापित की है वे महान पर्व रिक्त उल्लासहीन रह जायेंगे।

(३४५)

बेटा भारत देस रा, बिजळी रा बटकाह।
अरिया नै छोटा करै, कर सिर रा भटकाह ।।

शौय भूमि भारत के जन्म से वीर सुपुन साक्षात गगन को आन्दोलित कर देने वाली विद्युत जसे तेजस्वी वेगवान हैं। उनके प्रहार एसे होते ह जसे गाज गिरती है। उ होने दत्याकार, महाकाय शत्रुओं के शीश काट काट कर हमेशा बौना बना दिया है।

(३४६)

हैंवर नव जुग हींसतो, आवै बाजै पौड।
जासी जन मन जूभवा, हरवल होडाहोड ।।

देखिये नवयुग के शुभागमन का प्रतीक शौय का माध्यम अश्व हिनहिनाता अपनी टापें बजा रहा ह। इन प्रेरक उदात्त आह्टा को सुन कर जन जन जुझार होने की सुखद स्पर्धा मे अग्रिम पक्ति मे जान के लिए कटिवद्ध है।

(३८७)

कुमलाव नव कू पला, पालण वारी प्रीत।
लायण सारू लाडला, झू पडिया री जीत ।।

आपकी प्रीति के पोषण के बिना नव कू पले कुम्हला जायेगी। इसलिए हे मरुधरा के सुभट्ट सुपुतो, रणक्षेत्र से आततायियो को विनष्ट कर झोपडिया मे समृद्धि और विजय का शृगार करो।

(३८८)

हालो नव कुळ हेलवा, गाव वणावण गग।
श्रम सजल करण इळा, जबर आदरा जग।।

प्रयाण करो कि हम नव युग का आह्वान करें। गाव गाव को गगा सा पावन तीर्थ वना दे। युद्ध मे शौर्य के सम्मान की सार्थकता इसी मे है कि हम अपनी स्वाधीन धरा का श्रम साधना से सजल शस्य श्यामल समृद्ध वना दें।

(३४९)

लाडा भारत लाडला, अबखा आडा आव।
गाढा गीत गमेज रा, गौरव कर ने गाव ॥

हे मरधरा की शौय विभूतियो ! राष्ट्र देवता के परम प्रिय आराधको ! हम स्नेह और श्रद्धा से आपका आह्वान कर रहे ह। हम शौय शून्य हो गये हैं, गौरव गाथाएँ चुप गई ह। आप फिर पधारिये और उन गरिमा मण्डित गानो को साथकता प्रदान कीजिये।

(३५०)

पथ बुहारा राज रो, काळजियै री कोर।
गौरव गिररी सुमेल रा, इक विर गावा ओर ॥

हे हमारे कलेजो की कोर ! हृदय के मम केन्द्र ! कमधश जता व कूपा ! आपके शौय पूण शुभागमन की अपलक नयनो से प्रतीक्षा कर रहे है। आज फिर राष्ट्र आपराधिक तत्वो और विदेशी षडयन्त्रो से अभिशप्त है। आप पधारिये, गिररी सुमेल जैसा महाभारत रच कर अधम पर धम की विजय कीजिये।

(३५१)

मरुधर कजा मेटवाह बिरदालाह वज वज ।
सादूला किम सोविया, केसरियाह कमधज ।।

ओ केसरिया धारण कर जुझारू समर म प्राणोत्सग करने वाले कमधेश श्रेष्ठ ! आपके दुधष रण शनी के प्ररक गान हम आज भी गात हैं। सिंह पुरुषो आप सो कस गय है ? मरुधरा की घोर विपदा मिटाने आइये ।

(३५२)

हुमकारै तोने हुमे, गौरव बडका रीत ।
चित कर काना साभळो, जोध पागडै जीत ।।

हे वीर शिरोमणियो। क्या आप अपन पूवजा की गौरव पूण बिरदावलियो को विस्मृत कर गये हैं। आपको ही तो क्षात्र धम की वलिदानी रीति को जीवित रखना है। हे महायोद्धाओ ! हमारी पुकार सुनो और फिर, अपन प्रशस्त शीश पर विजय किरीट धारण करो।

(३५३)

जागरण है देस मे, हालण सारू हरोल।
वलण करो धर धाहरू, मिनखा प्रीखत मोल ॥

राष्ट्रीय नवनिर्माण हेतु जन जागरण हा गया है मगर अग्रिम मोर्चा कौन सभालेगा ? इस धरित्री के सरक्षका, आप पधारिये। मानवना को फिर कसौटी पर कसा जा रहा है जिसका मोल सिफ आप ही चुका सकते है।

(३५४)

आडावळ अरजी करै, मरजी व्हे तो मान।
देवण तरजो देस ने, धर मरुधरिया ध्यान ॥

अबु दाचल (आबू पवत) ने अपनी प्राथना निवेदित की है। मरुधरा की रक्षा की आकाक्षा है तो उसे स्वीकार कीजिये। राष्ट्र के अभ्युत्यान हेतु हम सभी आप मरधरा के रणबाकुरा का ध्यान करते ह। आपके अतिरिक्त राष्ट्र हेतु प्राणोत्सग करने वाला कौन है ?

मानीता महराजवत, जेत श्रखो ले जोड ।
श्रवतरजो भारत इळा, मरुधरिया सिरमोड ।।

लाक समुदाय मे सदव प्ररक, पूजनीय श्रौर वदनीय रहे महराज के यशस्वी पुत्र कू पा, क्षत्रियत्व के श्रादश जता श्रौर शौय पुज श्रखैराज ! श्राप तीना ही वीर प्रसविनी मरुधरा के शिरोमणि रहे है । श्रव भारत भूमि का श्रधम श्रौर श्रत्याचार से परित्राण हतु श्राप फिर श्रवतार लीजिय ।

(३५६)

श्रडर उदावत श्रापरी, विध विध जोवा वाट ।
पीळा चावळ पेखलो, झेलण दानव झाट ।।

हे राठौड खीवकरण उदावत ! श्रापकी निर्भीकता तो युवा पीढिया हतु प्रेरणा का स्रोत रही है । श्रापके उदात्त चरित का विभिन्न श्रायामा श्रौर रूपा म स्मरण कर श्रापक श्रागमन की प्रतीक्षा करते हैं । हमारे श्रामत्रण के प्रतीक पीले चावल को स्वीकार कर पाशविक शक्तिया पर प्रहार करने पधारिये ।

(३५७)

जेत पधारो जूझवा, ओ हिय रो आह्वान।
हेला देवै हेत सू, गिररी गौरव गान॥

हे परमवीर जैताजी ! हम भारतवासी आपका हृदय से आह्वान कर रहे हैं। आप क्षात्र धर्म की पुनर्स्थापना और सर्वजनहिताय एक बार फिर पधारिये। हम श्रद्धा से आपको पुकार रहे हैं। गिररी के महासमर के गौरव का स्मरण दिला रहे हैं।

(३५८)

रुळियोडा रुळ रह्या, मदछकिया माचत।
आवो धरण उबारवा, नुगरा फिर नाचत॥

जो निर्धन है, अभावों से पीडित है, वे और अधिक सन्त्रस्त और अभिशप्त हो रहे हैं। जिनके पास सत्ता और पूंजी है, वे उन्मत्त हो रहे है। आप इस वर्ग विषमता को समाप्त करने, राष्ट्रद्रोहियों के हिंसक नृत्य को मिटाने धरती पर पधारिये।

(३५९)

गरलावै अधगावळा, रिब रिब घावां रीस।
देवण सुख था देवता, सीस करण बगसीस।।

अद्धमूर्च्छित, विक्षिप्त, कायर आततायियो और शत्रुओ के कुचक्रो के आघातो से लगे जख्मो के रिसते रक्त से स्वय ही तडप रहे है। वे मातृभूमि की क्या रक्षा करेंगे? ऐसी कापुरुष पीढियो का उद्धार करने भारतवासियो को शाश्वत सुख प्रदान करने आप फिर जुझारु देवता मे शीश समर्पित करने पधारिये।

(३६०)

कमधजिया आसो कदे झुर झुर जीवे जीव।
म्हारा भारत देस री, सबल रुखाळो सींव।।

हे कमधज श्रेष्ठ राष्ट्र भक्त महायोद्धाओ आप राष्ट्र की रक्षा हेतु कब पधारोगे? आपकी प्रतीक्षा मे निर्बल असहाय प्राणी अश्रु धारा प्रवाहित कर रहे हैं। आप ही तो सबल सशक्त, सामर्थ्यवान पराक्रमी हैं। जो हमारे देश की सीमाओ, सार्वभौम सत्ता की रक्षा कर सकते हैं।

मुरझावै धर मनुजता, पग धरै किण ठौड।
डगमग दीसै डळवळै, रण वंका राठौड़ ॥

हे रणबांकुरे राठौड़ो ! अत्याचार शोषण, दमन और पशाचिक उत्पीड़न से मानवता का अस्तित्व क्षीण होने लगा है। जीवन के सभी धरातल खण्डित हो गये हैं। जन समुदाय दिशाहीन, दृष्टिविहीन होकर भटक रहा है। आपके बिना हम कहां रहें ? कहां पर स्थिरता और सार्थकता के पैर स्थापित करें ?

(३६२)

धरा पुकारै ढाणियां, हर डग हाहाकार।
आदर मरण इण कारणै, पाछो धरा पधार ॥

सम्पूर्ण धरित्री यातना से अभिशप्त है। मरुधरा की ढाणियां में अनेक दुःखों के कारण हाहाकार का कोलाहल है। हम आपको श्रद्धा से, मनुहार से पुकार रहे हैं कि जड़ता, निष्क्रियता और कायरता के इस वातावरण को बदलने जन्मभूमि के लिए सहर्ष सादर मरण की परम्परा स्थापित करने पधारिये।

(३६७)

आगम ने करवा अडग, भरवा इमरत भाव।
मानीता महराजवत, इकर धरा पर पधार ॥

अन्धकार पूर्ण विपाक्त भविष्य को आलोकित करने, हमारे जर्जर-जर्जर जीवनों में अमृत धारा बहाने हे जन नायक इतिहास पुरुष महराज के सुपुत्र ! पा आप एक बार इस मरुधरा में फिर पधारिये।

(३६८)

देणा मरणा मारणा, सरणागत साधार।
ध्यावै तोने मरुधरा पाछो धरा पधार ॥

हे मृत्युंजय! हम आपके शरणागत हैं फिर से नवजीवन का आधार मांगते हैं। हम अनाचार से मरणासन्न हैं। मरुधरा में मरण पथ से जीवन का संचार करने हेतु आप पधारिये।

(३६९)

गिररी गौरव राज ने, झुक झुक करै जुहार।
सुत पचायण जेतसी, मान लिजो मनुहार ।।

हे प्रतापी पचायण के पराक्रमी सुपुत्र जताजी! हम गिररी के गौरवपूर्ण महासमर का स्मरण कर बार-बार आपका क्षात्र धर्म की स्थापना हेतु पुकार रहे हैं। आप मानवता के अस्तित्व की रक्षा हेतु हमारी मनुहार को स्वीकार कीजिये।

(३७०)

भड लडता थन भाळियो, तन झडता तरवार।
अख अडतो भाराथ मे, गौरव गीत गुजार ।।

हे परम पराक्रमी! जब कोई योद्धा दुधर्ष संघर्ष करता है तो सहज ही तुम्हारे नाम का जयघोष करता है। तुम्हारी स्मृतियों से ऊर्जस्वित तन तलवारों की धार से सहर्ष कट जाते हैं। हे अखराज! महासमर मे तुम्हारे जैसा स्तम्भ हमने नही देखा। इसीलिए हम सभी तुम्हारे गौरव गीतो को गुजारते हुए विभोर होते हैं।

(३७५)

कमधजिया रण केसरी, प्रण पालक प्रतिपाल।
विलखी देख वसुधरा, निरमल मना निहाल॥

हे कमधज राठोड वीरो ! आप सदैव युद्ध भूमि मे सिंह पुरुषा से विजयी रहे हैं। आपके समान देश रक्षा के प्रण को निभाने वाला और अपनी प्रजा का पालनहार कौन है। जब जब यह धरती आततायियो से आक्रान्त हुई है तो आपने निश्छलता, निर्भीकता और बलिदान से इस ससार को धन्य किया है।

(३७६)

पर दुख भजण परमारथि, मजण सकल सभाव।
अजण इनसा आख रो, अेक बार फिर आव॥

आप तो पर दुःख को नष्ट करने वाले महान परमार्थी हैं। आपका स्वभाव सभी को सुख समृद्धि और वैभव प्रदान करना है। मानवता के नयनो को फिर आलोकित करने आप पधारिये।

(३७७)

नीत धरावण ने करी, मिनखा रीत रसाण।
थरपण थाती देस मे, पावी प्रेम पिछाण॥

आपने सदव लोक कल्याण की नीति को स्थापित किया। मानवता के मूल्यो का उन्नयन अभ्युदय किया। राष्ट्र की गौरवमयी धरोहर की रक्षाथ हमने जो स्नेह पत्र प्रेषित किया है उसे स्वीकार तो कीजिये।

(३७८)

अमरापुर सू आवजो, घर घतियो घमसाण।
आथडवा आसो कदै, सज धज ने समराण॥

इस धरती पर फिर अधम के विरुद्ध धम की स्थापना हेतु महा-युद्ध छिड गया है। क्षत्रियत्व, भारतीयता और मानवता पर प्रबल प्रहार हो रहे है। आप अमर लोक से इस धम युद्ध मे पराभव से पूव ही रण सज्जा धारण कर विजयश्री का वरण करने पधारिये।

(३७६)

पाप अनीती ऊकळै, डग डग विषधर डस ।
दोळै फिरग्या देस रै, कैरव रावण कस ।।

पाप लावे की तरह लील रहा है। अनीति के विष-वक्षा से राष्ट का मन प्रदूषित हो गया है। अराजक, अमानवीय पैशाचिक शक्तिया नाग बन कर मानवता को डस रही है। इस देश को फिर से रावणो कौरवो और कसा ने अभिशप्त कर दिया है।

(३८०)

दोजख मेटण देस रो, समता मय ससार ।
विसमता विष झाडवा, पाछो धरण पधार ।।

दरिद्रता, अज्ञान, अनीति, अपराधो के घोर नरक को समाप्त करने, धम सम्मत मानवीय समता को ससार मे प्रतिष्ठापित करने, वग विषमता के विष से लोक समुदाय को मुक्त करने आप धरती पर धम के अवतार बन पधारिये।

(३८१)

जीवण दरसण जेत रो, सूरापण धर सूप।
रण हो भुरा राठवड, केसरिया धन कूप।।

महावीर जैता का तो जीवन दर्शन ही विश्व मे शौर्य की स्थापना करना है। पराक्रमी कूपा का यह प्रण रहा है कि केसरिया धारण कर राठौडो की मर्यादा को अक्षय अमर करना।

(३८२)

गौरव गीत गमेज रा, जस मोतीह जडाव।
सुरसत किरपा सोभिया, सुरपत सीस चढाव।।

आपकी महामानवीय उपलब्धिया के गौरव गीत लोक यश पुण्य कीर्ति के मोतियो से जडे है। जिनमे वीणापाणि सरस्वती की महाप्रज्ञा का आलोक है। ऐसे गीत किरीट स्वय इन्द्र जो देवताओ के अधिपति है, अपने शीश पर धारण कर कृतनाथ हो जाते है।

घाया लथपथ लाडला दीधो रगत अतोल।
वर आजादी बींदणी, मरण चुकायो मोल।।

हे नरपुगव! यह कैसा वीर वश है। आपके अग प्रत्यग म देश भक्ति हित समर के घाव हैं। आपने उल्लास मे अमूल्य रक्त प्रवाहित कर दिया। स्वतन्त्रता की दुल्हन का वरण करने आपने प्रियवर के रूप म मरण का आलिगन किया।

(३८४)

पलक बिछाया पावडा, अपसर सामै आर।
पग मडणा कर प्रेम सू, लीधा सुरग बधार।।

महासमर म अगणित घावो से सज जुझार से शीश अपने हाथ म लेकर जब आप स्वग पधारे तो अप्सराओ ने आपके अभिनन्दन हेतु पलक पावडे बिछा दिये। आपके चरण कमलो की वन्दना कर उन्ह कुकुम से विभूषित कर बधाई गीत गाते आपका स्वग म स्वागत किया।

(३८५)

इमरत पूतर प्रेम रा, समर प्रेरणा पुज ।
जैता कूपा सूरमा, निरमळ भाव निकुज ।।

आप तो साक्षात प्रेममय अमृत पुत्र हैं, धर्म और मानवता के रक्षार्थ महायुद्धा मे आप शौय के प्रेरणा पुज हैं । हे जैता और कूपा ! आप जितने अपराजेय योद्धा ह उतने ही देवतुल्य सात्विक निश्छल निमल भावनाओ के नन्दन कानन सज्जित हृदयहार है ।

(३८६)

अवतारी आजो इळा, सत मत भरण सरूर ।
मरुधर कागद मोकळे, जाया आवो जरूर ।।

हे अवतारी महाशक्तियो ! आप इस धरती पर धम नीति, सदाचार और शौय का सचार करने पधारिये । मरुधरावासिया ने आपको अगणित गरिमापूण सन्देश प्रेषित किये है कि ऐसे सकटकाल म आप हमे अवश्य अनुप्राणित करे ।

अरब नमण बका अनड, जुग जुग रा जूझार ।
कूपा धन रण केसरी, बार बार बलिहार ॥

हे रण बाकुरे परम पराक्रमी महायोद्धाओ ! हम आपका कोटि कोटि क्या अरबा खरबो बल्कि अगणित सतत नमन करते है। आप तो युग युगान्तरो के जुझारु जन नायक है। हे कूपा ! युद्ध म केसरिया धारण कर आप केसरी (सिंह) बन गये। हम बार बार आपके उस शौर्यस्वरूप पर बलि जाते है।

(३८८)

जूझारू जीवट जोया, रजवट नेह अछेह ।
बरसै बारो मास ही, माथै जस रो मेह ॥

जो क्षत्रिय रण मे जुझारू हो जाते है, वे मृत्यु का आलिगन करते हुए भी जीवन की सम्पूर्णता की सार्थकता प्राप्त कर लेते है। उन्ही के हृदय मे क्षात्र धर्म के प्रति अथाह श्रद्धा होती है। ऐसी बलिदानी विभूतियो पर बारह महीनो सुयश की अपार वर्षा होती है।

(३८६)

या हरियाली मरुधरा, थिरचक रगता पाए।
गिररी गौरव जगमगे, उजियाळी समराए ॥

अनुवर पिपासु मरुभूमि मे जो नन्दन कानन सी शाश्वत हरीतिमा है। उसका कारए है कि इस भूमि मे पानी नही सदैव रक्त प्रवाहित होता रहा है। सभी महासमरो मे गिररी के महाभारत की तेजस्विता दीपित रही है।

(३६०)

मतवाळी धर मरुधरा, बिरदाळी बाखाए।
जैते कू पै धन करी, सज धज ने समराए ॥

शून्य निर्जन मृग मरीचिकाओ से अभिशप्त मरुधरा सम्पन्न नवयौवना मदमाती लावण्यमयी बन गई। जिसकी प्रशस्ति गाथाएँ विश्वव्यापी हो गई। क्योकि यहा महायोद्धा जैता कूपा ने दुधष सघष मे आत्म बलिदान कर इसे धन्य कर दिया।

सूरा समवड राज री, उपमा कोनी श्रोय।
मनभावन पावन करी, धरती रगता धोय॥

मरुधरा के शौर्य पुरुषो आपके विराट व्यक्तित्व की कोई उपमा नही है, कोई अन्य योद्धा आपके समान नही हो सकता। आप तो अद्वितीय हैं क्योकि आपने निष्काम भावना और पवित्र ध्येय हेतु इस धरा को अपने रक्त से प्रक्षालित किया है।

(३६२)

धजवडिया धर धोक ने, अरि दल लिया अरोड।
अमर उदावत री अडर, मूछा और मरोड॥

राठौड खीवकरण उदावत ने विद्युत वेग से विलक्षण वीरता का प्रदर्शन करते शत्रु दल को समेट कर सहार कर दिया। ऐसे निर्भीक योद्धा की मूछा और स्वाभिमान को कौन भुला सकता है?

(३६३)

जेत कूप गखराज रा, माथा खागा खात।
खमिया साथै खेमडा, सैल घमीडा साथ॥

वीरवर जैता पराक्रमी कूपा और सिंह पुरुष अखैराज की तलवारो से शत्रु शीश धराशायी होने लगे। खीवकरण के तीखे भाले अरिदलो को छेद छेद कर पीछे धकेलते रहे।

(३६४)

गिरी गौरव गगोतरी, मान सरोवर मान।
काबा कासी प्रागवड, बड भागी बलिदान॥

सौभाग्यशाली, आत्म बलिदानी, जुझारू क्षत्रियो ने गिररी के प्रागण को गगोत्री सा प्रवाहमान निझर मानसरोवर सी रक्ताभ झील, प्रयाग सा शौर्य सगम और काशी तथा काबा जैसा पुनीत तीर्थ बना दिया।

(३९५)

जमम भोम हित जूझ री, जाग्रत दीपं जोत।
दरसण कीधा देवडा, हरख अथग मन होत ॥

अपनी महान मातृभूमि की रक्षा के लिए जूझ कर शौय, त्याग और राष्ट्रभक्ति की ज्योति प्रज्ज्वलित कर दी। देवड़ा का हृदय वीरता के इस आलोक के दशन कर अथाह हर्ष से विभोर हो गया।

(३९६)

गरिमा गीता ज्ञान री, बलिदानी धन बोध।
बिडद इणरो वेखिया, आगम सुधरे ओध ॥

गिररी के महाभारत मे जो त्याग के दृष्टांत रचित किय गये। वे गीता के ज्ञान के समान गरिमापूण थे। 'उनमे बलिदान का दिव्य बोध था। इसकी प्रशस्ति यथाथ (वतमान) और भविष्य मे भी अक्षुण्ण रहेगी।

(३६७)

रण रामायण राज री, आगम भरणी ओझ।
तारण तरणी मरुधरा, छत्रवट राखी खोज॥

गिररी के महासमर की गाथा रामायण के समान भविष्य की पीढ़ियों को ओज से ऊजस्वित करेगी। उस युद्ध म महान योद्धाओं न मरुधरा की नया का डूबते हुए बचाया और विलुप्त होते क्षत्रियत्व को पुनर्स्थापित किया।

(३६८)

या करणी सतकरम री, भरणी भगती भाव।
या सगती सचारणी, चित मे मुगती चाव॥

यह सात्विक कम की परम पवित्र क्रियान्विति है। यह गाथा हृदय को भक्तिभाव से विभोर कर देती है। यह कथा शक्ति की सचारिणी है, जिसको पढने, सुनने, जानने से हृदय मे मुक्ति की कामना उमडती है।

(३९९)

भारत रचियो भिडमला, गायडमला राह गीत ।
भाळो इणमे है भरी, रजवट वाळी रीत ॥

जुझारुओ ने अपूर्व संघर्ष मे दूसरे महाभारत की रचना कर दी जिसमे शौर्य गाथाओ के गीत हैं। गिररी की महागाथा मे विराट क्षत्रियत्व की प्रशस्त परम्परा प्रतिबिम्बित होती है।

(४००)

की जीणा मरणा अरे, जाम जिवडा जात ।
पलक झपेंह मरा परा फिर जीवा परभात ॥

यह शरीर तो क्षणभंगुर है और संसार एक स्वप्न जंजाल। जिसम मरना और जन्म लेना एक रूपक है। पलक झपक्ते ही हम मृत होते हैं और आखें खुलते ही जीवित। हर रात मौत है और हर प्रभात जीवन।

(४०१)

मरैं न सिनखापण महो, लडैं समर व्रत धार ।
कूपा जेता कमधजा, तो जरणी बलिहार ।।

जो मानवता के अस्तित्व और अपनी जन भूमि के लिए मरता है वह मर कर भी अमर हो जाता है। जो अपने सकल्पो या सद्धम की रक्षा हतु युद्ध करते हैं, वह तपस्या होती है। जैता और कूपा जैसे ही सकल्पसिद्धा को जन्म देकर जन्म भूमि धन्य हो गई।

(४०२)

मना मगन धरती चमन, धरम पालणा धेह ।
जेत कूप इण कारणं, दुनिया धारी देह ।।

वसुन्धरा के महान तेजस्वी सुपुत्र राठोड शौर्य पुज द्वय जता और कूपा ने क्षात्र धम की स्थापना, मानव समुदाय की सुख समृद्धि और सम्पूण विश्व को शान्ति कानन बनाने के ध्येय से मानव देह धारण की और प्राणोत्सग तक वे अपने प्रण पालन मे तल्लीन रहे।

बोळावू निज वतन रा, जाडा करणा जतन ।
जेत कूप ने जीव सू, वालोह घणो वतन ।।

अपनी वन्दनीय जन्मभूमि के लिए जता और कू पा प्रचण्ड सुरक्षा प्रहरी, परित्राणकर्ता और समर्पित योद्धा थे। स्वाधीनता हेतु वे सर्वांगीण सवविधि से प्रयत्नरत रहे, उनको अपने प्राण से भी अधिक प्रिय हमारा राष्ट्र था।

(४०४)

निरासा नेडी नहीं, आसा अवसल धन ।
मोदीलो महराजवत मरुधर माथेह मन ।।

अटल, स्वाभिमानी तपोपूत महराज के महायोद्धा सुपुत्र कू पा की मौलिक सम्पदा सुदृढ रचनात्मक आशा थी, निराशा तो उनके निकट छाया रूप में भी विद्यमान नहीं रहना। उनके अन्तमन में सदव मरधरा के प्रति श्रद्धा का ज्वार उमडता रहता।

जलम भोम सुरगा सिरै, उण रथ झूरै जूत ।
जेतो कूपो जूझिया, रण बका रजपूत ।।

पराक्रम की पराकाष्ठा के साकार स्वरूप महावीर जैता और कूपा के लिए अपनी महान वन्दनीय जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक श्रेयस्कर और सर्वोपरि थी जिसके कारण वे महासमर के विजय रथ में जुट कर अविस्मरणीय रणबाकुरे क्षत्रिय शिरोमणि बन गये ।

(४०६)

प्राण देय प्रण राखणा, रजवट सवणी रीत ।
गरणावै धर गगन मे, गौरव भरिया गीत ।।

उन क्षत्रिय वीरवरा का पावन सकल्प था कि अपने प्राणो को समर्पित कर राष्ट्र की स्वाधीनता का प्रण पालन करना । इसीलिए शौय सिद्ध जैता और कूपा ने क्षात्र धम की मर्यादा हेतु अपराजेय भावना से महायुद्ध किया ।

(४०७)

खपिया तव खग तळ, शेरशाह सुभट ।
मर समरा महराजवत, राख लोधो रजवट ॥

शौर्य के आधार स्तम्भ महराज के सुपुत्र युद्धवीर कूंपा ने अपनी विद्युत गति से तीक्ष्ण और वेगवान तलवारों से आततायी शेरशाह सूरी के सैन्य दल का संहार कर क्षात्र धर्म को प्रशस्त कर दिया ।

(४०८)

साख आपरी सूरमा, झटका झोका झीक ।
किरपाण अग कूंपदे, वरी भागा बीक ॥

शौर्य के मार्तण्ड कूंपा ने शेरशाह के अपार सैन्य दल में अपनी संहारक तलवारों से अगणित शत्रुओं को झटके से मुण्डहीन निष्प्राण मांस के लोथड़ों में बदल कर अपने को महायोद्धा सा स्थापित कर दिया । उनकी नुकीली कृपाणों के प्रबल प्रहारों से वैरी हतप्रभ भयाकुल होकर पलायन करने लगे ।

(४०६)

या आगम ने पथ दियो, पथ ने गती प्रमाण।
साथै समरा जूझियो, अखेराज चहुआण॥

हे महारथी, धर्मनिष्ठ रणवीर अखराज चौहान! आपने विलक्षण वीरता से मरुधरा के भविष्य का प्रशस्त कर दिया। आपने शौर्य पथ को अवरुद्ध होने की अपेक्षा प्रेरक गत्यात्मकता प्रदान की। महायुद्ध में आपका जुझारू रूप हमारे लिए अभीष्ट बन गया।

(६१०)

कूंपो कुळ रो केसरी, जैतो जगमग जोत।
खेम उदावत सिर तिलक, गहरे पाणी गोत॥

दानवीर रण श्रेष्ठ कूंपा अपने शौर्य कुल का केसरी था। राजनीति के महान आचार्य जैता विश्व में स्वाधीनता के प्रकाश स्तम्भ बन गये। खेमकरण उदावत तो प्राणोत्सर्ग के महात्याग से लोक समुदाय के गर्वोन्नत भाल के विजय तिलक से विभूषित हुए। उन्होंने मानवता के पारावार में बहुत गहरे पैठ कर अमूल्य सद्गुण रत्नों को प्राप्त किया।

(४११)

या सुमरण आराधना, सूरा चरण समाप ।
गिररी गौरव गीतडा, अवधरो अब आप ॥

हे अतुलनीय, अद्वितीय महारथियो हम आपका भक्तिभाव से स्मरण करते है । आपके श्रीचरण हमारे लिए अक्षय पुण्य के प्रेरण पुंज है । हम आज भी गिररी के महाभारत का गौरव गान कर आप का आह्वान करते है ।

(४१२)

चैत्र पंचम पावन तिथि, मंगळ मरण त्यूं हार ।
सोळा सौ वद पख मे, सूरा सुरग सिधार ॥

विक्रम सम्वत सोलह सौ के चैत्र मास का उत्तर पक्ष (वदी) की पंचमी मरुधरा के लिए वो महान पर्व है । जब आपने केसरिया धारण कर जुझारु रूप मे परम योगी की भाँति स्वर्ग मे महाप्रयाण किया ।

(४१३)

सुरपत रै सिर मुकट मे, जुडिया रतन जुडाव।
विखमी पुळ सारघो वतन, समर मरण हिय चाव ।।

हमारे अभिनन्दनीय सतत वन्दनीय पुण्य भूमि राष्ट्र पर जब घोर सक्ट आच्छादित हो गया तो आपन महासमर म धर्मोत्सव की भाति मृत्यु का आलिंगन कर स्वर्गलोक मे देवराज इन्द्र के शुभ्र किरीट के प्रमुख रत्न बन गये।

(४१४)

मर ने कीधी मरुधरा, उरवर प्राण अमाप।
तेग धार तप राज रो, जप जप रजवट जाप ।।

आप तो महाप्राण उदार चेता योद्धा थे। इसलिए प्यासी मरुधरा हेतु प्राण समर्पित कर आपने उसे बन्ध्या नही अमर वीर प्रसविनी बना दिया। आप की तलवारो की महान राष्ट्र साधना का पुण्यस्मरण करने पर क्षत्रियत्व का ओज उमड पडता है।

(४१५)

चैत पचमी सूरमा, सोळै वद सहोक ।
धर अबर दीपत किया, मर समर मसरीक ॥

सम्वत सोलह सौ के चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पचमी को आप जैसे रण देवताओ ने न केवल विशाल धरित्री और अनन्त अम्बर को अपने शौय से आलोकित किया अपितु आप समर मे मरण का वरण कर विश्वनायक बन गये ।

(४१६)

त कीधो धीरज तणा अजर अमर अमराण ।
सुरपत रै सिर रा तिलक, समर मर चहुआण ॥

हे महामानव अखराज चौहान ! आपने युद्ध म प्राणोत्सग एव धैय को तपश्चर्या म रूपान्तरित कर स्वग के देवताओ के समान अजर अमर ही नही सुरपति इन्द्र के भाल क तेजस्वी तिलक बन गय ।

भू भारा इण जगत मे, पर हित रगत बहाय।
जेतो कूपो जूझिया, जिणरो जस नह जाय।।

सत्ता, निज साम्राज्य और वयक्तिक वैभव के लिए नही आपने लोकहिताय परमाथ के लिए रण मे जूझ कर रक्त की सरिताएँ प्रवाहित कर दी। ऐसे जैता और कूपा जसे निष्काम वीर योगी का यश क्या विश्व म विलुप्त हो मकता है ?

(४१८)

महाभारत मरुधर तणो, कुळ री राखण काण।
अमर धजवड ओपती, समर चढ चहुआण।।

अखैराज चौहान ने अपने गौरवपूण कुल के स्वाभिमान की रक्षाथ प्रचण्ड साका कर मरुधरा मे महाभारत रच कर क्षात्र धम की ध्वजा को अपराजेय रखा।

(४१९)

दिक दिक कीधा दीपता रख रजवट अहनाण।
जुग जुग राख्या जीवता बडका बिडद बखाण ॥

आपने क्षत्रियत्व के सभी सद्गुणों को महासमर में चरितार्थ कर रजपूती को दीपित कर दिया। हमारे पूर्वजों की गौरव गाथाओं को अपने प्राणोत्सर्ग के दृष्टान्त से युग युगान्तरों तक अमर बना दिया।

(४२०)

हरण दुख दुखिया तणो, निरमळ पावन नेम।
मनभावन मधुबन जिसो, अडर उदावत खेम ॥

नर पुंगव खेमकरण उदावत जितने निर्भीक महायोद्धा थे उतने ही मानवीय मूल्यों के महान प्रहरी जो सदैव दूसरे के दुखों का हरण करते रहे। लोक रक्षा जिनका पावन निश्छल व्रत था और हृदय मानवीय गुणों से मधुमास सा सुरभित था।

(४२१)

पचायण प्रमला प्रखर, शीतल मद सुगध।
जग रजपूती जीवती, कमधजिया रै कध॥

पचायण के सुपुत्र जता के सर्वांगीण सम्पूर्ण सिद्ध व्यक्तित्व के सद्गुणो के पराग से मरुधरा सुरभित (यशस्वी), शीतल (समृद्ध) व मद (सुरक्षित) हो गई। ऐसे कमधज श्रेष्ठो के कधो पर आधारित क्षत्रियत्व का दायित्व निरन्तर अनुप्राणित रहा।

(४२२)

जेत कूप जस राज रो, इळ अबरा अछेह।
बरसै बारो मास ही, मूसळधारा मेह॥

राष्ट्र भक्त महामानव जैता और कूपा के व्यक्तित्व की तेजस्विता का यश महान धरित्री और अनत अम्बर म व्याप्त हो गया है। जिससे बारह महीनो मरुधरा मे सदगुणो, मानवीय मूल्यो की निरन्तर वर्षा हो रही है।

(४२३)

गिरंरी गौरव राज रो, गीता वाळो ज्ञान।
उर साम्रत अवधारणा जेत कूंप बलिदान॥

ऐतिहासिक महाभारत तुल्य गिरंरी के महासमर में जैता और कूंपा ने श्रीमद् भगवद् गीता के निष्काम कर्मयोग और वीरगति के ज्ञान को चरितार्थ किया। हृदय में उस संकल्प के कारण ही उन्होंने अपूर्व बलिदान दिया।

(४२४)

गंगा गीता गायत्री, सीता और श्रीराम।
गिरंरी गौरव में बसें, घरण नामी घनश्याम॥

गिरंरी के समरांगण में अधर्म पर धर्म की, पाप पर पुण्य की पाशविकता पर देवत्व की विजय देख कर वहाँ पावन सुरसरिता गंगा, ज्ञान की आध्यात्मिक धारा गीता जगद्धात्री गायत्री और विश्व पोषक घनश्याम साक्षात उपस्थित हो गये।

(४२५)

राधा रुकमण विहसै, या बाधा मेट उमग।
गिररी समर समीर रै, सगत सचरी सग ॥

प्रचण्ड युद्ध की विभीषिका को जब गिररी के समर मे शक्ति के उपासको ने ध्वस्त कर दिया। जसे स्वय महाशक्ति न वहा रण लीला की हो। तो ऐसा अपूव दृश्य देख कर राधा और रुक्मणो जैसी महा देविया भी मुदित हो गई।

(४२६)

जेतो कू पो जोरवर, जलम गया नर जीत।
पछी कलरव पेखलो, गावै गौरव गीत ॥

महायोद्धा राठौड, श्रेष्ठ क्षात्रधम प्रतिपालक जैता और कू पा ने मानव देह धारण कर नश्वरता को विजित कर अमर हो गये। देखिये मरुधरा के नर नारी तो क्या पक्षीवृ द भी उनकी यशोगाथा का गायन कर रहे है।

(४२७)

अतस मन आराधना, ध्यावै धरती ध्यान।
गौरव भरिया गीतडा, सूरवीरा री शान॥

यह वीर प्रसू शस्य श्यामला, चराचर को धारण करने वाली धरती भी अंतमन से आराधना के भाव से ऐसे शौर्य पुरुषों के यशगान से गौरवान्वित है।

(४२८)

गगा जमना गोमती, नदिया थारी धार।
थारा रगत री धार पर, वार वार बलिहार॥

गिरधी व रणागण में मानवता के रक्षक राष्ट्रभक्तों के रक्त की सरिताओं पर गंगा, यमुना और गोमती जैसी पावन देव नदियाँ वार वार बलिहारी जाती हैं।

(४२९)

कीरत थारी कमधजा, वेद ऋचा वाखाण।
मर समर अमर थिया, मातृभोम रख माण॥

हे देवतुल्य वन्दनीय कमधज श्रेष्ठो! आपके बलिदानों की कीर्ति ऋचाएँ बन गई है। क्योंकि आपने मातृभूमि पर न्यौछावर होकर पृथ्वी को गौरवमयी जननी बना दिया।

(४३०)

धर अणूता आगडा, छोटा मोटा भेद।
मेटण ने महराजवत, खळ हथ देयण खेद॥

राठौड कुल श्रेष्ठ महराज के समतावादी, दार्शनिक, महावीर कृपा ने जो कमधज शिरोमणि रहे उन्होंने मानवीय विषमता को समाप्त करने हेतु शत्रु का संहार कर उन्हें शोक संतप्त कर दिया।

(४३१)

जेतो कूपो जूझिया, जस रा लाटा लाट।
जन मन अतस उच्चरै, हिवडा रा समराट ॥

जुझारू जता व कूपा ने आत्म बलिदान कर यश की अमर फसले सचित करली। जिससे आज भी हम समृद्ध हैं। लोक मानस आपको हृदय सम्राट मानकर आपकी कीर्ति गाथा उच्चारित कर प्रेरित हाता है।

(४३२)

देवै माथा देस ने, जग माथा झुक जाय।
दिवला झुपै देवरा, गौरव गाथा गाय ॥

जो राष्ट्र भक्त स्वाधीनता हेतु सहर्ष अपने शीश समर्पित करते हैं। उनके प्रति श्रद्धा से सम्पूण मानवता नत शीश नमन करती है। उनकी तेजस्विता के दीप मदिरा म प्रज्ज्वलित होते हैं और प्राथनाग्रा मे उनकी गौरव गाथाए गाई जाती हैं।

(४३३)

माळी मातर भोम रा, नव फूला तकदीर ।
अरपण सूरा आपने, जस वाळो जागीर ।।

आप मातृभूमि के स्वतन्त्रता उपवन के माली (रक्षक और पोषक) थे। आपके बलिदानों ने सौभाग्य के नव प्रसून कुसुमित किये। आत्मोत्सर्ग से आपने हमें यश का शिवत्वमय साम्राज्य प्रदान किया है।

(४३४)

पुन रा सूरा प्रागवड, सत बल आतम चाह ।
परमातम पहचाणियोह, रजवट वाळो राह ।।

हे राठौड़ वीरो ! आपने मरुधरा को पुण्य का महातीर्थ प्रयाग बना दिया। आपके अन्तमन में सात्विकता की सुरसरिता प्रवाहित रही। आपने अमरता के आत्म-बोध, परम तत्व को समझा और क्षात्र धर्म का श्रेयस्कर मार्ग चुना।

(४३५)

करमयोग थां कमधजा, अतस आख पिछाण ।
निछरावळ कर नाखिया, प्रेम देस हित प्राण ।।

हे कमध्वज वीरवरा ! आपन अ तहष्टिया से कम योग की महत्ता को समझा। राष्ट्रभक्ति और स्वाधीनता हेतु आपन अपने प्राण न्यौछावर कर दिये ।

(४३६)

या समर नह आपरो, घर स्वारथ धमसाण ।
जनता सारू जूझिया, तिरथ वियो मसाण ।।

यह युद्ध वयक्तिक स्वाथ सत्ता के प्रलाभन या स्वाथ सुख क लिए नही था। आपने तो मानवता के परित्राण हेतु दुधप सघप कर श्मशान को भी अपन बलिदानो से तीथ बना दिया ।

(४३७)

जेत कूप रण जूझ ने, उपकृत कीधा आप।
अणथग दीसै ऊजळो, आगम वगस्यो आप ॥

राष्ट्र देवता के समर्पित आराधक परमवीर जैता ने एक ऐतिहासिक निर्णायक युगान्तकारी युद्ध मे जुझारू बन कर मरुधरा को शाश्वत रूप से उपकृत किया। आपके अपूर्व वलिदानो से जन्मभूमि का अनन्त भविष्य ज्योतिमय हो गया।

(४३८)

मरुधर या महराजवत, नित नित वधते नूर।
गावैह जन गमेज सू, लोया रगी लूर ॥

पराक्रमी महराज के परम दानवीर युद्धवीर और कर्मवीर सुपुत्र कूंपा के आत्म वलिदान से मरुधरा की तेजस्विता निरन्तर विराट होने लगी। तभी तो आने वाली पीढिया आपसे प्रेरित होकर राष्ट्र रक्षाय रक्त रजित होकर उल्लास पूण युद्ध गान गाती रही।

(४३९)

पोया मोती प्रेम रा, जबर जूझिया जग।
समर सपाडा सूरमा, लोया धोया अग॥

हे महायोद्धाओ! आपने शत्रुओं के शोणित मे स्नान कर अपने अग प्रत्यगो को पावन बना दिया। आपकी राष्ट्रभक्ति के कारण आप जनमानस की प्रेममय मुक्तामाला बन गये।

(४४०)

मरजादा धर मरुधरा जुग जुग रख जीवत।
जस रा धूसा जोय लो, घर घर आज घुरत॥

राठौड वीरा ने मातृभूमि मरुधरा की जो अक्षुण्ण मर्यादा रखी वह स्वर्णिम महामानवीय दृष्टात युग युगों तक हमे अनुप्राणित करेगा। आज प्रत्येक घर मे ऐसे महावीरा के बलिदान के यशोगान विजय गीत गूज रहे हैं।

(४४१)

सम्यता ग्रर सस्कृती, रखवाळी ग्रक्सीर।
जेत कूप रण जूझ ने, वियाह सुरग वहोर॥

गिररी के महाभारत म जब हमारी सम्पूण ग्रस्मिता सक्टग्रस्त थी तो जैता ग्रौर कूपा राज्य सत्ता के निए नही, हमारी विराट मानवीय सम्यता ग्रौर ग्राध्यात्मिक सस्कृति की रक्षा करते हुए सहप स्वग सिधार गये।

(४४२)

ग्रखम इनसा ग्राख ने, दीधी रोशन दीठ।
मानीता महराजवत, मिनखा जीवण मीट॥

स्वाथ मे ग्रधे कायरो को तपस्वी महराज के तेजस्वी पुत्र कूपा ने विवेक की दृष्टिया प्रदान की। व ग्राज इसलिए ग्रभिनन्दनीय है क्योकि उन्होने हमे पलायन की मानसिक्ता मे मानवता का ठोस घरातल प्रदान किया।

परथक दरिया प्रेम रा, पर दुख भजण हार।
जूझारा सह जगत रो, मुजरो ने मनुहार॥

हे महान जुझारू राष्ट्रपुरुषो! आप तो राष्ट्र भक्ति और लोक साधना के प्रेम के पारावार है। आपने सम्पूर्ण जगत के कल्याण हेतु जूझ कर मरण का वरण किया था। हम आपका अभिनंदन पूर्वक सादर आह्वान करते है।

(४४८)

धूड़धाणी धर वापरी, अबखो पुठ है आज।
कमर कस फिर आवजो, सज समर रो साज॥

मानवीय मूल्य धरा ध्वस्त हो गये है। सामाजिक नतिकताएँ नष्ट हो गई हैं। सवत्र अराजकता है। ऐसे आत्मघाती सवनाशी सक्रमण काल में आप फिर कटिबद्ध होकर धर्मयुद्ध के लिए पधारिये।

वन मे भ्रावा मोरीया, खल दळ खावै सार ।
मगळ करए महराजवत, पाछो धरा पधार ॥

मरुधरा के आम्रकुंजो के फल विनष्ट हो रहे है, कोकिला कहाँ है ? दुष्टो के दल हमारी सम्पन्नता को लील रहे है । हे महराज के पुन कृपा ! इस अराजकता अत्याचार को समाप्त करने फिर धरती पर अवतार लीजिये ताकि शिवत्व और मांगलिकता की स्थापना हो ।

(४५०)

भ्रागम वगिया भ्रापरी, रोसीला रखवार ।
दीसे डगमग डूबतो, मिनखपणो मझधार ॥

आपने अपना रक्त सिंचित कर जो भविष्य का नन्दन कानन रचा था । उस पर अब दुराग्रहियो, पूर्वाग्रहियो का अवैध अधिकार हो गया है । मानवता का विराट जलपोत अव्यवस्था के उपद्रवी समुद्र मे डगमगा रहा है । हम मझधार मे न डूब जाये । आप अब तो पधार ही जाइये ।

(४५१)

सुरसुरी सहकार रोह, भर भारत भरपूर ।
कूपा आ नर केहरी, दाळद काढण दूर ॥

सुरसरिता गगा की प्रदूषित फेनिल उर्मिया व्यथा से पुकार रही है । ओ सिंह पुरुष कूपा ! आप पुण्य भूमि भारत की दरिद्रता को दूर करने अवतार लीजिय ।

(४५२)

जलम भोम सुरगा सिरै, करतब पथ कमधेस ।
मत सुमत महराजवत, दीप जगमग देस ॥

कमधेश परात्रमियो ने अपनी मातृभूमि मरुधरा को सदव स्वग से भी श्रेष्ठ माना । इसलिए वे नर देह धारण कर भी जुझार बन देव तुल्य अमर हो गये । महराज के सुपुत्र कूपा तो इतने दानवीर मानवतावादी, क्षमाशील, उदारचेता महायोद्धा थे कि उनके चरित से आज सम्पूण देश आलोकित है ।

(४५३)

नव कुसुम नर केसरी, फळ सजळ फुलवाद ।
मा विमल महराजवत, इधको पुळ कर याद ॥

हे महराज कुल दीपक कूपा ! आपने अगणित बनिदाना से मरुधरा को ज्ञान समृद्धि सिद्धिया का मधुवन बनाया । जिसमे सुकुमार सरस पुष्प-फला सी पीढिया पल्लवित पुष्पित फलित हुई । वे आज सकट वेला मे कमकती कराहती, सिसकती आपको पुकार रही है कि हमारे निश्छल निमला तपोपूत आराध्य पधारिये ।

(४५४)

झुरती जूण जीवाडवा, जैत कूप रथ जूत ।
हालण हाळो हरोल मे, रण बका रजपूत ॥

आज फिर मानवता की ज्योति प्रकपित, क्षीण, मन्द बुझने वाली है । हे महारथी जैता व कूपा ! आप राष्ट्र रथ मे जुत कर अग्रिम पक्ति मे रण बाकुरे बन पधारिये ।

(४१५)

जागरण याह देस मे, जेता कूपा जोय ।
हमकार तने हेल सू, तुरत पुकारै तोय ।।

सम्पूण दश अनाचार से क्षत विक्षत आहत है। मरुधरा वीर विहीन न हो जाये। इसलिए हम आपका करुणा स आह्वान कर रहे है, आप शीघ्र पधारिये।

(४४६)

जगत गुरु पद प्रेम रो, दीपत राखण देस ।
विपत पुळ रा वाहरू कद आसो कमधेस ।।

हे कमधेश राष्ट्र भक्त ! हम पाप, अपराध अधम से उत्पीडित ह। इस देश का सघन अ धकार मे मुक्त कर आलोकित करने और विश्व म जगदगुरु के पद पर आरुढ करने पधारिये।

(४५७)

कुंकुम पगल्या राज रा, सह जन पूजणहार ।
जतम भोम हित जू भवे, जा जरणी बलिहार ।।

जन्म भूमि के परित्राण हेतु प्राणोत्सर्ग करने अपनी हतप्रभ जननी को कृतार्थ करने आप पधारिये। हम सभी आपके कुंकुम सज्जित पावन श्रीचरणों के आगमन एवं वन्दन के लिए आतुर हैं, कातर हैं, विह्वल हैं।

(४५८)

हरि सुमरण कर हेत सू, रूपक मरुधर रेत ।
आजादी रै आंगणै, खेडै हळधर खेत ।।

आपके शौर्य और पुण्य प्रताप से मरुधरा की सुरक्षित, शांत, रचनाशील प्रजा भक्तिभाव से हरि स्मरण करती है। बालू मिट्टी सम्पन्नता, रुपाली रेणुका बन गई है। हम सभी स्वाधीनता के उन्मुक्त वातावरण में अपने खेतों को शस्य श्यामल बना रहे हैं।

(४५९)

सर्वाग सुदर जीव रीह, रीती नीती जोम ।
मिनख धरम महराजवत, कीधो ऊजळ कोम ।।

हे महराज के महान सुपुत्र कृपा ! आपने दानवीरता समता और आत्म बलिदान से मरुवासियो को प्रशस्त कर दिया । हम सर्वाग सुन्दर मगलमयी सिद्धिदायिनी नीतिया का पालन कर मानवता के आदर्शो पर अटल है ।

(४६०)

जोवै बाहट झूपडा, अन्न धन आटो पाट ।
भव भव भारत देस मे, थिरचक सुख रा थाट ।।

आपके पराक्रम और धममय सरक्षण से झापडे खुशहाल हैं । अन्न धन के अखूट भण्डार रहे हैं । भारत के नगर-नगर व डगर डगर मे सुख का स्थायी वैभव स्थापित हो गया ।

(४६१)

करवा आवो कमधजा, भरवा भारत भाव।
सुख्यारत सह देस ने, अतस मनो उमाव ॥

हमारे उदास, हताश, निराश अन्तमनो मे उल्लास और उमग की एक ही आशा किरण है कि आप फिर पधारेंगे, भारत का राष्ट्रीयता से विभूषित और जन-जीवन को शुभ लाभ प्रदान करे। विश्व मे हमे फिर महान देश के रूप मे प्रतिष्ठित करेग।

(४६२)

हर हेरया हर न मिळै, हर हर फिरो हमेस।
जीवत आरया जोय लो, हर तो भारत देस ॥

देवाधिदेव हर हर महादेव को हम राष्ट्र के शिवत्व हेतु खोज रहे ह। मगर हम इस स्थूल तलाश से निहारते खोजते थक जाते है, हमेशा हार जाते है। काश हम भौतिकता के मोहभग से अपने राष्ट्र देवता को निरखते तो हमे साक्षात शकर के दशन हो जाते।

लाखा ने ललकारया, कापो द्वेस कळेस ।
लहरावो मिळ लाडला, सागर क्षीर सुदेस ।।

आज फिर हम क्लेश से अभिशप्त है । दिशाहीन भटक रहे हैं । लाखा अभाव अभियोगा ने हमे ललकार दिया है ता क्या हम आत्म तत्व का क्षीर सागर मथन करे । हमारे ध्वज शिखरा पर धम की ध्वजा फहरायें जो हमारे बलिदानियो ने स्थापित की थी ।

(४६४)

फहरावो धर री धजा, वाणी विमल विसेस ।
सूक्ष्म सरीरा उच्चरै कूप जेत कमधेस ।।

दवलोक वासी जता व कू पा अगर साक्षात अवतरित नही होते हैं तो उनके सूक्ष्म शरीर अर्थात आत्मतत्व मे अपने को ऊर्जस्वित और अनुप्राणित कर अपनी वाणी को उनके पुण्य स्मरण से म त्रा मी पवित्र बनाकर धम की ध्वजा फहरा सकते हैं ।

पावस भला ही पावसैं, कदे न मिटै कळेस।
परसेवो जद पावसैं, साजळ हुवै सुदेस॥

इस प्यासी मरुधरा पर सजल मेघ चाहे जितनी रस वर्षा करे। मगर हमारे क्लेश धुल नही पाते। यदि हम परोपकार करें, लोक सेवा करें तो अमृत की वर्षा होगी और हमारा राष्ट्र सम्पन्न सात्विक सरस हो जायेगा।

(४६६)

डग डग भारत देस री, धजवड फाबै धाप।
लागो सारा साडला, इसा क्राम मे श्राप॥

आज भी इस महान राष्ट्र मे क्षात्र धम के शौय की सुखद रगोलिया चित्रित है। हे देश भक्तो! अपनी वलिदानी परम्पराम्रा के अनुसार रचनाशील वन जाओ।

(४६७)

नव युग रा निरमाण में, हरवल हाले देस।
सत अखियो सदेस या, कूप जेत कमधेस ।।

कमधेश कर्मयोगी सन्त स्वभाव के धर्मयोद्धा वीरवर जैता और कूंपा ने अपने समर्पित राष्ट्र भक्ति साधना से यही सन्देश दिया है कि हम देश म नवयुग की रचना म अग्रिम पंक्ति म कार्यरत रहना चाहिये।

(४६८)

गिररी गौरव राज रो, सयम नेक सरूप।
मालदेवो समर छोड, भाग गयो जद भूप ।।

गिररी के ऐतिहासिक राष्ट्र के निर्णायक महासमर मे जोधपुर के राव मालदेव जब युद्धभूमि से पलायन कर अपने महलों म चले गये। तब जैता, कूंपा, अखराज सहित हजारो क्षत्रिय वीरो ने अपार सयम, धैर्य दृढता का अपूर्व दृष्टान्त रखा।

(४६६)

उर बिरदाळा आपरै, वधियो वीर विवेक ।
रगत मसी सू राठवड, लिखिया नवजुग लेख ।।

हे राठौड वीरो ! आपके प्रशस्ति गान मेरे हृदय मे निर्भर से उमड रहे हैं। आपका विवेकपूर्ण स्थितप्रज्ञ स्वरूप नेत्र पटलो मे अंकित है। आपने अपने लहू से जो आलेख लिखे उससे भारत मे नवयुग का निर्माण हुआ।

(४७०)

अनडा प्राण अरपियाह, जैता कू पा जोय ।
सूरा समवड राज री, कर नह सकियो कोय ।।

अपराजेय सुभट्ट शिरोमणि द्वय जैता और कू पा ने जिस साहस से मातृभूमि को अपने प्राण न्यौछावर किये। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास मे दुर्लभ है। वे अद्वितीय विलक्षण महामानवीय योद्धा थे।

(४७१)

जेत झुकणो नह जाणियो, रुकणो रजवट राह ।
मरण मगळ महराजवत, समर लडण भड चाह ।।

सकल्पसिद्ध, परम स्वाभिमानी और विलक्षण साहसी जैता ने कभी नत शीश होना स्वीकार नही किया। चाहे क्षत शीश ही क्या न हो। वे तो क्षात्र धर्म के मार्ग सदैव अग्रगामी रहे। महराज सुत कूपा तो सदैव महायुद्धो मे मृत्यु के आलिंगन को मागलिक मानते थे।

(४७२)

समर गिररि सुमेल मे, घाता रगत अतोळ।
रग दी राता रग मे, अवनी ओळा ओळ ।।

गिररी सुमेल के महासमर म घात प्रतिघातो, प्रबल प्रहारा से रक्त की अन त धारा प्रवाहित हा गई। शुष्क अनुवर मरुभूमि शोणित रक्ताभ दलदल म बदल गई।

(४७३)

सरगम सिधु राग रो, स्मर गिररी सुमेल ।
लोया छकिया लाडला, माथ हथाळी मेल ॥

गिररी सुमेल के प्रचण्ड रण मे सिन्धु राग (वीरता की राग) के स्वर अम्बर तक प्रतिध्वनित होने लगे। राष्ट्र के प्रिय जननायक वाद्यो की अपेक्षा अपने कर तला मे शीश धारण कर झूम उठे।

(४७४)

पत अरिया रा पाडिया, झडिया खागा खार ।
लडिया धर रा लाडला जेत कूप जूझार ॥

प्रबल जुझारु वीर शिरोमणि जा क्षत्रियो के अभीष्ट सेनापति थे, मरुधरा के दुलारे पुत्र थे। उन्होने अपनी पनी तलवारो से शत्रुओ के बलशाली शरीर खण्डित कर दिये। अपने पराक्रम से उनके दंभ को कुचल दिया।

(४८३)

मरुवाणी महराजवत, हियँ हुलस भर हेत।
गासी थारा गीतडा, रूपाळी मरु रेत।।

तपोपूत महराज के वीर पुत्र कृपा की मरुधर भक्ति गाथा से हमारे हृदय, उल्लास और अपार श्रद्धा से भाव विभोर हो जाते है। उनके गौरव गान राजस्थान की रजत रेणुका का कण कण गाता है।

(४८४)

अे खेजड अे बावळा, कुमटियाह रा पान।
विसरै किमकर बापजो, बडभागो बलिदान।।

हे मरुधरा के सरक्षक अभिभावक! आपने जो महाप्रयाण कर बलिदान दिया। उनको मरु भूमि के जन जन तो क्या खेजडियाँ बावळिया और कुमटियो के वृक्ष झाड यहाँ तक कि उनका पत्ता पत्ता भी नही भुला सकता।

(४८५)

लूणी वाडो जोजरी, चाबल नदी अथाग।
चैत वदी तिथ पचमी, बिसरै किम बडभाग ।।

सम्वत सोलह सौ के चत्र मास के कृष्ण पक्ष की पचमी जैसे महापव पर आपने राष्ट्र भक्ति हेतु रक्त की सरिताऐं प्रवाहित की। उसे चम्वल, लूणी, वाण्डी, जोजरी नदियाँ भी विस्मृत नही कर सक्ती।

(४८६)

याद करै आडावळो, फिर फिर ने फरियाद।
बीच भवर राझा पडै, माझी मरिया बाद ।।

जस किसी नौका का खिवैया (मल्लाह) स्वगधाम मिधार जाता है और भवर के वीच हम अरक्षित आतनाद कर उसे पुकारते हैं। वसे ही आज अबु दाचल सक्ट काल मे आपके आगमन की प्राथना कर रहा है।

(४८७)

आभो पुळ न आथडै, जाम्या धरती जाम।
दरद न जाणै देस रो, किण दिन आसी काम।।

जिस महती धरा ने हमें जन्म दिया है उस पर घोर सकट आने पर भी हमारा पौरुप नहीं जागृत होता। हम राष्ट्र की पीडा को अनुभूत नहीं कर सकते, जडवत हो जाते है तो हमारा जीवन किस काम का है, व्यर्थ ही तो है।

(४८८)

जेता कूपा राज तो, जुग जुग पूजण जोग।
पासी पल पल प्रेरणा लाखीणा धर लोग।।

पराक्रम के चरम स्वरूप जेता व कूपा के महाबलिदान तो सदैव वन्दनीय रहेंगे। उनके राष्ट्र भक्त चरित्र से हम प्रतिपल प्रेरित होंगे।

इण धोरा इण ढाणिया, मदरा गहकँ मोर।
चहकँ चिडिया साथरी, सुर सुर जस रो शोर ।।

आपके बलिदानो और अदम्य शौय से उल्लसित ये धोरे (बालू के टीले) और ढाणिया (मरु आचल मे बसे लघु ग्राम), यहाँ तक मयूर और चिडिया भी मधुर कलरव मे आपके गीत मुखरित करती हे।

(४६०)

अे गाया अे गवाळिया, भाण उगतँ भोर।
सुमरण सूरा रो करँ, ओर न दूजो ओर ।।

सूर्योदय होते ही स्वर्णिम सुरभित प्रभात मे गायें और ग्वाले किसी अन्य की नही, आपकी प्राथनाए गाते ह। स्मरण कर धन्य होते हैं।

(४६१)

जाळ जाळ सूरा जठै, गौरव गीत गमेज।
मातृ भोम हित मरण ने, अतस मन अगेज॥

जाळ (पीलू) की अनन्त झाड़ियाँ आपके गौरव गीतों को निनादित करती झूमती हैं। आपने मातृभूमि के लिए मरण का वरण किया। उस शौर्य की छवियाँ उनमें प्रतिबिंबित है।

(४६२)

पीवडियाँ घणो घराह, केसरिया कमधेस।
लावद रण लिलाय ने, दीपत राख्यो देस॥

जब केसरिया धारण कर कमधज वीर रण प्रस्थान करने लगे तो सुहागिनियाँ धन्य हो गईं। सौभाग्यवती सुहागिनियाँ गर्व स्वयं उन्हें कन्धाओं से सज्जित करने लगीं।

(४६३)

सुरपुर साथै चालणो, हिळ मिळ मरणो हेत ।
ध्याणो धरती धावना, रिळमिळ जाणो रेत ।।

वीरो की क्षत्राणी सौभाग्यवतिया ने सकल्प किया कि वे भी अपने प्रियतमा की वीरगति से, जौहर से उनके साथ ही स्वर्ग मे प्रयाण करेगी । अपनी धरित्री की रक्षा हेतु हमारे तन इस माटी मे रम जायेंगे इससे अधिक अहोभाग्य क्या होगा ।

(४६४)

अरि नेडा धर आवता, अतस भर अमरेस ।
जेतो कूपो जूझिया, क्रोधीला कमधेस ।।

जब विशाल शत्रु दल को निकट आते देखा तो जैता व कूपा के हृदय मे साहस का अमृत छलकने लगा । कमधेश महावीरो ने प्रचण्ड रौद्र रूप धारण कर जुझार सग्राम किया ।

धारा तीरथ मे धस्या, दोजख मेटण देस ।
जेत कूप नर केसरी, केसरिया कमधेस ।।

कमधेश परमवीर जैता और कूपा ने केसरिया धारण कर सिंह पुरुषो की भाति अपने राष्ट्र को पराधीनता की नारकीय यातना से मुक्त करने हेतु असिधाराओ को तीथ यात्रा मान कर उाम प्रवल आवेग से प्रवेश कर गये ।

(४६६)

विपत वोळावू देस रा, सीस दात दातार ।
जामण भला जामिया, जेत कूप जूझार ।।

हे महान जननिया ! आप धन्य हैं। क्योकि आपने जता और कूपा जैसे सुभट्ट सेनापतियो को जन्म दिया । जो राष्ट्र पर सकट आने पर अपने शीश समर्पित कर बलिदानी जुझार बन गये ।

(४६७)

हलराया धन हालरा, मरण सिखायो माय ।
वरण मौत री बींदणी, गौरव लोरी गाय ।।

ऐसे शौर्य के मातण्डा को उनकी शक्तिस्वरूपा जननियों ने पालने में झुलाते समय यही लोरी सुनाई कि हे अमृतपुत्रो तुम युद्ध में मृत्यु रूपी वधु (बींदणी) का वरण कर हमें गौरवान्वित करना ।

(४६८)

गौरव गुटकी राज री, समर भज सिर साज ।
मर ने राखी मरुधरा, लाखोणी कुळ लाज ।।

महासमर में अपने शीश समर्पित कर आपने गरिमा को भी गौरवान्वित कर दिया । आपके महान कुल की मर्यादा आपने मरुधरा की रक्षार्थ आत्म बलिदान देकर निभाई ।

(४९९)

रण मरण थो राज रो, आवै पल पल याद ।
दीधो मर ने देवता, खत्रवट पोधा खाद ॥

प्रचण्ड सग्राम म आपका प्राणोत्सर्ग हम प्रतिपल ऊर्जस्वित अनुप्राणित करता है। हे रणदेवता ! आपने अपने मरण से क्षात्र धम के विशाल वट वृक्ष का खाद समर्पित की।

(५००)

नव अकुर उगसी अबे सह नसवर ससार ।
मातृ भोम इण मुलक रो, भुजा झेलणा भार ॥

आपके अमर बलिदानो से इस नश्वर ससार मे अमृत पुत्रो के नव अकुर विकसित होंग। जो अपनी विशाल सुन्ढ बाहुओ म मातृ भूमि पर आनान्त भार को झेल सकेंग।

(५०१)

सूरा गिरी सुमेल रो, वदण वारमवार।
ओल्यू करेह आपरी, धरती धारो धार ॥

गिररी सुमेल महासमर के प्रचण्ड शौय शिरोमणिया! हम आपकी सतत वन्दना करते हैं। आपके वनिदानो मे भावविभोर होकर यह मातृभूमि अश्रुधारा प्रवाहित करती आपको स्मरण करती है।

(५०२)

शाह शेर अध सेर कर, अरि दल ने भकभेर।
माथ अमप महराजवत, शिव गळ कियो सुमेर ॥

शिवभक्त महराज के शिव वरदान से प्राप्त पुत्र कू पा ने शेरशाह सूरी की अस्सी हजार सेना को काट कर आधा कर दिया। शत्रुदल कापने, भयातुर भागने लगे। कू पा ने इस महासमर मे अपना शीश अर्पित कर दिया। जो भगवान शकर के कण्ठ मे शोभित मुण्डमाला का सुमेर (मुख्य मणिका मुण्ड) बन गया।

(५०३)

जेता डका जीत रा, अणहद माड्या अक ।
सूरा गिरी सुमेल रा, लागा जस रा लक ।।

महा सेनापति जता ने विजय क ऐम नगाड़े बजाये कि अम्बर कम्पित हो गया । सुमेल गिररी मे महाभारत म उनका बलिदान भारत की पावन यशो गाथा बन गई ।

(५०४)

मद अरिया रो मारियो, अरि दल समर अरोड ।
जेता कूपा जोरवर, रण बका राठौड ।।

रण म सदव बाकुर रहने वाले राठौड महावीर जता और कू पा जो महापराक्रमी थे, उन्होने शेरशाह सूरी के दभ का दमन, शत्रु दल का भयावह सहार किया ।

(५०५)

धन धन धरती मरुधरा, रजपूती धन रीत ।
जुग जुग रहसो जीवता, गरबीला जस गीत ॥

जता और कूपा जसे महावीरो के कारण मरुधरा की धरती धन्य हो गई। क्षात्र धम की मर्यादा अधिक उज्ज्वल बन गई। ऐसे बलिदानी राष्ट्र भक्तो के गौरव गान युग-युगान्तरो तक गाये जायेंगे।

(५०६)

शिव बोल्या ऊमा अहो, इरण मे रच न कूड ।
कीधी कूप कैलाश मे, धारा चावी धूड ॥

देवाधिदेव महादेव शकर ने जगज्जननी पावती से गद् गद् होकर कहा—न यह असत्य है, न भ्रम कि कूपा ने कैलाश पवत को असिधारा की रक्त रजित रेणुका से शोभित कर दिया है।

(४०७)

पचायण रो पूत या, जेतो योगी अरोड ।
परम पद ने आलयोह, सठ दल रो कर सूड ।।

महावली पचायण के सुपुत्र महासेनापति जता तो वास्तव मे स्थित प्रज्ञ योगी के समान है। जिन्होने दुष्टो के दल का पूर्ण दमन कर परमपद (मोक्ष) को सहज ही प्राप्त कर लिया है।

(४०८)

जेतो कूपो जामिया, मरुधर दाय महेश ।
रगत रतबर आवियाह, केसरिया कमधेस ।।

केसरिया धारण करने वाले कमधेश महावीर जैता और कूपा ने मरुधरा मे जन्म लेकर बालू मिट्टी को रक्ताम्बर (लाल वस्त्र) सा धारण कर साक्षात शकर के अनुयायी बन गये। वे सहज शिवत्व को प्राप्त हो गये।

(५०६)

भूतेसर द्रग भाळिया, या नह दीधी पीठ।
हरवल पगला हालिया, होता गया मजीठ॥

भूतेश्वर भगवान शकर देख रहे थे कि जैता और कूपा जैसे महापराक्रमी ने शत्रु की अपार सेना को अपनी पीठ नही दिखाई। वे अग्रिम पक्ति मे अगणित प्रहार झेलते आगे बढते रक्त वर्ण (लहू लुहान) हो गये।

(५१०)

सिर कट धड लडिया समर, वा रा अमर वखाण।
जेते कूपै थरपिया, कीरत रा कमठाण॥

जो शीश खण्डित हो जाने पर धड से प्रबल दुधर्प युद्ध करते है, उनके पुनीत आख्यान अमर हो जाते है। जैता और कूपा ने ऐसे जुझारु स्वरूप से धरित्री पर अपनी कीर्ति के स्तम्भ स्थापित कर दिये।

(५११)

लहर लहर लहरावता, बाजरिया रा पूख।
ओल्यू करसी आपरी, रगता हरिया रूख ॥

हे जता और कूपा ! आपके पावन रक्त से सिंचित बाजरी के सिट्टे और हरित वक्षो की शाखाए लहरा लहरा कर आपको स्मरण करते है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

—आर पी व्यास

मध्यकालीन मारवाड की सामाजिक व्यवस्था मे साम त पद्धति का प्रमुख स्थान था। वस्तुत मारवाड की साम त प्रथा एक प्रकार से सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था का ही रूप थी जिसमे नेता के रूप म एक राजा होता था जो साम ता के सहयोग से राज्य का प्रशासन चलाता था। राजस्थान के अ य रजवाडा के समान मारवाड के साम त भी प्रमुख रूप से दो वर्गो म विभक्त थे। साम तो का एक वग ऐसा था जिसकी उत्पत्ति राजकुल से ही हुई थी। दूसरे वग मे समकक्ष अ य राजपूत साम त सम्मिलित थे। स्वकुलीय साम ता का राजा के साथ व धुत्व व रक्त का सम्ब ध था। वे स्वामी धम के सिद्धा त से उत्प्रेरित होकर राजा को सहायता व सहयोग देने को सदव तत्पर रहते थे और राज्य के बराबरी के हिस्सेदार होने का दावा भी करते थे। राजा की ओर से अपने भाई-बेटो को जीवन निर्वाह के लिए भूमि दे दी जाती थी जो उनकी वशानुगत जागीर के रूप मे रहती थी। इस प्रकार समय के साथ साथ ऐसे जागीरदारो की सग्या म निर तर वद्धि हाती गई।[1]

तेरहवी शताब्दी के मध्य म मारवाड अनेक छोटी छोटी इकाइया म विभाजित था। अजमेर और साभर चौहानो के आधिपत्य से मुक्त हा चुके थे, कि तु नाडोल और जालोर मे अभी भी उनके राज्य थे। चौहानो के अतिरिक्त पवार, यादव, गोहिल देवडा, सोनगरा आदि राजपूता के राज्य भी मरुभूमि मे यत्र तत्र विद्यमान थे। मेर, भील, मीना आदि अद्ध सभ्य जातियो का भी कई स्थाना पर आतक छाया

हुआ था। ऐसी स्थिति मे मारवाड म राठौड वश के सस्थापक सीहा ने पाली नगर की सग्क्षता का भार अपने ऊपर लिया था।[2] इसके पश्चात उसके पुत्र आस्थान न खेड से गोहिलो को निकाल कर वहा अपना प्रभुत्व स्थापित किया।[3] सवप्रथम खेड ही राठौडो की राजधानी बनी। आस्थान के पौत्र रायपाल ने परमारो से मेहवा जीत लिया।[4] इस प्रकार राठौडो क राज्य का विस्तार तो हुआ परन्तु अभी भी रायपाल के उत्तराधिकारियो को जसलमर के भाटो, मण्डोर के प्रतिहार, जालोर के चौहान तथा मुसलमान शासको स निरन्तर लोहा लेना पड रहा था।[5]

अभी तक मारवाड का छोटा सा प्रदेश राठौडो के अधीन था। उस समय इनकी कोई निश्चित नीति नीति प्रतीत नही होती वरन् एक विचित्र सी अराजकता से युक्त राजतन्त्र विकसित हो रहा था। विजित प्रदेशो का प्राय बटवारा हो जाता था। प्रदेश की विभिन्न इकाइयो मे सामजस्य स्थापित करने वाली किसी केन्द्रीय शक्ति का अभी तक उदय नही हुआ था।[6]

राव सीहा की दसवी पीढी मे सलखा का पुत्र मल्लीनाथ राठौड वश का एक प्रतापी शासक हुआ जिसने मारवाड के एक बहुत बडे भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। उसने विजित क्षेत्र पर प्रशासनिक व्यवस्था कायम करने का प्रथम बार प्रयास किया परन्तु मल्लीनाथ की मृत्यु के पश्चात राठौड राज्य दो शाखाओ म विभाजित हो गया। मल्लीनाथ के अनुज व वीरम के पुत्र चूण्डा ने ईदा से मण्डोर प्राप्त कर लिया था और अपने बाहुबल स नागौर तथा मारवाड के विस्तृत भू खण्ड पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।[7] खेड के स्थान पर राठोडो की राजधानी मण्डोर बनी। अब चूण्डा के वशज ही राठौडो की मूल शाखा कहलाई और मल्लीनाथ क उत्तराधिकारी शनै शन सामन्तो की श्रेणी म चले गय। इस सबध म मारवाड मे यह कहावत प्रचलित थी कि माला रा मढ न वीरम गढ' अर्थात मल्लीनाथ के वशज तो मामान्य मढयो मे निवास करन लग और वीरम के वशज गढो (दुर्गों) क वभव म रहने लग।[8]

चूण्डा के पौत्र और रणमल के पुत्र राव जोधा ने अपनी पतृक सम्पत्ति को हस्तगत करने के पश्चात उसम वद्धि करने का अभियान

आरम्भ किया। उसे आशातीत सफलता मिली।[9] उसने 1459 ई मे जोधपुर गढ की नीव डाली और मण्डोर से राजधानी बदल कर जोधपुर म स्थापित की। जाधा के काल मे राठौड राज्य की सीमा मे अत्यधिक विस्तार हो चुका था। उसके राज्य म मण्डोर (जोधपुर) मेडता, फलादी, पोकरण, भाद्राजूण, साजत सिवाना, साभर, अजमेर और नागौर के अधिकाश क्षेत्र सम्मिलित थे।[10]

इस प्रकार विस्तत राज्य की व्यवस्था करने की समस्या का प्रश्न प्रथम बार आया था। अन राव जोधा ने अपने राज्य के प्रशासन को सुव्यवस्थित करने हेतु नए सिरे से साम तशाही का गठन किया। उसन साम ता को दो वर्गो मे विभाजित किया जि हे मारवाड मे क्रमश जीवणी और डावी मिसल की सज्ञा दी गई। जीवणी (दायी) मिसल मे जोधा ने अपने भाइया को रखा तथा डावी (बायी) मिसल मे अपने पुत्रा को स्थान दिया। तदुपरा त जोधा के भाइयो की सतान सदैव जीवणी मिसल म रही व उसके पुत्रा के वशज डावी मिसल के अ तर्गत माने गये।

राव जोधा न विजित प्रदेशा को अपने भाइया व पुत्रो म विभाजित कर दिया। भाइयो को उसने निम्न प्रदेश दिये[11]—

1 राठौड अखैराज (जोधा का अग्रज) को परगना सोजत का गाँव *बगडी प्रदान किया गया।*
2 राठौड चापा को कापरडा व बनाड दिया गया।
3 राठौड डू गर को सीधलो का प्रदेश भाद्राजून दिया गया।
4 राठौड बाला-भाखर को खरला, साहली व खारडी नामक स्थान दिये गये।
5 राठौड रूपा को लाहूआ का प्रदेश चाडी दिया गया।
6 राठौड मडला का बीकानेर का सादूडा नामक स्थान दिया।
7 राठौड करना का लूणावास दिया गया।
8 राठौड पाता को करणु दिया गया।
9 राठौड बरा को परगने सोजत का दुधवड नामक स्थान दिया गया।
10 राठौड जगमाल की मत्यु युवावस्था मे ही हो गई अत उसके स्थान पर उसके पुत्र खेतसी को नेनडा नामक ग्राम दिया गया।

इसी प्रकार राव जोधा ने अपने पुत्रों को भी विजित प्रदेश के कुछ गाव दिये जिनका विवरण निम्न प्रकार से है[10]—

1 ज्येष्ठ पुत्र नीवा को सोजत दिया गया था लेकिन नीवा की कुवरपदे मे ही निःसन्तान मृत्यु हो गई थी।
2 वरसिंघ व दूदा को मेडता दिया गया।
3 बीका व बीदा को जागलू दिया गया।
4 भारमल और जोगा को ऊहडो का कोढणो दिया।
5 शिवराज का पहले सिवाना दिया था परन्तु बाद म दुनाडा दिया गया क्योंकि शिवराज सिवाना पर अधिकार करन मे असमर्थ रहा।
6 कमसी और रायपाल को जोधा ने नाहाडसरा नामक ग्राम दिया।

उपर्युक्त विवरण नैणसी ने अपने ग्रन्थ मारवाड रा परगना री विगत' मे सविस्तार दिया है। जोधा के भाइयो और बेटो की सन्तान मे से मारवाड के स्थायी सिरायत सरदारो का उदभव हुआ था। जोधा के भाई चापा के उत्तराधिकारी चापावत कहलाये। चापावतो मे आहुआ और पोकरण के सरदारो का विशेष महत्व रहा। जोधा का अग्रज अखराज था जिसके दो पुत्र महराज और पचायण थे। महराज के एक पुत्र कूपा हुआ। जिसस कूपावत राठौडो की शाखा चालू हुई। प्रारम्भ म प्रधानगी का पद कूपावतो के पास रहा। बाद मे चापावतो की प्रधानगी रही।[13] चापावतो म भी अधिकतर पोकरण के चापावत सरदार ही इस पद पर आरूढ रहे। पचायण के एक लडका जता था जिससे जतावत राठौडो की शाखा आरम्भ हुई। बगडी के जतावतो का ही मारवाड मे नये राजा के राजतिलक के समय तिलक करने का अधिकार था। जोधा के दो लडके दूदा तथा कमसो तथा पौत्र ऊदा के नाम पर क्रमश मेडतिया, कममोत व ऊदावत राठौड शाखाओ का प्रचलन हुआ। ये सभी सरदार मारवाड राज्य के स्तम्भ समझे जाते थे और इन्हे सिरायत के सरदार के नाम से सम्बोधित किया जाता था। चापावत, कूपावत, जैतावत तथा करनात जोधा के भाइयो के वशज थे अत वे जीवणी मिसल के सामन्त थे। जबकि उसके पुत्रो से चलने वाली शाखाओ के सरदार जैसे मेडतिया, ऊदावत, कमसोत आदि की डावी मिसल मे गणना होती थी।[14]

उपयुक्त सामन्त अपने अपने प्रदेशो मे अर्द्धस्वतन्त्र शासक थे। नतिक दृष्टि से वे शासक की सैनिक सहायता देने के लिए बाध्य थे।[15] कर के रूप मे उन्ह कुछ धन राशि राजा को प्रेषित करनी पडती थी जिसे 'रेख चाकरी' कहा जाता था। चाकरी का अर्थ राजकीय सेवा से है। 'रेख चाकरी' के अतिरिक्त उन्ह अन्य कई चाकरिया करनी पडती थी। राव गागा के समय म 'लकड चाकरी' का उल्लेख हुआ है।[16] इस चाकरी क अनुसार सामन्त को निश्चित मात्रा मे ईंधन योग्य शासक की सेवा म प्रेषित करनी पडती था।

सामन्ता की एक पृथक श्रेणी मालानी के ठाकुरा की थी। मल्लीनाथ के नाम पर प्रदेश का नाम मालानी पडा। मल्लीनाथ के वशज वीरमदेव के वशजा से पूर्व ही मालानी म शासन करते थे। कालान्तर मे जोधपुर शाखा के राठौड शक्तिश नी हो गय। मालानी के राठौडो को अपन पारस्परिक झगडो का निपटाने मे जोधपुर शाखा की मध्यस्थता की आवश्यकता पडती थी। साथ ही बाह्य आक्रमणा के समय भी जोधपुर शाखा की सहायता लेनी पडती था। अत परिस्थितिवश उन्होने जोधपुर के राजा क प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया और वे एक नाम मात्र की धन राशि जोधपुर दरबार को देने लग थे। उनसे और किसी प्रकार का कर नही लिया जाता था। आवश्यकता पडन पर मालानी ठाकुर भी महाराजा को सेवा म सेना सहित उपस्थित होते थे। शनै शन मालानी प्रदेश पाच मुख्य ठिकाना म विभाजित हो गया। जसोल बाडमेर और सिंदरी के ठिकाने तो मल्लीनाथ के वशजा के पास रहे गौर नगर तथा गुढा के ठाकुर मल्लीनाथ के अनुज जैतमल क वशज थे। कालान्तर मे बाडमेर पुन चौहटन, मेतराव, वैसाला और सिंग्रानी को छोटी इकाइया मे विभाजित हो गया।[17]

सैनिक सेवाओ द्वारा भी जागीर प्राप्त की जा सकती थी। उस समय शासक सभी सेनापतिया को भूमि के रूप मे वेतन देते थे। उनके उत्कर्ष एवम् पतन के साथ ही उनकी जागीर का उत्थान या पतन होता था। कई बार उनकी सेवाओ को ध्यान मे रखकर राजा उस जागीर को उनकी भावी पीढी को भी प्रदान किया करता था।[18]

राठौडो के अतिरिक्त अन्य राजपूत जातियो के सामन्त भी होते थे। इनमे कुछ राजपूत तो व थे जिनका मारवाड के विभिन्न क्षेत्रा

पर राठौडो के आगमन के पहले से ही अधिकार था। राठौडो की शक्ति का सामना न करने की स्थिति मे उन्होने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, परन्तु उनकी भूमि पूर्ववत उन्ही के पास रही।[19] वे कर के रूप मे मारवाड के शासक को कुछ धन देते थे तथा समय समय पर शासक की सेवा मे भी उपस्थित होते थे। इदा, भाटी, चौहान तथा तवर उनमे प्रमुख थे। कुछ ऐसे राजपूत भी थे जो मारवाड क्षेत्र के निवासी नही थे फिर भी उन्हे जागीर प्रदान की गई थी। उनका राजाओ से वैवाहिक सम्बन्ध होता था। जिन्हे मारवाड मे गनायत कहा जाता था। भाटी तवर, जाडचा आदि इसी श्रेणी मे आते थे। झाला जता की बेटी सरूपदे का विवाह राव मालदेव से हुआ था, इसलिए मालदेव ने जता को खैरवा का पट्टा प्रदान किया था।[20] पडौसी शासको से रूठ कर आये हुए राजपूतो को जागीरे दी जाती थी। राणा उदयसिंह का ठाकुर बालेसा सूजा नाराज होकर मालदेव के पास चला आया तब मालदेव ने उसे खैरवा के पट्टे मे से कुछ गाव जागीर मे दिये थे।[21]

जागीरदारो मे एक अन्य श्रेणी भी थी जिन्हे भोमिया जागीरदार कहते थे। उन्होने सीमान्त क्षेत्र की रक्षा के लिए या गावो की सुरक्षा व उन्नति तथा अन्य सेवाओ के बदले जागीर प्राप्त की थी। जागीर के बदले वे एक छोटी रकम 'फौजबल' या 'खिचरी' लाग के नाम से जोधपुर दरबार को देते थे। इसके अतिरिक्त उन्हे सरकार की ओर किसी प्रकार की सेवा नही करनी पडती थी। मारवाड मे साचोर क्षेत्र के चौहान अधिकतर इसी वर्ग के जागीरदार थे।[2]

इस प्रकार राव जोधा के समय से सामन्ती व्यवस्था कायम हुई जिसका विकास शनै शनै होता रहा। राजकीय परिवार की शाखाए व प्रतिशाखाए निर्मित होती गई। बीसवी शताब्दी तक पहुँचते पहुँचते मारवाड की अस्सी प्रतिशत से भी अधिक भूमि जागीरदारो के पास थी। मारवाड मे स्वकुलवशीय (राठौड) सामन्त प्रारम्भ मे बडे शक्तिशाली थे। उनका राजा के साथ सम्बन्ध भाई बन्धु का था न कि स्वामी और सेवक का। ये सामन्त घरेलू और राजनीतिक सभी मामलो मे सामाजिक समानता का दावा करते थे। राज्य को वे पैतृक सम्पत्ति के रूप मे मानते थे। सामन्त युद्ध मे राजा की सहायता करते

थे उसके पीछे भी यह भावना निहित थी कि वे अपनी पतृक सम्पत्ति की सामूहिक रूप से रक्षा करने हेतु ऐसा कर रह है।[23] सभी राठौड़ अपने अधिकार के लिए सजग थे। उनम एक के प्रमुख होन के फलस्वरूप वह राजासन का अधिकारी था। राजा का भाई-बेटा के साथ उदारता का व्यवहार रहता था और उसके भाई व-धु स्वामीधम' व 'स्वामीभक्ति' के सिद्धान्त से प्रभावित थे। अत वे सदैव राजा की सेवा मे तत्पर रहते थ।

मारवाड मे प्रारम्भ मे केन्द्र की शक्ति कमजोर थी। सामन्तो की मनाह मे ही राज्य के महत्वपूर्ण विषयो पर निणय लिया जा सकता था।[24] यहा तक कि राजसिंहासन पर सामन्तो की सहमति से ही कोई आरूढ हो सकता था। राव जोधा के बाद उसके उत्तराधिकारी जोगा को गद्दी न देकर सातल का सिंहासन पर बैठाया गया था। इसी प्रकार राव सूजा ने अपन पौत्र वीरम को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था, किन्तु सामन्तो ने उसे सिंहासन के लिए योग्य नही समझा और उसके स्थान पर उसके भाई गागा को गद्दी प्रदान कर दी। इसीलिए मारवाड मे इस सदभ मे एक कहावत प्रसिद्ध थी—'रिडमला थापिया जिक राजा' अर्थात राव रणमल के वशजो की सहायता से ही मारवाड के सिंहासन पर कोई आरूढ हो सकेगा।[5]

राव मालदेव ने केन्द्र की शक्ति को बढाने का प्रयास किया था। उसने सामन्तो की शक्ति का कुचलना चाहा और उन्ह पूणतया केन्द्र के आश्रित करने का अभियान चलाया था। उसे केवल अस्थायी सफलता मिली थी। वस्तुत उसे अपनी इस नीति के दुष्परिणाम भुगतने पड़े थे तथा क्षति उठानी पडी थी। शासक के प्रति सामन्तो के मन मे शका उत्पन्न हो गई। मालदेव की इस नीति के कारण ही उसे शेरशाह के विरुद्ध मेडता के पास युद्ध करना पडा और पराजय का भीषण कष्ट उठाना पडा था।[6]

सरदारो की शक्ति का महत्वपूर्ण राज उनकी स्वय की सेना का होना था। राजा की स्वय की सेना बहुत कम होती थी। प्रत्येक जागीरदार अपनी हैसियत के अनुसार सैनिक रखता था।[27] ये सैनिक

धन प्राप्ति के उद्देश्य से साभर को लूटा। उन दिनो साभर अजमेर के सूबेदार के अधीन था। वरसिंह द्वारा साभर म की गई लूट खसोट से अजमेर का सूबेदार क्रुद्ध हुआ और प्रतिशोध की भावना से मेडता पर चढ आया। वरसिंह ने राव सातल को इसकी सूचना भेजी। राव सातल न वरसिंह को जोधपुर बुलवा लिया। उधर अजमेर के सूबेदार मल्लू खा ने मेडता पर अधिकार कर लिया और वह आगे पीपाड की ओर बढा। पीपाड आक्रमण के समय मल्लूखा के एक सनिक अधिकारी घडूला खा (घुडलाखा) ने पीपाड की कतिपय तीजणियो को पकड लिया। मल्लूखा से मुकाबला करने हेतु राव सातल, सूजा और वरसिंह एक सेना के साथ पीपाड की ओर गय। कोसाणा के स्थान पर युद्ध हुआ। मुसलमान सेना भाग खडी हुई। मीर घडूला खा मारा गया। उसके द्वारा गिरफ्तार की गई सभी कन्याओ का मुक्त करवा लिया गया। सातल की फतह हुई परन्तु युद्ध मे राव बुरी तरह मे घायल हो गया था। उसी रात्रि को कोसाणा मे ही उसकी 1548 ई चैत्र शुक्ला 3 को मत्यु हो गई। कोसाणा मे ही सातल का दाहसस्कार हुआ और वहा इसके स्मारक (छतरी) का निमाण हुआ।[31]

राव सातल की मत्यु के उपरान्त सातल का अनुज सूजा राज्यासीन हुआ (12 अप्रेल 1491 ई)। मेडता की समस्या अभी भी विद्यमान थी। मल्लूखा पराजित होकर भाग निकला था। वह शात होकर नही बठा। उसमे प्रतिशाध की भावना प्रबल थी। उसने माण्डू के बादशाह मे सहायता प्राप्त की और वह मेडता पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था। वरसिंह को जब इसकी सूचना मिली तो वह मल्लूखाँ ने सधि करन की दृष्टि से अजमेर पहुँचा। मल्लूखा न कपट से वरसिंह को कद कर लिया। वरसिंह के अगरक्षक जैता और अजा अपने स्वामी को बचाने के प्रयास म स्वय मारे गये।[30]

वरसिंह की गिरफ्तारी की सूचना दूदा और बीका को हुई। राव सूजा को भी इसकी सूचना मिली। दूदा और बीका की सेनाए अजमेर की ओर अग्रसर हुई। राव सूजा ने भी सेना सहित जोधपुर से प्रस्थान कर कोसाणा म डेरा किया। राठौडी सेना के आगमन स

मल्लूखा घबरा गया और उसने वरसिंह को छोड दिया तथा समझौता कर लिया। वरसिंह ने मेडता पहुँच कर बीका व दूदा को सादर विदा किया। सूजा कोसाणा से जोधपुर लौट गया। इधर वरसिंह को अजमेर मे छ मासी विष दे दिया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई।[33]

ख्यातो मे ज्ञात होता है कि राव बीका ने राव सूजा से छत्र चँवर आदि राज्य चिह्न मागे जिनको देने की प्रतिज्ञा राव जोधा ने की थी। राव सूजा ने इन्हे देने से इन्कार कर दिया जिस पर राव बीका ने जोधपुर पर चढाई कर दी। राव सूजा ने बीका की सेना को रोकने का प्रयास किया परन्तु असफल रहा। अन्ततागत्वा राव सूजा को बीका से सधि करने के लिए विवश होना पडा। बीका को राज्य चिन्ह दे दिय गये। बीका बीकानेर लौट गया।[34]

राव सूजा ने भी अपन पिता राव जोधा की भाति जीते जी अपने पुत्रो को जागीरें देदी थी। कवर शेखा को पीपाड दिया गया तथा नरा को फलोदी प्रदान की गई। ऊदा ने जैतारण पर अधिकार कर लिया था। अत जैतारण ऊदा की जागीर मान ली गई। ऊदा ने जैतारण सीधल, खीवा को मारकर प्राप्त की थी। ऊदा का राज्याभिषेक पुराहित भोजराज ने किया था। ऊदा ने उसे कारोलिया ग्राम दान (सासण) मे दिया था। इससे यह प्रमाणित है कि प्रारम्भ मे मारवाड क साम त बडे शक्तिशाली थे और वे अपने जागीर मे एक स्वतन्त्र शासक की भाति आचरण किया करते थे। उन्हे अपनी जागीर की भूमि दान मे देने का अधिकार भी था। कालान्तर मे सामन्तो के पास यह अधिकार नही रहा। भोजराज को ग्राम दिया इसकी पुष्टि एक दोह से होती है—

ऊद सासण समपियौ, प्रोहित भोजा ईज।
पूज समत पसट्ट म, मास चत वद बीज॥

इस दोह से यह भी स्पष्ट है कि ऊदा द्वारा जैतारण प्राप्त करने का समय 1565 वि स मे होना चाहिए। नणसी के अनुसार सम्भवत ऊदा ने राव सूजा की सहायता से जतारण प्राप्त किया था। मेडताधिपति दूदा का पुत्र वीरम और जतारण के शासक ऊदा के बीच लीलिया गाव के पास युद्ध हुआ जिसमे ऊदा की फतह हुई। बाद मे

धन प्राप्ति के उद्देश्य से साभर का लूटा। उन दिनो साभर अजमेर के सूबेदार के अधीन था। वरसिंह द्वारा साभर म की गई लूट खसोट से अजमेर का सूबेदार क्रुद्ध हुआ और प्रतिशोध की भावना से मेडता पर चढ आया। वरसिंह ने राव सातल का इसकी सूचना भेजी। राव सातल न वरसिंह को जाधपुर बुलवा लिया। उधर अजमेर क सूबदार मल्लू खा ने मेडता पर अधिकार कर लिया और वह आगे पीपाड की ओर बढा। पीपाड आक्रमण क समय मल्लूखां के एक सनिक अधिकारी घडूला खां (घुडलाखा) ने पीपाड की कतिपय तीजणियो को पकड लिया। मल्लूखां से मुकाबला करन हेतु राव सातल, सूजा और वरसिंह एक सना के साथ पीपाड की ओर गये। कोसाणा के स्थान पर युद्ध हुआ। मुसलमान सेना भाग खडी हुई। मीर घडूला खा मारा गया। उसके द्वारा गिरफ्तार की गई सभी कन्याओ का मुक्त करवा लिया गया। सातल की फतह हुई परन्तु युद्ध म राव बुरी तरह से घायल हो गया था। उसी रात्रि का कोसाणा म ही उसकी 1548 ई चत्र शुक्ला 3 को मत्यु हो गई। कोसाणा मे ही सातल का दाहसस्कार हुआ और वहां इसके स्मारक (छतरी) का निर्माण हुआ।[31]

राव सातल की मृत्यु के उपरान्त सातल का अनुज सूजा राज्यासीन हुआ (12 अप्रेल 1491 ई)। मेडता की समस्या अभी भी विद्यमान थी। मल्लूखा पराजित होकर भाग निकला था। वह शान्त होकर नही बठा। उसमे प्रतिशोध की भावना प्रबल थी। उसने माण्डू के बादशाह से सहायता प्राप्त की और वह मेडता पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था। वरसिंह को जब इसकी सूचना मिली तो वह मल्लूखा ने सधि करने की दृष्टि से अजमेर पहुँचा। मल्लूखा ने कपट से वरसिंह को कद कर लिया। वरसिंह के अगरक्षक जता और अजा अपने स्वामी को बचाने के प्रयास मे स्वय मारे गये।[32]

वरसिंह की गिरफ्तारी की सूचना दूदा और बीका को हुई। राव सूजा को भी इसकी सूचना मिली। दूदा और बीका की सेनाए अजमेर की ओर अग्रसर हुई। राव सूजा ने भी सेना सहित जोधपुर से प्रस्थान कर कोसाणा मे डेरा किया। राठौडी सेना के आगमन से

मल्लूखा घबरा गया और उमने वरसिंह को छोड दिया तथा समझौता कर लिया। वरसिंह ने मेडता पहुँच कर बीका व दूदा को सादर विदा किया। सूजा कोसाणा से जोधपुर लौट गया। इधर वरसिंह को अजमेर मे छ मासी विष दे दिया था जिससे उसकी मृत्यु हो गई।[33]

ख्याता से ज्ञात होता है कि राव बीका ने राव सूजा से छत्र चँवर आदि राज्य चिन्ह मागे जिनको देन की प्रतिज्ञा राव जोधा ने की थी। राव सूजा ने इन्हे देने से इन्कार कर दिया जिस पर राव बीका ने जोधपुर पर चढाई कर दी। राव सूजा ने बीका की सेना को रोकने का प्रयास किया परन्तु असफल रहा। अन्ततोगत्वा राव सूजा को बीका से सन्धि करने के लिए विवश होना पडा। बीका को राज्य चिन्ह दे दिये गये। बीका बीकानेर लौट गया।[34]

राव सूजा ने भी अपने पिता राव जोधा की भाति जीते जी अपने पुत्रो को जागीरें देदी थी। कवर शेखा को पीपाड दिया गया तथा नरा को फलोदी प्रदान की गई। ऊदा ने जतारण पर अधिकार कर लिया था। अत जैतारण ऊदा की जागीर मान ली गई। ऊदा ने जैतारण सीधल, खीवा को मारकर प्राप्त की थी। ऊदा का राज्याभिषेक पुरोहित भोजराज ने किया था। ऊदा ने उसे कारोलिया ग्राम दान (सासण) मे दिया था। इससे यह प्रमाणित है कि प्रारम्भ मे मारवाड के सामन्त बडे शक्तिशाली थे और वे अपने जागीर मे एक स्वतन्त्र शासक की भाति आचरण किया करते थे। उन्हे अपनी जागीर की भूमि दान मे देने का अधिकार भी था। कालान्तर मे सामन्ता के पास यह अधिकार नही रहा। भोजराज को ग्राम दिया इसकी पुष्टि एक दोहे से होती है—

ऊदै सासण समपियो, प्रोहित भाजा ईज।
पूज समत पसट्ट मे, मास चत वद बीज॥

इस दोहे से यह भी स्पष्ट है कि ऊदा द्वारा जतारण प्राप्त करने का समय 1565 वि स मे होना चाहिए। नणसी के अनुसार सम्भवत ऊदा ने राव सूजा की सहायता से जतारण प्राप्त किया था। मेडताधिपति दूदा का पुत्र वीरम और जैतारण के शासक ऊदा के बीच लीलिया गाव के पास युद्ध हुआ जिसमे ऊदा की फतह हुई। बाद मे

समझौता हो गया। वीरम ने कमर मे कटारी न बाधने की प्रतिज्ञा की थी। तभी से मेडतिया सरदार कमर म कटारी नही बांधते। इस सम्बन्ध मे एक गीत की अंतिम पक्तियां इस प्रकार है—

दूदावत अदासो अडता।
छूटो वीर कटारी छोड।।

राव ऊदा राठौड वश का बडा वीर और भाग्यशाली पुरुष था। उसके नाम से राठौडो मे ऊदावत वश चला। उसने अपनी भुजाओ के बल से जैतारण का राज्य एक सौ चालीस गाँवा के साथ प्रतिष्ठित किया था। ऊदा के सात पुत्र थे। इनम खीवकरण बडा प्रतापी सरदार हुआ। उसने राव मालदेव की महती सेवाए की थी और अन्त मे वह शेरशाह सूरी के साथ युद्ध मे काम आया। मालदेव के प्रति की गई सेवाओ का विवरण आगे यथास्थान पर दिया जायेगा।[35]

रेऊ के अनुसार सूजा की आज्ञा से उनके पुत्र शेखा ने रायपुर से सिंधलो को मार भगाया और बाद मे राव सूजा की फौजो ने चाणोद के सिंधलो को भी नत मस्तक करवाया।[36]

राव सूजा का ज्येष्ठ पुत्र बाघा था। बाघा का युवराज अवस्था मे ही देहान्त हो गया। इससे सूजा को गहरा सदमा हुआ और वि स 1572 की कार्तिक वदी 9 (2 अक्टूबर 1515 ई) को उसकी मत्यु हो गई। सूजा ने अपने पौत्र बाघा के पुत्र वीरम का उत्तराधिकारी घोषित किया था परन्तु राठौड साम तो न किसी कारण से वीरम से नाराज होकर उसके अनुज गागा का जोधपुर के सिंहासन पर बठा दिया। वीरम को सोजत का परगना जागीर मे मिला।[37]

राव गागा (1515-1531 ई) के राज्याभिषेक के समय मेडता मे दूदा का पुत्र वीरम स्वतन्त्र रूप से शासन कर रहा था। पीपाड की जागीर शेखा के पास थी। पाकरण और फलोदी पर नरा के पुत्र गोविन्ददास और हमीर का आधिपत्य था। नागौर पर खानजादा सरखेल खा और उसके पुत्र दौलत खाँ का अधिकार था। जालोर और साचोर का शासन गुजरात के सुल्तान के प्रतिनिधि सिकन्दर खा के हाथ मे था। मारवाड के अन्य स्थानो पर भी राठौड सामन्तो का वचस्व था। वे मारवाड पर अपना सामूहिक अधिकार मानते थे

और मारवाड के राजा के साथ बराबरी का दावा रखते थे क्योंकि वे सभी एक व्यक्ति की सन्तान थे। ऐसी सामन्ती व्यवस्था मे राव गागा की स्थिति सुदृढ नही थी फिर भी अनुकूल राजनैतिक परिस्थितियाँ व पडौसी राज्यो के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो के फलस्वरूप वह अपने राज्य की सीमा मे कुछ वृद्धि करने मे सफल रहा। सौभाग्य से दिल्ली का सुल्तान इब्राहीम लोदी एक कमजोर शासक था। वह अपने आन्तरिक कलह म ग्रस्त था। उसके लिए सुदूर मारवाड क्षेत्र के मामलो मे हस्तक्षेप करना सम्भव नही था। मेवाड के राणा सागा के साथ राव गागा के वैवाहिक सम्बन्ध थे। राव गागा की बहिन का विवाह राणा साँगा के साथ हुआ हुआ था। इसलिए मारवाड और मेवाड के सम्बन्ध सौहादपूर्ण थे। राव गागा ने कई बार राणा सागा को सैनिक सहायता दी थी।

सवप्रथम ईडर के मामले मे राव गागा न राणा को सनिक सहायता की। ईडर पर राव सीहा के पुत्र सोनग के वशजो का अधिकार था। ईडर नरेश सूर्यमल का देहान्त हो जाने पर उसका पुत्र रायमल ईडर का शासक बना। रायमल के चाचा भीम ने उसे राजगद्दी से हटा दिया और वह स्वय शासक बन बठा। रायमल ने राणा सागा से मदद मागी। वह मेवाड मे निवास करने लगा। इस बीच भीम का देहान्त हो गया। भीम का पुत्र भारमल ईडर की गद्दी पर बैठा। राणा सागा ने रायमल को पुन ईडर दिलवाने का प्रयास किया, परन्तु भारमल को गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह का समथन प्राप्त था। इससे सागा को सफलता नही मिली। इस पर सागा ने राव गागा से सहायता प्राप्त की। गागा व सागा के सयुक्त प्रयासो से रायमल को ईडर का सिंहासन प्राप्त हो गया।[38]

ई सन् 1525 मे जब सिकन्दर खा जालोर की गद्दी पर आसीन हुआ तब गजनी खा ने राव गागा से सहायता प्राप्त कर जालोर पर चढाई की, परन्तु सिकन्दर खा ने फौज खच के रुपये देकर जोधपुर की फौज को वापिस लौटा दिया। इस प्रकार जालोर के सिंहासन हेतु हुए सघष म राव गागा ने हस्तक्षेप कर भविष्य मे अपने उत्तराधिकारी मालदेव के लिए जालोर पर अधिकार करने के लिए माग प्रशस्त कर दिया।[39]

मेवाड़ के महाराणा सग्रामसिंह एवम् बाबर के मध्य खानवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई को हुआ था जिसमे राव गागा ने मडता के रायमल एवम् रत्नसिंह के नेतृत्व मे अपनी सेना महाराणा सागा की सहायता हेतु भेजी इस युद्ध मे महाराणा सागा की पराजय हो गई थी। रायमल और रत्नसिंह इस युद्ध म वीर गति को प्राप्त हुए। कुछ इतिहासकारो का कथन है कि राजकुमार मालदेव इस युद्ध म उपस्थित था। उसने युद्ध क्षेत्र म बाए भाग का नेतृत्व किया तथा सागा को मूर्छित अवस्था मे सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने मे सहायता की थी। ख्याता व फारसी ग था से इस तथ्य की पुष्टि नही होती। उसी प्रकार कुछ विद्वाना का अनुमान है कि राव गागा स्वय ने इस युद्ध म भाग लिया था। यह मात्र अनुमान ही है। यह निश्चय है कि मारवाड की सेना ने सागा की तरफ से युद्ध मे भाग लिया था।[40]

वीरम को सोजत दिलवाकर साम ता ने यह सोचा था कि दोनो भाइया म बटवारा हो जाने मे मारवाड म शांति बनी रहेगी परन्तु ऐसा सम्भव नही हुआ। वस्तुत यह गृहकलह का कारण बना। हृदय से न तो राव गागा वीरम को सोजत देने के पक्ष म था और न वीरम ही चाहता था कि राव गागा जोधपुर की गद्दी पर आसीन रहे। परिणामत वे एक दूसरे के क्षेत्र म लूट मार करने लगे। अशांति का वातावरण बना हुआ था। राव गागा जोधपुर राज्य का स्वामी था फिर भी वह वीरम को सोजत से अपदस्थ करने म असमर्थ रहा। उसका कारण यह था कि वीरम के पास कू पा जसा वीर सेनानायक था। कू पा राव रणमल के ज्येष्ठ पुत्र अखराज का पौत्र और महराज का पुत्र था। अखराज बगडी का स्वामी था। उसने स्वय ने अपने अनुज जोधा का राजतिलक किया था। उसका लडका महराज मेरा के मुखिया मारमल के विरुद्ध काल भाट के युद्ध म काम आया था। कू पा अपने पिता महराज के देहान्त के समय मात्र एक वर्ष का था। कुछ बड़ होने पर वह मेडता के स्वामी वीरमदेव की सेवा में रहा। वीरमदेव के साथ अनबन हो जाने पर वीर शिरोमणी कू पा सोजत के स्वामी वीरम (राव गागा का अनुज) की सेवा म चला गया। कू पा के आ जाने से वीरम की स्थिति सुदृढ हो गई। राव गागा से अपने सेनापति जैता के माध्यम से कू पा को प्रलोभन देकर अपनी ओर कर लिया। इससे वीरम की शक्ति टूट गई। राव गागा ने सनिक तयारी

कर वीरम के विरुद्ध कु वर मालदेव के नेतृत्व मे सेना भेजी जिसमे कू पा व जैता भी सम्मिलित थे। सोजत के पास भीपरण युद्ध हुआ जिसमे वीरम का प्रबल सहयोगी प्रधान मूता रायमल मारा गया। राव गागा की फौज न सोजत पर अधिकार कर लिया। पराजित वीरम का बाला नामक गाँव जागीर मे दिया। इस प्रकार गहकलह का एक अध्याय समाप्त हुआ तथा कू पा और जैता के वीरोचित जीवन का आरम्भ हुआ।[11]

राव गागा न अपने भाई वीरम का तो मान मदन कर दिया था परन्तु उसका चाचा शेखा अभी भी उसके विरुद्ध षड्यन्त्र करने मे लगा हुआ था। शेखा नही चाहता था कि राव गागा जाधपुर का शासक बना रह। एक अन्य व्यक्ति ऊहड हरदास न जिसकी जागीर छिन जान से असतुष्ट था शेखा को राव गागा के विरुद्ध उकसाया। दोना ने मिलकर नागौर के खानजादा सरखेल खा व उसक पुत्र दौलत खा से सैनिक सहायता प्राप्त की और वे जोधपुर की आर बढे। राव गागा भी अपनी सेना के साथ उनका मुकाबला करने के लिए अग्रसर हुआ। सेवकी गाँव के पास घमासान युद्ध हुआ। नागौर क खानजादा के पास गज सेना थी जो अग्रिम पक्ति म खडी की गई थी। जोधपुर की सेना ने ज्यो ही तीरो की बौछार आरम्भ की कि शत्रुदल के हाथी भाग छटे। भागते हुए हाथियो का पीछा राजकुमार मालदेव ने किया। खानजादा की फौज के भाग जाने के पश्चात भी शेखा ने युद्ध जारी रखा। शेखा युद्ध मे मारा गया। राव गागा की विजय हुई।[4] इस युद्ध के फलस्वरूप शेखा द्वारा उत्पन गहकलह का तो अन्त हा गया परन्तु एक नवीन गहकलह का सूत्रपात हुआ जो अन्ततोगत्वा मारवाड राज्य के लिए अत्यन्त घातक प्रमाणित हुआ। मडता व जाधपुर के मध्य वैमनस्य का प्रारम्भ इसी युद्ध से होना है।

सेवकी के युद्ध मे दौलत खा का दरिया जोश नाम का हाथी घायल होकर मेडता की तरफ चला गया। मेडतिया सरदार वीरमदेव ने उस हाथी को अपने पास रख लिया। मालदेव ने जब वीरमदेव को हाथी लौटाने को लिखा तो उसने हाथी देने से इन्कार कर दिया और प्रस्ताव रखा कि यदि कु वर मालदेव हमारे यहाँ अतिथि होकर आए तो आतिथ्य सत्कार म उसे हाथी दे दिया जायेगा। इस पर कु वर

मालदेव मेडता पहुँचा। मालदेव ने भोजन करने के पहले हाथी की माग की। मेडतियो ने इसे स्वीकार नही किया। मालदेव क्रुद्ध होकर जोधपुर लौट आया। लौटते समय मालदेव ने घोषणा की कि मेडते के स्थान पर मूले नही बुवाऊ तो मेरा नाम मालदेव नही।

जब गागा को इस नवोदित कलह की सूचना मिली तो उसने वीरम को समझाया। वीरम ने गागा के आदेशानुसार हाथी मालदेव के लिए भेज दिया, परन्तु दुर्भाग्य से यह हाथी पीपाड के निकट पहुँचने पर मर गया। शातिवादी गागा तो इससे सन्तुष्ट हो गया क्योकि हाथी जोधपुर की सीमा मे आकर मरा था, परन्तु उग्रवादी मालदेव इससे सन्तुष्ट नही हुआ। उसने वीरम के विरुद्ध गाठ बाध ली थी। राव गागा ने शेखा के विरुद्ध लडे गये युद्ध मे साथ देने के लिए वीरम को आमन्त्रित किया था, परन्तु उसने इस गह कलह मे भाग लेने से इन्कार कर दिया था। इससे भी राव गागा वीरम से अप्रसन्न हो गया था।[43]

ज्येष्ठ सुदी 5 वि स 1588 (21 मई 1531 ई) को राव गागा की महल की खिडकी से गिर जाने से मृत्यु हो गई उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका लडका मालदेव मारवाड का शासक बना। राव मालदेव को पैतक सम्पत्ति के रूप मे जो राज्य प्राप्त हुआ उसमे केवल सोजत एवम् जोधपुर के प्रदेश ही सम्मिलित थे। यद्यपि फलोदी, मालानी, पोकरण, जतारण, मेडता सिवाना आदि आस पास के प्रदेशो पर राठौडो का ही प्रभुत्व था तथापि वे केन्द्रीय सत्ता (जोधपुर) से प्राय स्वतन्त्र ही थे। नतिकता के आधार पर जोधपुर शासन को सकट काल मे वे सहायता देने के लिए बाध्य थे। इसका मूल कारण यह था कि अपने अधीनस्थ भू खण्ड को उन्होने अपने स्वय के बाहुबल से प्राप्त किया था। इतना जरूर था कि सत्ता स्थापित करने मे कभी किसी को जोधपुर नरेश से स्वीकृति प्राप्त हो गई थी अथवा कभी सनिक सहायता भी उपलब्ध हो सकी। वरिष्ठताक्रम मे जोधपुर के शासक का पद ज्येष्ठ होने के कारण उसे जोधपुर का राज्य प्राप्त था इसलिए अन्य राठौड शासको का नतिक दायित्व हो जाता था कि वे अपने अग्रज की मदद करें। सामान्यत प्रदेशीय राठौड शासक जोधपुर शासक की मदद करते ही थे। जब कभी जोधपुर शासक ने

इनके प्रदेशों को छीनने का प्रयास किया तो उन्होंने विरोध किया। अत शासक पूर्ण रूपेण किसी राठौड योद्धा पर आश्रित नही रह सकता था।

मालदेव के राज्यारोहण के लगभग छ महीने पूर्व मुगल बादशाह बाबर की मृत्यु हुई थी। उसका उत्तराधिकारी स्वजन्य समस्याग्रस्त शाहजादा हुमायू दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ था। हुमायू म अपने पिता के समान सामरिक गुणो का अभाव था। उसमे विकट परिस्थितियों के समय साहस के साथ मुकाबला करने की भी क्षमता नही थी। पठान लोग अपनी खोई हुई शक्ति को पुन प्राप्त करने के लिए लालायित थे। राहु और केतु के समान बालेन्द्र मुगल साम्राज्य को ग्रसने हेतु बहादुरशाह एव शेरखा उद्यत थे। वस्तुत हुमायू का शासन काल अपने शत्रुओ के साथ सघर्ष करने म व्यतीत हुआ। उसे अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अवसर ही नही मिला।

राजपूताना मे राणा सागा का वचस्व समाप्त हो गया था। सागा के देहान्त के पश्चात उसका ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह मेवाड का शासक बना। वह गह कलह के कुचक्र का शिकार बना। उसकी हत्या करदी। तदुपरान्त उसका अनुज विक्रमादित्य राज्यासीन हुआ। वह अनुभवहीन व अयोग्य था। उसके व्यवहार से तग आकर उसके सामन्त अपने अपने क्षेत्रा मे निवास करने लगे। राजदरबार की दयनीय स्थिति का लाभ उठाकर दासी पुत्र वणवीर ने विक्रमादित्य की हत्या करदी और वह स्वय शासक बन गया। विक्रमादित्य के अनुज उदयसिंह को पन्नाधाय के कौशल से वणवीर के नशस हाथो से बचाया जा सका। उसे कुम्भलगढ जैसे सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया गया। इस प्रकार मेवाड जिसका एक समय राजपूताना मे सवत्र बोलबाला था, अब वैभवहीन एवम शक्तिहीन हो चुका था।

बीकानेर मे जेतसिंह राठौड का स्वतन्त्र राज्य था। पूर्वी राजपूताना मे कछवाहा राजपूतो का प्रभुत्व था, परन्तु अपने गहकलह से वे भी दुबल स्थिति मे थे। इस प्रकार महत्वाकाक्षी मालदेव के लिए तत्कालीन परिस्थितियाँ साम्राज्य विस्तार के लिए अनुकूल थी। अत

मालदेव ने अपने राज्य की सीमा मे विस्तार करने का अभियान छेड दिया।

राज्याभिषेक के कुछ ही समय उपरान्त राव मालदेव ने भाद्राजूण पर आक्रमण करने को तयारी की। भाद्राजूण पर उस समय वीर सीधल का प्रभुत्व था। राठौडा और सिंधला के मध्य राव रणमल के समय से ही सघष चल रहा था। इसके अतिरिक्त जोधपुर राज्य की सीमा का दक्षिण, दक्षिण पूव एव दक्षिण पश्चिम की ओर विस्तार हेतु भाद्राजूण पर अधिकार करना नितान्त आवश्यक था। सामरिक दृष्टि स भी भाद्राजूण का किला महत्वपूण था। अत वि स 1588 मे मालदेव ने भाद्राजूण पर आक्रमण कर दिया। वहाँ का शासक सिंधल वीरा मारा गया और भाद्राजूण पर मालदेव का अधिकार हो गया। दुग की रक्षा हेतु राव मालदेव ने अपने पुत्र रत्नसिंह को वहाँ नियुक्त कर दिया। इसके बाद रायपुर से भी सिंधला को मार भगाया और वहा मालदव की पताका फहरा दी गई।[44]

मालदेव और मेडता के शासक वीरम के मध्य राव गागा के काल से ही वैमनस्य चला आ रहा था। मालदव वीरम के विरुद्ध सनिक कायवाही करने का इच्छुक था, परन्तु उसके सेनापति व प्रमुख सलाहकार कू पा और जता इसके पक्ष मे नही थे कि राव बिना कारण स्वकुलीय साम ता को नष्ट करे। वीरम न जता के माध्यम मे मालदेव से मेल कर लिया। उसने मालदेव की अधीनता स्वीकार करली और वह राव की सेवा मे जोधपुर म उपस्थित हा गया। मालदेव ने दाहरी नीति का अनुसरण किया। वह एक पत्थर स दो चिडिया का मारना चाहता था। वह वीरम को मेडते से अपदस्त करना व नागोर पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। उसने नागोर के शासक दौलत खा का वीरम की अनुपस्थिति मे मेडता पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। उधर जब खान ने मेडना पर आक्रमण किया तब उसने नागोर पर चढाई कर दी। वीरम के योद्धा अखेराज भादावत ने मेडता की रक्षा की और इधर नागोर पर मालदेव का अधिकार हो गया। दौलत खा को हतप्रभ होकर अजमेर की तरफ भागना पडा। नागोर पर मालदेव का अधिकार हो जाने से उत्तर व उत्तर-पूव की ओर राज्य विस्तार के लिए उसे सुविधा रही।[45]

जिस समय मालदेव के विजयी सैनिकों ने नागोर विजय कर आस पास के गाँवो को लूटना आरम्भ किया, उस समय हीरा वाडी मे सेनापति जैता का शिविर था। इसलिए हीरा वाडी गाँव को किसी ने नही लूटा। इससे प्रसन्न होकर गाँव के प्रमुख व्यक्तियो ने अपनी कृतज्ञता के प्रदशन स्वरूप जैता को 15000 रुपयो की एक थैली भेंट की। जैता ने इस धनराशि मे वहाँ के लोगो के हिताथ रजलानी गाँव के पास एक वापी का निर्माण करवाया। इस वापी पर वि स 1597 (1540 ई) का एक लेख लगा हुआ है। आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से इस लेख का बडा महत्व है। (द्रष्टव्य रेऊ, मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग पृ 116-17)

जसलमेर के भाटियो ने कई दिनो से राव मालदेव की सेवा म अपनी सेना भेजने मे आना कानी की, जिस पर राजकीय सेना भेजी गई। ऊदावत खीवकरण, कू पा, जैता, और चापावत जैसा का सेना सहित आगमन सुनकर जसलमेर के रावल लूणकरण ने बिना युद्ध किए ही राव मालदेव की अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी कन्या का उससे ब्याह कर 400 घोड राव की सेवा मे रखना स्वीकार कर लिया।[46]

गत पृष्ठो म बताया जा चुका है कि मालदेव अपने सरदार जैता, कू पा, खीवकरण आदि के सहयोग के अभाव मे वीरम को समाप्त करने मे असमथ रहा था। उसने कूटनीति से वीरम को समाप्त करने के प्रयास किए। जब वीरम अपनी सेना सहित जोधपुर मे उपस्थित था, मालदेव ने नागोर के खान के साथ साथ पचायण पवार और वरजागोत के पुत्र गागा को भी मेडता पर अधिकार करने के लिए उत्तेजित किया था। किन्ही कारणो से इन सबकी वीरम से अनबन थी। खान को तो वीरम के सेनापति अखेराज ने ही परास्त कर दिया था। इस घटना से वीरम मालदेव से सशक्ति हो गया था। वह जोधपुर से निकल गया और मेडता पहुँचा। आलणियावास के पास उसने पचायण पवार को परास्त कर भगा दिया और गागा सीहावत तो बिना युद्ध किए ही भाग निकला।

इसी समय अजमेर का सूबेदार किसी कायवश अजमेर से बाहर गया हुआ था। अत वीरम ने उपयुक्त समय देख कर अजमेर पर

मालदेव न अपन राज्य की सीमा म विस्तार करने का अभियान छेड दिया।

राज्याभिषेक के कुछ ही समय उपरान्त राव मालदेव ने भाद्राजूण पर आक्रमण करने की तयारी की। भाद्राजूण पर उस समय वीर सीधल का प्रभुत्व था। राठोडा और सिधना के मध्य राव रणमल के समय से ही सघप चल रहा था। इसके अतिरिक्त जोधपुर राज्य की सीमा का दक्षिण, दक्षिण पूव एव दक्षिण पश्चिम की ओर विस्तार हेतु भाद्राजूण पर अधिकार करना नितान्त आवश्यक था। सामरिक दृष्टि से भी भाद्राजूण का किला महत्वपूण था। अत वि स 1588 म मालदेव ने भाद्राजूण पर आक्रमण कर दिया। वहाँ का शासक सिधल वीरा मारा गया और भाद्राजूण पर मालदेव का अधिकार हो गया। दुग की रक्षा हेतु राव मालदव ने अपने पुत्र रत्नसिंह को वहाँ नियुक्त कर दिया। इसक बाद रायपुर से भी सिधला को मार भगाया और वहाँ मालदेव की पताका फहरा दी गई।[44]

मालदेव और मेडता क शासक वीरम के मध्य राव गागा क काल स ही वैमनस्य चला आ रहा था। मालदेव वीरम के विरुद्ध सनिक कायवाही करन का इच्छुक था परन्तु उसके सनापति व प्रमुख सलाहकार कू पा और जता इसके पक्ष मे नही थे कि राव बिना कारण स्वकुलीय साम ता का नष्ट करे। वीरम ने जता के माध्यम से मालदव से मेल कर लिया। उसन मालदव की अधीनता स्वीकार करली और वह राव की सेवा म जोधपुर म उपस्थित हो गया। मालदेव ने दोहरी नीति का अनुसरण किया। वह एक पत्थर से दो चिडिया को मारना चाहता था। वह वीरम को मडते से अपदस्त करना व नागोर पर अपना अधिकार जमाना चाहता था। उसने नागोर के शासक दौलत खाँ को वीरम की अनुपस्थिति म मेडता पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। उधर जब खान ने मडता पर आक्रमण किया तब उसने नागोर पर चढाई कर दी। वीरम के योद्धा अखेराज भादावत ने मेडता की रक्षा की और इधर नागोर पर मालदेव का अधिकार हो गया। दौलत खा को हतप्रभ होकर अजमेर की तरफ भागना पडा। नागोर पर मालदव का अधिकार हो जाने से उत्तर व उत्तर पूव की ओर राज्य विस्तार के लिए उसे सुविधा रही।[45]

जिस समय मालदेव के विजयी सैनिको ने नागोर विजय कर आस-पास के गाँवो को लूटना आरम्भ किया, उस समय हीरा वाडी मे सेनापति जता का शिविर था। इसलिए हीरा वाडी गाव को किसी ने नही लूटा। इससे प्रसन्न होकर गाँव के प्रमुख व्यक्तियो ने अपनी कृतज्ञता के प्रदशन स्वरूप जता का 15000 रुपयो की एक थैली भेंट की। जैता ने इस धनराशि मे वहा के लोगो के हिताथ रजलानी गाव के पास एक वापी का निर्माण करवाया। इस वापी पर वि स 1597 (1540 ई) का एक लेख लगा हुआ है। आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से इस लेख का बडा महत्व है। (द्रष्टव्य रेऊ, मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग पृ 116-17)

जसलमेर के भाटियो ने कई दिनो से राव मालदेव की सेवा मे अपनी सेना भेजने मे आना कानी की, जिस पर राजकीय सेना भेजी गई। ऊदावत खीवकरण, कू पा, जैता, और चापावत जसा का सेना सहित आगमन सुनकर जसलमेर के रावल लूणकरण ने बिना युद्ध किए ही राव मालदेव की अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी कन्या का उससे ब्याह कर 400 घोड राव की सेवा मे रखना स्वीकार कर लिया।[46]

गत पृष्ठो मे बताया जा चुका है कि मालदेव अपने सरदार जैता, कू पा, खीवकरण आदि के सहयोग के अभाव मे वीरम को समाप्त करने मे असमथ रहा था। उसने कूटनीति से वीरम को समाप्त करने के प्रयास किए। जब वीरम अपनी सेना सहित जोधपुर मे उपस्थित था, मालदेव ने नागोर के खान के साथ साथ पचायण पवार और वरजागोत के पुत्र गागा को भी मेडता पर अधिकार करने के लिए उत्तेजित किया था। किन्ही कारणो से इन सबकी वीरम से अनबन थी। खान को तो वीरम के सेनापति अखेराज ने ही परास्त कर दिया था। इस घटना से वीरम मालदेव से सशक्ति हो गया था। वह जोधपुर से निकल गया और मेडता पहुँचा। आलणियावास के पास उसने पचायण पवार को परास्त कर भगा दिया और गागा सीहावत तो बिना युद्ध किए ही भाग निकला।

इसी समय अजमेर का सूबेदार किसी कायवश अजमेर से बाहर गया हुआ था। अत वीरम ने उपयुक्त समय देख कर अजमेर पर

सहयोग से अपने साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार कर लिया। 1543 ई० में उसके राज्य की सीमा राजस्थान को पार कर दिल्ली और आगरा के निकट हिंडान, बयाना, फतेपुर सीकरी और मेवात तक पहुच चुकी थी। दक्षिण मे चित्तौड एव दक्षिण पश्चिम म राधनपुर व खाबड तक फैली हुए थी, पश्चिम म मारवाड राज्य की पताका भाटियो के प्रदेश पर फहरा रही थी। मालदेव के राज्य काल मे कुल मिलाकर 52 युद्ध लडे गए और एक समय छोटे-बडे 58 परगना पर मारवाड के राठौडो का अधिकार रहा। इस प्रसग म मालदेव के बलवान योद्धा जता कू पा खीवा आदि के उज्ज्वल चरित्र को उजागार करने हेतु मारवाड के अनेक कवियो न अपनी लेखनी का उपयोग किया है। कविवर दूरसा आढा, जो राव मालदेव का लगभग समकालीन ही था के एक गीत की कुछ पक्तिया पाठको की जानकारी हेतु नीचे दी जा रही है—

> माल घणी और जत मुसाहिव, कू प करण दीवाण कहै।
> बेगड अखौ सदा धुर वानी वडरा जोमणोयाल बहै॥
> गगावत मडोर गरजियो, पचाणोत बावन गढ पाट।
> सुत मेहराज जगलवर मोहै, घड न कोई हुवा घाट॥
> अनमा नाम उनथा नाथ, वलवन्त भरै गयण सू बाथ।
> अजमर त्याग कमधजा आग, हि दू तूरक न काढ हाथ॥

मालदेव के राज्य के 58 परगना के नाम रेऊ न अपने ग्रथ 'मारवाड का इतिहास, भाग 1 पृ० 58 पर दिये है। अनेक ऐसे राजा भी थे जिनमे मालदेव ने दड के रूप मे धनराशि एकत्र की थी। (द्रष्टव्य देवीसिंह (राठौड) वीर शिरोमणि राव कू पाजी राठौड पृ० 11)। इतना विशाल साम्राज्य न तो पूव मे किसी राजपूत शासक ने स्थापित किया था और न इसके बाद ही किसी राजपूत शासक का इतने विशाल क्षेत्र पर प्रभुत्व कायम हुआ था।

मालदेव का साम्राज्य जितना विशाल था उतना सुदृढ व सगठित नही था। उसका साम्राज्य विभिन राजपूत जातियो का जमघट था। वे सभी मालदेव के प्रति निष्ठावान नही थे। मालदेव विजितो का विश्वास प्राप्त नही कर सका। वह उनके हृदय को जीतने मे असफल रहा। यह ही कारण था कि उसका जडहीन

विशाल साम्राज्य रूपी वट वृक्ष पठान सत्ता के वेग के समक्ष धराशायी हो गया। उसकी पराजय मे प्रमुखत उसके स्वकुलीय राठौडो का ही हाथ रहा। आगे के पृष्ठो मे मालदेव व शेरशाह सूरी के बीच लडे गय सुमेल गिररी के युद्ध का सविस्तार विवेचन किया जायेगा।

सुमेल गिररी का युद्ध—

जिस समय मालदव अपनी शक्ति व साम्राज्य विस्तार के काय म लगा हुआ था उस समय मुगल सत्ता क्षत विक्षत हो रही थी। भारतीय स्थिति मे तेजी से परिवतन हो रहा था। अफगान सरदार शेरखा ने मुगल बादशाह हुमायू को 17 मई 1540 ई० को बिलग्राम के युद्ध मे परास्त कर उसे अपनी पैतृक सम्पत्ति से पूणतया वचित कर दिया। शेरखा शेरशाह के नाम से मुगल राज्य का स्वामी हो गया। दिल्ली और आगरा पर उसका अधिकार हो गया। हुमायू अपनी सुरक्षा व आश्रय की खोज मे था। विजयी अफगान सेना उसका पीछा कर रही थी। विवश होकर हुमायू सिध की ओर पलायन कर गया। 1541 ई० के प्रारम्भ म वह भक्कर पहुचा। लगभग सितम्बर माह तक वह वहा रहा। शेरशाह नवस्थापित राज्य को सुदृढ व व्यवस्थित करने मे जुटा हुआ था। उसने सिध, पजाब बिहार बगाल मालवा आदि क्षेत्रो मे सेनाओ के जत्थे भेज दिये। इसी बीच शेरशाह को बगाल के हाकिम के विरुद्ध सनिक कायवाही करने के लिए सुदूर पूव की ओर जाना पडा।

मालदव इन सब परिस्थितियो से अवगत था। वह यह भी जानता था कि शेरशाह की मुख्य सेना पजाब मे फसी हुई थी और शेष बगाल मे लगी हुई थी। स्वय शेरशाह दिल्ली मे बहुत दूर लगभग हजार मील दूरी पर पहुच गया था। मालदेव चाहता था कि शेरशाह अपनी शक्ति का दृढ करे उसके पहले उस पर प्रहार किया जाना चाहिए। इस काय मे हुमायू को आगे रखे, इसम उसने अपना हित समझा। शेरशाह से अकेले लडना उसने उचित नही समझा। हुमायू के साथ मे आने से शेरशाह घबरायेगा और देश मे उसके विरुद्ध विद्रोह हो जायेगा। यदि हुमायू उसकी मदद से पुन दिल्ली का शासक बनता है तो वह सदव उसका पक्षपाती बना रहगा और

मालदेव का राज्य सुरक्षित रहेगा। इन सभी विचारों से प्रेरित हो कर मालदेव ने हुमायू के पास सवाद भेजा कि वह उसे शेरशाह के विरुद्ध सहायता देने का उद्यत है। मालदेव ने बीस हजार राजपूत सैनिक हुमायू को देने का वचन दिया था। इस प्रसग म मालदेव ने बार बार हुमायू को आग्रह किया था कि वह मारवाड चला आए ताकि शेरशाह की अनुपस्थिति मे वे तुरन्त दिल्ली पर आक्रमण कर सके। हुमायू ने मालदेव के सदेश के प्रति कोई उत्सुकता नही दर्शाई क्योकि वह थट्टा के शासक शाह हुसन की सहायता से गुजरात विजय की योजना बना रहा था। वह सोचता था कि गुजरात म शेरशाह से दूर रहकर उसे शक्ति सगठन का अच्छा अवसर मिल जायेगा। उसकी गुजरात विजय की योजना सफल नही हुई। वह सात महीना तक शवाने के घेरे म अपनी शक्ति का अपव्यय करता रहा। निराश होकर वह फिर भक्कर की ओर लौटा। उसने देखा कि भक्कर के द्वार उसके लिए बन्द थे और शाह हुसन तथा यादगार मिर्जा उसके विरोधी बन चुके थे। 1541 ई० म मालदेव हुमायू की प्रतीक्षा मे था। उसने 20 हजार सेना तयार कर रखी थी परन्तु जब हुमायू नही आया तब मालदेव ने उसी फौज से जोधपुर फतह की थी। सामन्ती सेना को अनिश्चितकाल तक खडी रखना सभव नही था। हुमायू ने अपनी खोई हुई सत्ता को पुन प्राप्त करने का एक सुअवसर खो दिया।[55]

लगभग एक वर्ष बाद निराशा के वातावरण मे क्षुब्ध होकर हुमायू ने मारवाड की ओर जाने का मानस बनाया। 7 मई 1542 ई० को हुमायू रोहरी से प्रस्थान कर अर देरावर फलोदी, देईकर के रास्ते मे अगस्त के आरम्भ मे जोगीतीर्थ पहुचा। मालदेव को बादशाह हुमायू के मारवाड आगमन की सूचना मिल चुकी थी। अत उसने एक कवच और एक ऊँट बोझ अशर्फी हुमायू की सेवा म भेजी और अत्यधिक प्रोत्साहन देते हुए स्वागत किया और कहलाया आपको बीकानेर देता हू।[56] इतना होते हुए भी हुमायू के साथी मालदेव से शकित थे। मालदेव का स्वय का उपस्थित न होना सदेह का कारण बन गया। विशेष जानकारी की प्राप्ति के लिए हुमायू की तरफ से मीर समदर, रायमल सोनी, अतकाखा आदि दूत मालदेव के पास भेजे गये। सभी का मत यही था कि मालदेव का हृदय साफ

नही है। बादशाह के पुराने पुस्तकाध्यक्ष मुल्ला सुर्ख, जो मालदेव के पास आकर रह गया था न भी हुमायू को सूचना भेजी थी कि वह शीघ्रातिशीघ्र मारवाड से पलायन कर जाये, क्योंकि मालदेव के इरादे पवित्र नहीं ह। उसने लिखा था कि "आप कदापि कदापि आगे न आयें। जिस स्थान पर ठहरे ह, वही से प्रस्थान कर दें। कारण कि मालदेव आपको बन्दी बनाना चाहता है। आप उसकी बात पर विश्वास न करे, कारण कि शेरखा का राजदूत आया था और शेरखा न पत्र भेजा था कि जिस प्रकार हो सके, हजरत को ब दी बना लो। यदि तू यह काय कर लेगा तो नागार व अलवर तथा जिस स्थान की तू इच्छा करेगा, तुझे दे दिया जायेगा।"

मालदेव इस समय धम सकट मे फसा हुआ था। हुमायू उसके पूव निमन्त्रण के अनुसार ही मारवाड मे आया था। इधर शेरशाह मालदेव की गतिविधियो पर नजर लगाए बठा था। उसे मालवा की अधिक चिन्ता नही थी, जितनी मालदेव की। मालदेव की राज्य सीमा उसकी दोना राजधानियो -दिल्ली और आगरा के करीब पहुँच गई थी। जब उसको ज्ञात हुआ कि हुमायू मालदव के पास आ रहा है तो वह सतक हो गया। उसने अपनी फौज का मुख मारवाड की ओर कर दिया। शेरशाह भारी सकट का सामना करने के लिए पूरा रूप से तयार था। मालदेव शेरशाह की सनिक तयारियो से अनभिज्ञ नही था। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है कि शेरशाह ने मालदेव का आदेश भेजा था कि हुमायू का गिरफ्तार कर लिया जाय। इस काय के लिए उसन मालदेव का प्रादेशिक भेट का प्रलोभन भी दिया था। एसी परिस्थितियो मे यह तो निश्चित था कि मालदेव न हुमायू की मदद नही की और न भविष्य म ही उसका इरादा उस सहायता दने का था। उस समय मालदेव शेरशाह को अप्रसन्न करना नही चाहता था और न वह इस स्थिति मे था कि शेरशाह से लडे। आवश्यक था कि किसी न किसी तरह हुमायू को अपने राज्य की सीमा मे बाहर भेज द। उसका हुमायू का धोखा देने का इरादा नही था। यदि ऐसा होता तो फिर शेरशाह के सुझाव को मान लेता और हुमायूँ को गिरफ्तार कर शेरशाह का सुपुद कर देता। ऐसा करना मालदेव के लिए कठिन नही था क्योंकि हुमायू के साथ मुट्ठी भर सैनिक थे। वस्तुत एक वष पहले मालदेव ने हुमायू को मारवाड

मे आने के लिए आमंत्रित किया था। एक वर्ष बाद तो उत्तरी भारत का सम्पूर्ण नक्शा ही बदल गया। हुमायूं का दोष था कि वह निमन्त्रण के मिलते ही मारवाड मे नही आया जब कि उस समय स्थिति अत्यन्त अनुकूल थी। मालदेव ने एक सुयोग्य कूटनीतिज्ञ की भांति हुमायूं को कुछ सैनिक भय दिखा कर किसी तरह शेरशाह से दूर भेज दिया। सम्भव है कि मालदेव ने शेरशाह का विश्वास दिलाने अपने कुछ सैनिक हुमायूं के पीछे कर दिये ताकि वह मारवाड राज्य की सीमा के बाहर जल्दी से निकल जाय। सेना इसलिए नही भेजी थी कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैसा कि सभी मुगल इतिहासकारो ने उस पर विश्वासघात का आरोप लगाया, सही नही है। मालदेव ने समयानुकूल अपनी नीति मे परिवर्तन जरूर किया। ओझा ईश्वरी प्रसाद, कानूनगो आदि विद्वानो ने मालदेव के व्यवहार को न्यायोचित बताया है। वस्तुत यदि मालदेव इस समय हुमायूं का साथ देने की भूल करता तो वह दोनो का ही नही वरन सहस्रो मारवाड के लोगों का अहित करता। ज्यादा से ज्यादा हम मालदेव का नैतिक दृष्टि से दोषी मान सकते है।[57] वस्तुत मालदेव ने हुमायूं को मारवाड छोडने को नही कहा था। हुमायूं ने स्वयं शंकित होकर मारवाड से पलायन किया। मालदेव ने उसे रोकने का प्रयास नही किया। यदि वह उसे रुकने के लिए कहता तो हुमायूं का सन्देह और अधिक बढता। ऐसी स्थिति मे मालदेव की मौन स्वीकृति थी। हुमायूं ऊमरकोट की तरफ लौट गया।

सुमेल गिररी युद्ध के कारण –

यह बताया जा चुका है कि हुमायूं के मारवाड के आगमन के समय शेरशाह ने अपने दूत के माध्यम से मालदेव को सन्देश भेजा था कि वह हुमायूं को कैद करे परन्तु उसने उसके निर्देशन की पालना नही की और हुमायूं को सुरक्षित मारवाड से जाने दिया। वस्तुत शेरशाह मुगल वंश का पूर्ण रूप से अन्त देखना चाहता था। अत शेरशाह मालदेव से नाराज था। यदि हुमायूं को मालदेव द्वारा शरण दे दी जाती तो शेरशाह एवं मालदेव के मध्य निश्चित रूप से युद्ध हो जाता। क्योंकि हुमायूं मारवाड मे नही ठहरा इसलिए तत्काल

युद्ध तो टल गया, परन्तु तनाव की स्थिति बनी रही जो अन्तत मालदेव और शेरशाह के बीच युद्ध होने पर ही समाप्त हुई।

शेरशाह एव मालदेव दोनो ही समान रूप से महत्वाकाक्षी थे। शेरशाह एक सामान्य स्थिति से दिल्ली व आगरा का स्वामी बना था। उसने अपने जीवन मे बल की अपेक्षा छल का अधिक प्रयोग किया। उसकी एक मात्र आकाक्षा मुगल वश को समाप्त कर खोई हुई पठान सत्ता को पुन जीवित करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने छल कपट आदि सभी साधनो का उपयोग किया था। मालदेव भी कम महत्वाकाक्षी नही था। राज्य लिप्सा के लिए उसने अपने पिता की हत्या की थी। उसने भी छल-बल से स्वजातीय बन्धुओ की स्वतन्त्रता का अन्त कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। वह परम्परागत आध्यात्मवादी राजपूत सस्कृति का पोषक नहीं था। वह विशुद्ध भौतिकवाद व ऐश्वर्य म विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उसने नीति अनीति की परवाह किए बिना अपने मन्तव्य की पूर्ति की। दोनो के महत्वाकाक्षी होने के कारण वे एक दूसरे के लिए खतरा थे। दोनो समान रूप स शक्तिशाली थे और दोनो म अहम की भावना प्रबल थी। दोनो ने पारस्परिक हितो क टकराव के कारण उनके बीच युद्ध होना अवश्यभावी था।

शेरशाह एव मालदेव के मध्य तनाव उत्पन्न करवाने म मेडता के स्वामी वीरमदेव की भूमिका महत्वपूर्ण थी। गत पृष्ठो म बताया जा चुका है कि मालदेव न वीरम को शखावाटी और बाद मे बोयल तथा बणहट्टा से खदेड दिया था। वह तब माण्डू के सुलतान कादिरशाह क पास चला गया और उसकी सलाह से आगे दिल्ली के बादशाह शेरशाह के पास जाने को रवाना हुआ। मार्ग म रणथम्भोर के हाकिम (दुर्ग रक्षक) खान ए खान अबुन करा से उसकी मित्रता हो गई। उसके साथ वह दिल्ली जा पहुँचा। वही पर पर 1541 ई मे बीकानेर के स्वर्गवासी राव जतसी के छोटे पुत्र भीम से उसकी मित्रता हुई। ये दोनो मिलकर शेरशाह को मालदेव के विरुद्ध भडकाने लगे। कानूनगो के अनुसार वीरम 1542 ई से पूर्व शेरशाह के शिविर म नही पहुँचा। जब शेरशाह रणथभोर से आगरा लौट रहा था तब वीरम उसके पास पहुँचा था।[58] उसने अपने मेडते के राज्य को पुन प्राप्त करने एव

मालदेव का मान मर्दन करने हेतु शेरशाह का उत्तेजित करने मे कोई कसर नही छोडी। शेरशाह ता राजपूताना पर विजय प्राप्त करने के लिए पहले से ही आतुर था और अब वीरमदेव क सहयोग से इस पर आक्रमण करने का शीघ्र निर्णय लिया गया। वीरम के माध्यम से उसने मारवाड प्रदेश व उसकी शक्ति का सहज ही मे ज्ञान प्राप्त कर लिया। राठौडा की पारस्परिक फूट से लाभान्वित होकर उसने मारवाड पर आक्रमण किया।

वीरमदेव की भाति बीकानेर का पराजित शासक कल्याणमल भी शेरशाह के शिविर म चला गया। उसने शेरशाह का पुन बीकानेर राज्य दिलवाने के लिए प्राथना की थी और मालदेव के विरुद्ध विषवमन किया। अत यह कहना समीचीन ही होगा कि मेडता व बीकानर से अपदस्थ क्रमश वीरम और कल्याणमल ने शेरशाह का मारवाड पर चढ आने के लिए उत्प्रेरित किया था। इसका उल्लेख प्राय प्रत्येक राजपूत स्रोत म हुआ है।

मुन्तखबुतवारीख में मारवाड पर आक्रमण करने का एक अन्य कारण धार्मिक बताया है। इस फारसी ग्रन्थ मे लिखा है कि काफिरो (हिन्दुओ) के विरुद्ध जिहाद करने की दृष्टि से शेरशाह ने मारवाड प्रदेश की ओर प्रस्थान किया जहाँ मालदव नामक भारत वर्ष का प्रतिष्ठित राय नागोर तथा जोधपुर का शासक था, जिसने मुसलमानो को बहुत कष्ट पहुँचाया था।

वस्तुत महत्वाकाक्षी शेरशाह सम्पूर्ण उत्तरी भारत पर अफगान सत्ता स्थापित करने का इच्छुक था। फिर राजपूताना अछूता कसे रह सकता था। राजपूताना चाहे आर्थिक दृष्टि स महत्वपूर्ण नही रहा फिर भी सामरिक दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्व था। मालदव का विशाल व शक्तिशाली साम्राज्य दिल्ली से मात्र तीस मील दूरी पर स्थित भज्जर तक फैल चुका था। यह शरशाह के लिए असहनीय था। अत बगाल व मालवा म अपनी स्थिति सुदृढ कर उसने राजपूताना के एक छत्र शासक मालदेव का नत मस्तक करवाने के उद्देश्य से सनिक अभियान आरम्भ किया।

हुमायूँ का मारवाड मे आगमन व वहिर्गमन के समय से ही शेरशाह ने मारवाड पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया था और वह अपनी स्थिति सुदृढ करने की प्रक्रिया मे लग गया। मालदेव जसे शक्तिशाली शासक के विरुद्ध आक्रमण करने के पहले तैयारी करना वाछनीय था। सवप्रथम उसने मालवा के उपद्रव को शात किया एव रायसेन पर छल से अपना अधिकार स्थापित किया। अब वह मालवा की ओर से निश्चि त था। उसने आगरा को अपना केन्द्र बनाया। इस समय तक वीरमदेव व कल्याणदल उसकी शरण म पहुँच चुके थे। उनसे शेरशाह ने मारवाड व मालदेव सम्बन्धी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उसने मालदेव की शक्ति को कम नही आका था। तवकात-ए-अकबरी के लेखक निजामुद्दीन लिखता है कि नागोर और जोधपुर का शासक भारतवष के राजाओ मे सबसे अधिक सेना व ऐश्वय का स्वामी था। शेरशाह ने राजस्थास की भौगोलिक एव सामरिक दशा का भी यथा सम्भव अध्ययन कर रखा था और उसी के अनुकूल सेना के लिए रसद आदि की व्यवस्था की। इस प्रकार उसने मारवाड पर आक्रमण के पूव विशेष तयारी आरम्भ की। इस सम्बन्ध मे सारे काय उसने बडी चतुराई व सावधानी से किए। प्रकट मे ता वह दिल्ली व आगरा के मध्य आखेट का आनन्द लेता रहा पर गुप्त रूप से उसने बहुत कम समय मे एक विशाल सेना का निर्माण कर लिया। शेरशाह की सेना की विशालता के सम्ब ध मे तारीखे शेरशाह के लेखक अब्बासखा सरवानी लिखता है कि, "नागोर अजमेर और जोधपुर के अभियान मे शेरखा के साथ इतनी सेना थी जा कि विचार मे भी नही आ सकती और जिसका अनुमान बडे से बडा चतुर गणित का ज्ञाता भी नही लगा सकता। सेना की लम्बाई चौडाई का कदापि नान नही हो पाता था।" जेम्स टॉड के अनुसार शाही सेना मे अस्सी हजार सनिक थे। इसमे अतिशयोक्ति हो सकती है पर इतना तो निश्चय है कि पूव युद्धा की अपेक्षा इस बार शेरशाह ने विशेष तयारी की थी। इस समय उसने तोपखाने मे और सुधार किया प्यादा की सेना बनाई, उनको बन्दूको से सुसज्जित किया और बहुत से हाथी भी सेना मे रखे। फिर भी उसकी अश्व सेना ही सेना का मुख्य अग बनी रही।[60]

मालदेव भी निष्क्रिय नहीं था। वह भी शेरशाह की भांति सजग था। उसने भी एक विशाल सेना का गठन किया था। चारण कवियों ने उस की सेना की संख्या अस्सी हजार आंकी है। निजामुद्दीन व अन्य फारसी इतिहासकारों ने इसे पचास हजार के लगभग बताया है। मारवाड़ के थानों व दुर्गों को आत्म-रक्षार्थ तैयार कर दिया गया था। मालदेव की सेना में राठौड़ों के अतिरिक्त चौहान, भाटी आदि अन्य राजपूत जातीय सैनिक सम्मिलित किए गए थे। शेरशाह जब रायसेन के घेरे में व्यस्त था, उस समय मालदेव यदि प्रहार करता तो परिणाम उसके पक्ष में रहता। जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया शेरशाह की स्थिति सुदृढ़ होती गई। मालदेव का आधे से अधिक राज्य पर पठानों का प्रभुत्व स्थापित हो चुका था। जुलाई 1543 ई० में शेरशाह द्वारा किए गए आक्रमण के समय मालदेव की शक्ति अपेक्षाकृत क्षीण हो चुकी थी क्योंकि अब उसका राज्य शेरशाह के राज्य से घिर चुका था। मालदेव को सबसे अधिक खतरा यह था कि शेरशाह के शिविर में वीरमदेव और कल्याणमल उपस्थित थे। मालदेव की आन्तरिक स्थिति भी सबल नहीं थी। स्वजातीय राठौड़ भी कुछ अंशों तक उससे असंतुष्ट थे, क्योंकि उनमें से अधिकांश ने लड़ने के बाद ही मालदेव की सत्ता को स्वीकार किया था।[81]

शेरशाह मालदेव के विरुद्ध आक्रमण करने की योजना तो बना रहा था, परन्तु उसने अपना व्यवहार ऐसा बना रखा था जिससे कोई यह अनुमान न लगा सके कि वह मारवाड़ पर किस मार्ग से आक्रमण करेगा। सम्भावना थी कि वह पहले कल्याणमल को बीकानेर दिलावे और फिर उस मार्ग से मारवाड़ में प्रवेश हो। दूसरी सम्भावना यह भी थी कि पहले वह अजमेर पहुँच वीरमदेव को मेड़ता दिला दे और फिर संगठित शक्ति से मारवाड़ पर टूट पड़े। अजमेर और नागौर के मार्ग से मारवाड़ पहुँचने में शेरशाह को अनेक सुदृढ़ किलों को हस्तगत करने में बहुत सी शक्ति क्षीण करनी पड़ती। बीकानेर के रास्ते पर उसे एक बहुत बड़े रेगिस्तानी इलाके को पार करना पड़ता। इस प्रकार विभिन्न मार्गों पर आने वाली आपत्तियों पर विचार कर उसने उस मार्ग को चुना जिसकी मालदेव कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। उसने सुदृढ़ किलों को एक ओर रखकर ऐसा मध्यवर्ती मार्ग अपनाया जो अफगान सेना के लिए सुगम था। उसने फतहपुर

झुंझनु को सेना के संचालन का मुख्य केन्द्र बनाया। यह स्थान मारवाड की सीमा के काफी निकट मे था। अन्नास और मकजाम द्वारा बताया गया फतेहपुर सीकरी मालदेव पर आक्रमण करने का अड्डा ठीक नही प्रतीत होता क्योकि वह मारवाड की सीमा से बहुत दूर स्थित है। वैसे यह स्थान आगरा से नजदीक पडता है। शेरशाह ने आगरे से चलकर ही मारवाड की तरफ प्रस्थान किया था।

कूंपा डीडवाना के थाने पर नियुक्त था। जैसे ही उसे शेरशाह के आगमन की सूचना मिली उसने यह सूचना तुरन्त राव मालदेव को भिजवा दी। मालदेव ने खबर पाते ही युद्ध की तैयारी के आदेश प्रसारित किए। सभी सरदार अपनी अपनी युद्ध सामग्री के साथ जतारण परगने मे केन्द्रित हो गये। ऐसा प्रतीत होता है कि मालदेव ने कूंपा को भी डीडवाने से जैतारण मे स्थित राठौडो की मुख्य सेना मे सम्मिलित होने के लिए बुला लिया था। मालदेव ने पीपाड को अपनी सेना के संचालन का केन्द्र बनाया। शेरशाह की सेना डीडवाना को एक तरफ रखती हुई अजमेर की ओर अग्रसर हुई। मालदेव ने अपनी विशाल सेना के साथ, जिसके सेनानायक जैता और कूंपा थे, अजमेर की ओर प्रयाण किया। इस सम्बन्ध मे एक दोहा इस प्रकार है

> सही फौज सुलतान री, आय रही अजमेर।
> अठी माल चढियौ अभंग, फल रास बहु फेर॥

शाही फौज ने भोजाबाद, कुचीला के रास्ते से अजमेर के निकट घुंघरा घाटी मे डेरा किया। उस समय मालदेव ने अजमेर से पीछे हटना आरम्भ किया। शेरशाह भी आगे बढने लगा। मूता नैणसी[8] के अनुसार राव मालदेव ने क्रमश दो स्थानो पर डेरे किए। राव मालदेव ने तीसरा डेरा गिररी मे किया, इस पर शाही डेरा गिररी के पूर्व मे सुमेल नामक स्थान पर किया। मालदेव की इच्छा गिररी से पीछे हटने की थी। वह बादशाही फौज को जागल (रेतीला प्रदेश) मे ले जाने के पक्ष मे था ताकि वहा जल कष्ट से व्यथित हुई सेना को आसानी से मार लिया जाय। प्रधान सेनापति जैता और कूंपा ने गिररी से पीछे हटने से इन्कार कर दिया। उन्होने कहा कि अभी तक जो भूमि हमने छोडी है वह तो मालदेव द्वारा उपार्जित की गई

थी, अत राव म ... ार छोड दी गई। अब आगे की भूमि तो उनके पूवजा द्वारा जीती गई थी, उसे वे छोडन के लिए उद्यत नही थे। कहने का तात्पय यह है कि राव मालदेव की पीछे हटने की योजना से जता व कू पा सहमत नही हुए। इस पर राव मालदेव को वलात वही मोचा कायम रखना पडा। राजपूती स्रोता के अनुसार इस समय राव मालदेव के पास अस्सी हजार सनिको की सेना थी। फारसी इतिहासकारो ने भी पचास हजार सेना होने का उल्लेख किया है।[63]

शेरशाह को मालदव के विरुद्ध इस सनिक अभियान म वडी सतकता से काम लेना पडा। उसने आदेश दिया था कि समस्त सेना प्रतिदिन युद्ध स्थल की भाति सवार हो और प्रत्येक विराम स्थल पर गढी बनावे व खाइया खोदी जाय। सयोगवश एक दिन रेगिस्तानी भूमि पर विराम करने का निश्चय हुआ। बहुत प्रयत्न करने पर भी वालू रेत के कारण दुग न बन सका, इसलिए शेरशाह चिंतित था। दुग बनाने के लिए क्या युक्ति निकाली जाय। शेरशाह का एक नाती आलमखा का पुत्र महमूदखा ने सुझाव दिया कि रेत की बोरिया भरवा कर किले व दी कर ली जाय। बादशाह को यह सलाह पसन्द आई। उसने महमूदखा की प्रशसा की। सुमेल के डेरे पर शेरशाह ने इसी प्रकार की किला व दी की थी।[64] उसने रक्षा के लिए रेत से भरे बोरा को चारा तरफ ऊपर तले रखवा कर सुदृढ कोट सा तैयार करवा लिया।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट है कि शेरशाह हर काय मे बडी सावधानी व सतकता का निवाह कर रहा था। उसने मालदेव व उसके योद्धा सामन्ता की वीरता के सम्ब ध म बहुत कुछ सुन रखा था। इसी कारण से वह अत्य त भयभीत था। राजस्थानी स्रोता मे ऐसा कहा गया है कि शेरशाह ने कई बार भयभीत होकर लौटने का निश्चय भी किया था पर तु वीरमदेव आदि राजपूता ने उसे धय दिलाया। इस सम्ब ध मे रेऊ लिखता है कि शेरशाह की मारवाड पर चढ आने की सूचना मिलने पर राव मालदेव अपनी सेना तयार कर अजमेर की तरफ अग्रसर हुआ और शत्रु के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उस समय राव मालदेव के पास अस्सी हजार वीर योद्धा थे। जब इनके इस प्रकार तैयार होकर सम्मुख रणागण

मे प्रवृत होने का समाचार शेरशाह को मिला तब उसका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया और वह मार्ग मे ही लौट जाने का विचार करने लगा, परन्तु वीरमदेव आदि ने उन सरदारों को भी, जिनके प्रदेशों पर मालदेव ने जबरदस्ती अधिकार कर लिया शेरशाह से मिलाया और हर तरह से उसका उत्साहवर्धन कर उसे पीछे लौटने से रोक दिया। युद्ध होने तक इसकी पुष्टि फारसी ग्रंथ 'तारीखे फरिश्ता' से भी होती है। तारीख फरिश्ता का लेखक मुहम्मद कासिम लिखता है— "शेरशाह ने उसकी (मालदेव) सेना की अधिकता देखी तो निराश हो गया और अपने आने पर (मारवाड़ पर) बहुत पश्चाताप किया।' वह आगे लिखता है कि जिन सामन्तों की मालदेव ने भूमि छीन ली उन्होंने शेरशाह को विश्वास दिलाया कि जिस समय उसकी सेनाएं निकट आयेंगी वे मालदेव से पृथक होकर उसकी सेना में सम्मिलित हो जायेंगे। सम्भवतः इसी कारण से शेरशाह ने अपना मानसिक सतुलन नहीं खोया।[65]

मारवाड़ी ख्यात मे ज्ञात होता है कि राठौड़ों की सेना की मजा-वद देखकर शेरशाह के मन मे विचार आया कि द्वन्द्वयुद्ध करके जय पराजय का निर्णय कर लिया जाय। दोनों तरफ से एक एक योद्धा नामजद कर दिया जाय और वे द्वन्द्व युद्ध करें। द्वन्द्व युद्ध मे जिस पक्ष का योद्धा विजयी होवे उस पक्ष की विजय समझी जाय। राव मालदेव ने शेरशाह के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और अपनी ओर से राठौड़ भारमल के पुत्र बीदा को नियत किया तथा शेरशाह ने भी अपनी ओर से योद्धा तयार किया परन्तु जब द्वन्द्व युद्ध होने को था तब वीरमदेव ने शेरशाह से निवेदन किया कि वह राव के योद्धा के बल व पराक्रम से पूर्ण परिचित है। पठान योद्धा उसका मुकाबला नहीं कर सकेगा अतः उसे इस द्वन्द्व युद्ध के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। इस पर शेरशाह ने अपनी बात वापिस ले ली। शेरशाह को मन मे पश्चाताप हुआ तब वीरमदेव ने उसे धैर्य रखने को कहा और आश्वासन दिया कि वह युक्ति से शत्रु सेना को मालदेव से विमुख कर देगा।[66]

इस प्रकार का कथन केवल राजपूत स्रोतों मे ही मिलता है। यह सही है कि शेरशाह मरुदेशीय सेना से भयभीत था, परन्तु इस तरह

की धम युद्ध की बात करना, युद्ध बिना लडे दिल्ली लौट जाना तथा वीरमदेव द्वारा उसे ढाढस बधाना मात्र कल्पना ही प्रतीत होती है। स्थानीय इतिहास लेखको के लिए वीरमदव एक महान नायक हो सकता है पर शेरशाह और फारसी इतिहासकारा की दृष्टि मे वह नगण्य था। शेरशाह की सेना म उसका केवल इतना ही महत्व था कि वह एक राजपूत है और स्थानीय परिस्थितियो का उसे ज्ञान है पर वह शेरशाह का पथ प्रदशक बन जाय यह कुछ कम सम्भव प्रतीत होता है।

एक मास तक उभय पक्षीय सनाएँ आक्रमण की आशका मे सुमल और गिररी पर आठ मील के फासले पर एक दूसरे क सम्मुख पडी रही। दाना सेनाओ की आर से गश्ती अश्वारोही नियुक्त थे। राठौडी सेना की आर से उदावत तेजसिंह डूगरसिंहोत को गश्ती सैनिक टुकडी का नायक नियुक्त किया गया था। एक बार दोना पक्षा के गश्ती सनिक आमन सामने आ गय। कुछ बोलचाल के पश्चात उनके बीच युद्ध शुरु हो गया। इस युद्ध म तेजसी ने बडी वीरता का प्रदशन किया। शाही सना के अनेक योद्धा मारे गये व घायल हुए। बचे हुए सनिक रणक्षेत्र छोड भाग निकले। इस घटना मे तेजसी भी घायल हुआ था। जहाँ दो विशाल सेनाओ का जमघठ हो इस प्रकार की छुटपुट घटनाओ का होना स्वाभाविक था।[67]

लम्बे समय तक इस स्थिति मे रहना शेरशाह के लिए घातक था। राजधानी से बहुत दूर रेगिस्तानी इलाके मे अपनी विशाल सेना के लिए रसद आदि की व्यवस्था करना कोई सहज काय नही था। जानवरो के लिए घास दाना जुटाने की भी समस्या थी। मालदेव अपने स्वय के क्षेत्र म था इसलिए उसे रसद तथा सनिक आवश्यकता पडने पर निकट से ही तथा कम समय मे प्राप्त हो सकते थे। राठौडी सेना की सजावट का देखत हुए शेरशाह कुछ शकित था। मालदव और शेरशाह की सनिक शक्ति म कोई विशेष अ तर नही था। ऐसी स्थिति मे विजय शेरशाह की ही होगी, निश्चित नही था।

उक्त परिस्थितियो म शेरशाह ने छल व षडय त्र से राजपूतो मे फूट डालने का प्रयास किया। इस विषय से सम्ब धित राजस्थान म अनेक कहानिया प्रचलित हैं। राजस्थानी स्रोतो म षडयन्त्रो का

नायक वीरमदेव को माना है जबकि फारसी ग्रंथो मे षडयन्त्रो का जनक शेरशाह था।

मुहणोत नणसी न अपनी ख्यात मे लिखा है 'वहाँ वीरमदेव ने एक तरकीब की—कू पा के डेरे पर बीस हजार रुपय भिजवाय और कहलाया हम कम्बल मगवा देना और बीस हजार ही जैता के पास भेज कर कहा, सिरोही की तलवारे भिजवा देना फिर राव मालदव को सूचना दी कि जता और कू पा शेरशाह स मिल गए है, व तुमको पकड कर हजूर म भेज देंग। इसका प्रमाण यह है कि उनके डेरे पर सवाये रुपया की थलियाँ भरी देखा तो जान लेना कि उन्होने मतलब बनाया है।" जब अपने ऊमरावा क डरा म थलियाँ पाई तो मालदव का मन मे भय उत्पन्न हो गया।[68] नणसी न 'बात परगने मेडते रो" मे लिखा है कि वीरमदेव ने अपन बारठ पाता को राव (मालदेव) के पास भेजा व कुछ कहलाया। (इससे) राव (मालदव) जता कू पा स बिना पूछे चौकी के घोडे पर चढकर डेढ प्रहर रात बीतन पर निकल गया।[69]

रऊ न मारवाड की ख्यात का निम्न उद्धरण प्रस्तुत किया है—इधर तो वीरम न इन फरमाना को ढाला के अन्दर की गद्दियो म सिलवाकर उन्ह अपने गुप्तचरा द्वारा मालदेव के सरदारा के हाथ बिकवा दी और उधर रावजी को सूचना दी कि यद्यपि आपने मेरे साथ बहुत ज्यादती की है तथापि मैं आपका सूचना देना अपना कर्तव्य समझता हू कि आपके सारे सरदार शेरशाह से मिल गए है। यदि आपको विश्वास न हो तो उनकी नई ढालो की गद्दिया को फडवाकर स्वय देख ले। इस पर रावजी ने जब ये ढालें मगवा कर उनकी गद्दिया खुलवाई, तब उनम से वे जाली फरमान निकल आए।[70]

रामकरण आसोपा ने अपने 'आसोप का इतिहास' म लिखा है कि वीरमदेव ने बादशाह से अज करके 20 25 हजार फिरोजशाही मोहरे और फारसी भाषा लिखने वाले मुन्शी को माग के ले लिया। वीरमदेव ने मोहरें व्यापारिया के हाथ रावजी की सेना मे सस्ते भाव से बिकवा दी और मुन्शी से जाली फरमान लिखवाए और उनको नई ढालो की गद्दियो मे सिलवाकर व्यापारियो के हाथ रावजी की

सेना मे सस्ते मूल्य पर बिकवा दी। इस बात का अंदेशा न तो राव मालदेव को हुआ और न उसके सरदारो को कि यह जाल है।

अब सध्या के समय वीरम राव मालदेव से मिलने आया और रावजी से अर्ज किया कि मेरे वास्ते आपको महान कष्ट हुआ जिसका मुझे पश्चाताप है मैं उस समय क्या कर सकता था जिस समय आपने मुझसे मेडता छीन लिया और अजमेर मे भी निकाल दिया और उसके पश्चात मुझे किसी स्थान पर टिकने नही दिया जिससे लाचार होकर बादशाह की शरण लेनी पडी, किन्तु जिन सरदारो का आपने दान मान आदि से पूर्ण सत्कार करके प्रसन्न रखा है वे भी सब आपसे विमुख हो गए और बादशाह से मिल गये है और उन्होंने इकरार कर लिया है कि हम रावजी को आपके आधीन करा देंगे। इसी हेतु उनके पास फिरोजशाही अशरफिया भेजी है और उनके साथ फरमान भी लिख भेजे है जो सरदारो की ढालो की गद्दियो मे विद्यमान है। आप उनकी ढाले मगवा कर दृष्टिगोचर कर सकते हैं। उन्हे देखने से आपको अपने आप तसल्ली हो जायेगी।' जाच करवाने से वीरम का कथन सत्य निकला। अब राव मालदेव को तसल्ली हो गई कि सरदार बादशाह से मिल गए है। उसने रणागण से निकल जाने मे ही अपना हित समझा।[71]

मुशी देवीप्रसाद ने वीरम द्वारा ढालो की गद्दियो मे शाही फरमान सिलवाने तथा मालदेव के बाजार मे शाही मोहरे बिकवाने की बात कही है। श्यामलदास ने मात्र ढालो का बेचने का सकेत किया है। दयालदास ने मूता नैणसी की बात को ही दोहराया है। इस प्रकार समस्त राजपूती स्रोतो से ज्ञात है कि बादशाह घबरा गया था। उसे वीरम ने ढाढस बधाया तथा वीरम ही समूचे षड्यन्त्र का सूत्रधार था।[72]

मुस्लिम इतिहासकार इस घटना को कुछ हेरफेर के साथ प्रस्तुत करते है। इसके साथ ही उन्होने षडयन्त्र का रचयिता शेरशाह को माना है। जाली शाही फरमान शेरशाह ने ही तैयार किये। उन्होने *इस कार्य मे वीरम के नाम का कही उल्लेख नही किया है। मुन्तखब* उत्तवारीख के लेखक अल बदायूनी लिखता है कि राजपूतो को चगुल मे फसाने के लिए शेरशाह ने एक चाल चली। उसने मालदेव के सरदारो

की ओर से अपने नाम जाली पत्र जो धूर्तता तथा मक्कारी से परिपूर्ण थे, लिखे जिनका आशय यह था कि युद्ध के समय बादशाह की कोई आवश्यकता नहीं होगी कि वह अपने व्यक्तियों सहित युद्ध के हत्याकांड तथा मारकाट में भाग ले। हम स्वयं मालदेव को जीवित बन्दी बना कर आपके हवाले कर देंगे, किन्तु इस शर्त पर कि अमुक अमुक स्थान पर हमको आप इनाम प्रदान करें। उसने ऐसा किया कि वे पत्र मालदेव के हाथ पड़ गए। फलस्वरूप मालदेव का तुरन्त अपने सामन्तों के प्रति विश्वास उठ गया। रात्रि को वह अकेला ही भाग खड़ा हुआ। मुहम्मद कासिम ने अपनी पुस्तक तारीखे फरिश्ता में उपयुक्त पत्रों के उत्तर में शेरशाह की ओर से उन सरदारों के नाम उत्तर लिखे कि विश्वास रखो यदि भगवान ने चाहा तो विजय के पश्चात तुम्हारी पतृक जागीर तुमको देकर सम्मानित किया जायेगा। इस बीच तुम हमारी जो कुछ सहायता कर सको उसमें विलम्ब न करना। फिर उन जाली पत्रों को युक्ति से मालदेव के पास पहुँचा दिया।[73] लगभग इसी प्रकार की जानकारी हमें अफसाना ए शाहान तबकात अकबरी तारीखे शेरशाही आदि फारसी ग्रन्थों से उपलब्ध होती है।

कानूनगो का मत है कि जाली पत्र लिखवाना व राजपूतों में फूट डालने की युक्ति शेरशाह के मस्तिष्क की ही उपज थी। कानूनगो के कथन में काफी सच्चाई हो सकती है, परन्तु राजपूत स्रोतों में दी गई जानकारी को पूरी तरह से ठुकराया नहीं जा सकता। यद्यपि राजपूत ख्यातों में प्रदत्त कहानियों में कुछ अंशों तक मनोरंजक रूपक बांधने का प्रयास हुआ है। फिर भी यह मूल तथ्य समस्त स्रोतों में समान रूप से पाया जाता है कि षडयन्त्र में वीरम का हाथ था। अतः हम इसे पूर्ण रूप से अस्वीकार नहीं कर सकते। निष्कर्षतः हम यही कहेंगे कि वीरम एवं शेरशाह के द्वारा किए गए षडयन्त्र के कारण मालदेव को अपने सरदारों पर सन्देह उत्पन्न हुआ।

इन पत्रों के अतिरिक्त एक और तथ्य भी महत्वपूर्ण है जिसके कारण मालदेव का अपने सरदारों पर विश्वास नहीं रहा। मालदेव ने गिररी से और पीछे हटने का प्रस्ताव किया था परन्तु जेता व कूंपा ने उसे अस्वीकार कर दिया था। बाद में जब शाही फरमान मालदेव ने देखे तो उसे निश्चय हो गया कि उसके सरदार शेरशाह से मिल गए

हैं, इसी कारण उन्होंने डेरे गिररी से पीछे हटाने के प्रस्ताव का विरोध किया था। इस प्रकार सन्देह उत्पन्न हो जाने से मालदेव भयभीत होकर सनिका के साथ गिररी से प्रस्थान कर गया। जता और कू पा ने मालदेव को बहुत समझाने का प्रयास किया उस विश्वास दिलाया कि सभी सरदार उसके साथ हैं फिर भी उस पर कोई असर नहीं हुआ। मालदेव के पलायन के बाद लगभग 22 हजार सनिक वहाँ बचे थे।[74] मालदेव के चले जाने पर जैता व कू पा को असह्य वेदना हुई। उपस्थित सरदारों ने अपने ऊपर लगे आरोपों तथा विश्वासघात के मिथ्या कलंक को धोने हेतु रणांगण में वीरगति को प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था। उनके मन में अपने स्वामी के प्रति क्षोभ था उससे कहीं अधिक उन्हें षडयन्त्रकारियों पर क्रोध था। रात्रि के अ धकार में ही वे शेरशाह की सेना पर हमला कर देने को रवाना हुए, परन्तु दुर्भाग्य से वे लोग अ धकार में मार्ग भूल गये। सारी रात वे लोग भटकते रहे, परन्तु शेरशाह की सेना उन्हें दिखाई नहीं दी। शेरशाह को अपने गुप्तचरों के द्वारा राजपूतों के रात्रि आक्रमण का सन्देह हो गया था इसलिए उसने अपनी सेना को पीछे हटाने के आदेश दे दिये थे। प्रात काल के समय राजपूतों के आधे के करीब योद्धा सुमेल के निकट शत्रु सेना का मुकाबला करने पहुँचे। यह गिररी सुमेल युद्ध दोनों ग्रामों के मध्य में जहाँ दो पहाड़ियाँ हैं वहाँ पर हुआ।[75]

यद्यपि राजपूत सनिकों की संख्या बहुत कम थी फिर भी वे अस्सी हजार पठान सनिकों पर टूट पड़े और युद्ध स्थल में उन्होंने अपनी तलवारों की झनझनाहट से प्रलय की स्थिति उत्पन्न कर दी। राठौड़ पत्ता (कानावत) शेरशाह के कमल हाथी के दाँत पर प्रहार करता हुआ धराशायी हुआ। उसके अनुज भोजराज ने भी रणक्षेत्र में अपने शौर्य का प्रदर्शन किया था। खीवकरण (जतारण) जेतमी उदावत कू पा महाराजोत (माडा), जता (वगडी), पचायण करमसोत, सोनगरा अखेराज (पाली) आदि उल्लेखनीय वीरों के संगठित आक्रमण में शाही सेना को कई बार पीछे हटना पड़ा।[76] और उनमें घबराहट फैल गई। अब्बासखा लिखता है 'शेरशाह की सेना का एक हिस्सा भाग चला था और एक अफगान ने उसके पास जाकर उसे भला बुरा कहते हुए उसके देश की भाषा में कहा कि भागो,

क्योकि काफिरो ने तुम्हारी सेना को छिन्न भिन्न कर दिया है। शेरखा फजर की नमाज पढ चुका था। अशर की प्राथनाए पढ रहा था। इस कारण उस अफगान को कोई उत्तर नही दिया और सकेत से सवारी का घोडा मगवाया।"[7] शेरशाह इस पराजय से दुखित हो भागने को तयार हो गया, परन्तु इतने मे उसका एक सरदार जलाल खा जलवानी एक बडी और चुस्त फौज लेकर वहा आ पहुँचा। राठौडी सेना तो पहले से ही कम थी और अब तक के युद्ध मे उनकी सख्या और भी कम हो गई थी। इस से पासा पलट गया। सारे के मारे राठौड योद्धाओ ने अपने देश और मान की रक्षा के लिए अपने प्राणो की आहूती दे दी। इस प्रकार राजपूत पराजित हुए। परिणाम यह हुआ कि सब प्रमुख सामत व सरदार जता कूपा, खीवकरण ऊदावत जैता उदावत पचायण, सोनगरा अखैराज आदि असीम वीरता के साथ सदैव के लिए रणागण म धराशायी हो गये। इस घमासान युद्ध मे पाच हजार राजपूत वीरगति को प्राप्त हुए और शेष घायल हुए। शेरशाह की विजय हुई, पर तु उसने राजपूतो की अद्भुत शौय की प्रशसा की। वीर शिरोमणि 'जैता' और कूपा के शौय व स्वामीभक्ति की सवत्र सराहाना की गई। गिररी की रण भूमि मे इन दोनो शूरवीरो ने अपने प्राणो की आहूती दी इस सम्बन्ध मे एक प्राचीन दोहा यहा देना समीचीन ही होगा—

> गिररी सन्दे गोरवं, सज भारत दोहू सूर।
> जैता कूपो जोरवर, सरग नडा घर दूर॥

शरशाह को पहले तो विजय की आशा खो गई थी। अब प्रसन होकर उसने ईश्वर के प्रति आभार प्रकट किया। उसने कहा—"खुदा का शुक्र है कि किसी तरह फतह हासिल हो गई, वरना मैने एक मुट्ठी बाजरे के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत ही खोई थी।"[8]

राव मालदेव को जब अपन सरदारा की इस वीरता और स्वामीभक्ति की सूचना मिली तब उसे बहुत ही दुःख हुआ, परन्तु समय हाथ से निकल चुका था। मारवाड के ख्याति प्राप्त, प्रतिष्ठित योद्धा इस युद्ध मे मर चुके थे। अत मालदेव के लिए शान्त होकर बठन के अतिरिक्त कोई अन्य चारा नही रह गया था। वह दुखी

मन से सिवाने की ओर पलायन कर गया। गिररी सुमेल युद्ध में काम आये सरदारों के नाम यहां सूचनार्थ दिये जा रहे हैं—[9]

जैता राठौड़ (बगड़ी), रा कूंपो मेहराजोत, रा उदयसिंह जैतावत, रा जतसी ऊदावत, रा पचायण करमसीयोत रा खींवो ऊदावत जैतारण रो, रा जोगो रावल अखेराजोत रा सुरताण गांगावत, रा पतो कानावत हाथी रे दांत चढियो रा वरसी राणावत रा भोजराज पचायणोत अखैराजोत, रा भीवोत कला उरजनोत रा वीदो भारमलोत वाला, रा रायमल अखेराजोत रिणमल, रा हामो सीहावत रा भलो पचायणोत, नींबा अणदोत, भानीदास सूरा अखराजोत, रा जगल वीदा परजतोत रा जलसी राधाऊत, रा भोजा पचाईणोत, रा हरदास खंगारोत रा महेस देदावत सांगरा भोजराज अखराजोत, रा हरपाल जोधावत, भाटी भैरो अचलावत, सानगरा अखैराज रणधीरोत, भाटी केल्हण आपमल हमीरोत भाटी पचायण जोधावत भा सूरो पतावत भा गांगो बरजांगोत, भा सूरो परबतोत, भा हमीर लाखावत, सोढो नाथो देदावत भा माधोदास राघोदासोत, ऊहड़ बीरो लाखावत, भा नींबो पतावत, सांखलो डूंगरसी धामावत दवडा अखराज बनावत, मांगलियो हेमो नींबावत ऊहड़ सुरजन नरहरदासोत, चारण भाना खेतावत धधवाडिया, सांखलो धनराज धामावत जैमल बीदावत डूंगरोत ईदा किसना, रा भारमल बाजावत, पठाण अलेदादखां रा खींवा ऊदावत रो चाकर।

यह युद्ध किस तिथि को हुआ, इस विषय में विद्वान एक मत नहीं हैं। 'बात परगने मेड़ता री' में कहा गया है कि बड़ा युद्ध संवत 1600 के पौष मास में हुआ।[81] 'बात परगना जोधपुर' में भी इसी प्रकार के उल्लेख हैं।[8] इसकी पुष्टि 'राव मालदेव री ख्यात' में भी होती है।[83] कानूनगो ने अपने पूर्व ग्रंथ 'शेरशाह[84]' में फाल्गुन मास दिया है, परन्तु शेरशाह और उसका समय ग्रंथ'[85] में उन्होंने मूता नणसी की ख्यात के आधार पर पौष मास स्वीकार किया है। वह लिखता है कि यदि यह ख्यात न होती तो हमको यह पता नहीं चलता कि पौष मास में (15 दिसम्बर 1543 से 15 जनवरी 1544 तक) जब कोहरा पड़ रहा था तो शेरशाह के शिविर पर जैता और कूंपा

ने अनुमरण किया। आगे चलकर उन्होंने युद्ध की तिथि दीवान बहादुर हरविलास सारडा के ग्रन्थ 'अजमेर' में दी गई तिथि पौष शुक्ला 11 वि०स० 1600 को स्वीकार की है।[86] आश्चर्य है कि रेऊ ने इस महत्वपूर्ण घटना की कोई तिथि निर्धारित नहीं की है। ओझा न पाद टिप्पणी में विभिन्न तिथियों का उल्लेख किया है।[87] श्यामलदास ने अपने ग्रन्थ वीर विनोद में इस युद्ध की तिथि पौष शुक्ला 11 बताई है।[88] बांकीदास ने पौष शुक्ला 11 के स्थान पर पौष वदी 5 का उल्लेख किया है।[89] जोधपुर राज्य की ख्यात में लिखा है[90] – जतै कूंप वगरह मालदे रा उमरावा सम्वत 1600 रा पौष सुद 11 पातसाह सू समेल वेढ हुवी," इसका अर्थ यह हुआ कि यह युद्ध शनिवार जनवरी 5 1544 ई० को हुआ था। फारसी ग्रन्थों में इस घटना की कोई तिथि नहीं दी गई है परन्तु इतना जरूर लिखा है कि अंधेरी रात थी, शीत था और कोहरा पड रहा था। इससे पौष मास की ही पुष्टि होती है। इसके विपरीत कूंपावत राठौडों के इतिहास में लिखा है कि यह युद्ध 1600 वि०स० चैत्र वदी 5 को हुआ। इस तिथि की पुष्टि में एक प्राचीन दोहा इस प्रकार है—

अमर लोक बसिया अडर, रण चढ कूंपो राव।
सोले से वद पक्ष मे, चत पचमी चाव।।

पडित रामकरण आसोपा ने अपने ग्रन्थ 'आसोप का इतिहास' में इस घटना की तिथि वि स 1600 चैत्र सुदी 5 (पचमी) बताई है। *'इतिहास नीवाज' में भी उन्होंने इसी तिथि का उल्लेख किया है।* वे लिखते हैं, "इस युद्ध में खींवकरणजी बहुत ही वीरता से लडे और वि स 1600 की चैत्र सुदी 5 को स्वगवासी हुए।"[91] किशनसिंह ऊदावत ने भी अपने ग्रन्थ ऊदावत राठौड इतिहास' प्रथम भाग में रामकरण आसोपा का अनुसरण करते हुए राव खींवकरण उदावत (जैतारण) के स्वगवास की तिथि वि स 1600 चैत सुदी 5 दी है।[9] इस तिथि की पुष्टि जैन स्थल बगडी में राव जैता के स्मारक पर उत्कीर्ण एक शिलालेख से होती है। इस लेख में लिखा है कि राव जैता दिल्ली बादशाह शेरशाह सूरी के साथ लोहा लेते हुए गिररी-सुमेल युद्ध में वि स 1600 चैत्र कृष्णा पचमी के दिन वीरगति को प्राप्त हुआ। गत दस वर्ष से चैत्र वदी पचमी को प्रति वर्ष गिररी में बलिदान दिवस का आयोजन भी किया जाता है।[93]

भारतीय इतिहास मे सुमेल गिररी युद्ध एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। इस युद्ध के फलस्वरूप दिल्ली की नवोदित पठान सत्ता सुदृढ हो गई। उधर राजपूतो के सारे मसूबो पर पानी फिर गया। मालदेव राजपूताना का एकछत्र शासक बनकर दिल्ली पर अपनी पताका फहराने की आकाक्षा रखता था, वह अब सम्भव नही रही। कुछ काल के लिए तो मालदेव को अपनी पतृक सम्पत्ति से भी वचित होना पडा था। इस युद्ध म मारवाड के लगभग सभी बलिष्ठ एव स्वामिभक्त योद्धा काम आ चुके थे। मालदेव क यश मातण्ड को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने वाले उदभट योद्धा जता और कू पा की भी इस हुताशन म आहुति लग चुकी थी। इस युद्ध से यह साबित हो गया कि युद्ध म शौय सामरिक शौय ही सब कुछ नही है वरन् युद्ध मे शौय की अपेक्षा कूटनीतिक षडय त्र अधिक महत्व रखते ह। स्पष्ट है कि युद्ध कला मे प्राचीन साधन अर्वाचीन साधनो के समक्ष नही ठहर सकत। बाबर व शेरशाह ने राजपूतो का परास्त किया, यह इस बात का प्रमाण है कि युद्ध म विज्ञान की विजय होती है। तोपो के सामन तलवार और बर्छे कहा तक सफल हो सकते है? गिररी सुमल युद्ध का विवरण करते हुए मुल्ला बदायू नी लिखता है कि काफिर घोडो मे उतर पडे और सबने आपस म अपनी कमरें बाध ली व बर्छे (भाले) और तलवार लिए हुए शत्रुओ पर टूट पडे। तब शेरशाह ने आदेश दिया कि उन पर हाथी चला दिये जावे। हाथियो क पीछे तापखाना और तीरदाज थे। उन्होने काफिरो का काम समाप्त कर दिया। व्यवस्थित तौर पर युद्ध करने को तयार अस्सी हजार पठान सैनिको के सामन चन्द राजपूत योद्धाओ का प्रबल वग अधिक समय तक प्रभावी न हो सका। राजपूतो न इस युद्ध से कोई शिक्षा नही ली। उनमे पूववत जातीय सगठन का अभाव रहा और न उनम कूटनीति की दक्षता हो आ सकी। वे अपनी परम्परागत युद्ध प्रणाली से ही चिपके रह। अठारहवी शताब्दी म भी मेडता के रणक्षेत्र मे महादजी की सेना क समक्ष राजपूतो न अपनी पुरानी युद्ध पद्धति का ही अनुसरण किया था और वे पराजित हुए थे।

इस युद्ध से राजपूतो की स्वामिभक्ति तथा अतिशय शौय का पता चलता है, साथ ही यह युद्ध शेरशाह जस कुशल प्रशासक एव योद्धा की कीर्ति को कलकित भी करता है। इस निर्णायक युद्ध के आधार पर

उसे महान विजेता की सज्ञा नही दी जा सकती। वैसे शेरशाह ने पूव मे भी युद्ध छल मे ही जीते थे, परन्तु इस युद्ध मे उसके द्वारा किए गए छल की पराकाष्ठा थी। इससे शेरशाह का एक साम्राज्य निर्माता के रूप मे सम्मान कुछ घटा ही है।

सुमेल के युद्ध के पश्चात राजपूतो के वभव और स्वतन्त्रता के युग का अन्त हुआ, जिसके पात्र पृथ्वीराज चौहान हम्मीर चौहान, महाराणा कुम्भा महाराणा सागा और मालदेव थे। इनके बाद राजस्थान मे आश्रितो के इतिहास का सूत्रपात हुआ जिसके वीरम, कल्याणमल, मानसिह, मिजा राजा जयसिह, अजीतसिह आदि प्रतीक के रूप मे माने जा सकते हैं।

इस विजय के बाद शेरशाह ने अपनी फाज को दो भागा मे विभाजित किया। एक भाग तो खवासखा और ईसाखा के नेतृत्व मे जाधपुर की ओर अग्रसर हुआ और दूसर भाग को लेकर वह स्वय अजमेर पहुँचा। अजमेर पर शेरशाह का अधिकार हो गया। इसके बाद वह जोधपुर की ओर बढा। मालदेव जोधपुर छोड सिवाना के पवतीय क्षेत्र की ओर पलायन कर गया। जोधपुर पर भी शेरशाह का प्रभुत्व स्थापित हो गया। तत्पश्चात उसने फलोदी, पोकरन पाली जालोर, नागोर आदि स्थाना पर थाने स्थापित किए। वीरम को मेडता और कल्याणमल को बीकानेर सौप कर वह फिर अपनी राजधानी लौट गया। राजपूत स्रोता म लिखा मिलता है कि बादशाह शेरशाह जोधपुर म एक वप रहा। वस्तुत यह एक वप शेरशाह का यहा ठहरने का परिचायक न होकर उसके मारवाड पर एक वप तक अधिकार का सूचक है।[84]

राव मालदेव को जीवन पय त युद्ध करने पडे जिससे उसकी फौलादी शक्ति शन शन क्षीण होती गई। उन्ही दिनो मुगल राज्य का शासक अकबर बना। उसने अपनी रण कुशलता व चतुराई से एक के बाद दूसर राजस्थानी राजा को दबा कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। मारवाड म मेडता और जैतारण पर मुगलो का आधिपत्य स्थापित हो गया। इससे स्पष्ट सकेत थे कि राजस्थान म मुगला के अधिकार के क्षेत्र का विस्तार होगा और यहा के देशी नरेश अपनी स्वतन्त्रता खो बैठेंगे। 1562 ई मे मालदेव की मृत्यु हो गई। इसके बाद मुगल साम्राज्य के विस्तार का सिलसिला द्रुतगति से आरम्भ हो गया।

स-दर्भिका

1 -यास ग्रार पी महाराणा राजसिंह पृ 8

2 -याम ग्रार पी रोल ग्राफ नाबिलिटि इन मारवाड पृ 12

3 नणसी री ख्यात भाग 2 (रामनारायण दूगड द्वारा ग्रनुवादित) पृ 57
मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 9 14
गोहिल गल हथियेह घरा खेड खागा मुहै।
ग्रामा ग्रपणायेह गळ मरियौ वळ गजियौ ॥

4 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 15 रायपाल मैहरेलण कहाणा। ठाकुराई जार चली। बाहडमर गाव 560 नवी पवार री वडी हाथ ग्राई।

5 वही -यास ग्रार पी रोल ग्राफ नाबिलिटि इन मारवाड पृ 2

6 माणीलाल शाध निब ध जाधपुर राज्य का इतिहास पृ 256

7 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 25 -जोधपुर राज री ख्यात पृ 38 39

8 *-यास ग्रार पी रोल ग्राफ नाबिलिटि इन मारवाड पृ 6*

9 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 33 36

10 वही रेऊ मारवाड का इतिहास भाग 1 पृ 102 03

11 मारवा- रा परगना री विगत प्रथम भाग, पृ 38-39

12 वही पृ 39 40

13 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग 1 पृ 212 13 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 125

14 -यास ग्रार पी रोल ग्राफ नाबिलिटि इन मारवा- पृ 4 5

15 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 138

16 *मुहता नणसी री ख्यात भाग 2 (दूगड द्वारा ग्रनुवादित) पृ 149*

17 यास ग्रार पी रोल ग्राफ नाबिलिटि इन मारवाड पृ 6

18 वही

19 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 25

20 वही पृ 47

21 वही पृ 47 48

22 ॅयाम श्रार पी, रात श्राफ नाविलिटि इन मारवाड पृ 194

23 शर्मा जी एन सोशल लाइफ इन मेडीवल राजस्थान पृ 86 मुहता नणसी री रयात भाग 3 पृ 117 18 ग्रहराज (जैमल का प्रधान) ने राव मालदेव का कहा मेडता कौन ता दे श्रोर उसके देन से ले कौन ? तुमका जिसन जोधपुर दिया है उसने हमका मेडता दिया है।

24 ग्रार एस ए खास रुक्का परवाना बही स 22 पृ 1 श्रोर 110— म्हे ता सरदारो री सलाह सिवाय एक कदम न देवा न फर देसो खास रुक्का परवाना बही स 2 पृ 110—स्याम धम पणा सू बदगी करो छो—म्हान पका भरासा छै—जायगा थार मगसे छ ।'

25 मारवाड की ख्यात भाग 1 पृ, 51, श्यामलदास वीर विनोद पृ 807 808 श्रासोपा श्रामाप का इतिहास पृ 21 27 पाद टिप्पणी

26 मारवाड रा परगना री विगत भाग 1 पृ 63

27 वही भाग 2 पृ 332 334

28 वही पृ 57

29 मागीलाल जाधपुर राज्य का इतिहास (शाध निबन्ध) पृ 65

30 मारवाड रा परगना री विगत भाग 2 पृ 31 श्रोर 41 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग 1 पृ 95 श्रोर 99

31 राव जोधाजी र बेटा री बात परम्परा, भाग 11 पृ 36 जाधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 56

32 मा प री विगत भाग 2, पृ 45

33 वही पृ 44 45, दयालदास की ख्यात भाग 2 पत्राक 6 वह विष जिसका प्रभाव 6 महीने बाद हो।

34 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग 1 पृ 108, पाद टिप्पणी

35 श्रासोपा रामकण, इतिहास नीवाज पृ 22 40

36 रेऊ वहा पृ 108 09

37 वही पृ 110, शिवनाथसिंह कूपावत राठौडा का इतिहास पृ 98

38 मा प री विगत, भाग 1 पृ 42 इसके शाख का दोहा—

गागो गातर रा गवाळ ईडर उग्रहीया तणो ।
सोहै तो सहपाल बडो प्रवाडा बापउत ।।

39 तारी ए पालनपुर I पृ 56 भागव वी एम मारवाड एण्ड द मुगल एम्परर्स पृ 14 पाद टिप्पणी म 3 और 5

40 मागीलाल वही पृ 79 80

41 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह), पृ 74 आसोपा रामकरण आसोप का इतिहास पृ 19 22

42 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 72

43 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 73 रेऊ उपयु क्त पृ 103 मागीलाल उपयु क्त पृ 88 89

44 राव मालदेव री बात परम्परा भाग 11 पृ 41 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 76 रेऊ उपयु क्त पृ 116

45 मालदेव री बात परम्परा भाग 11 पृ 41 ओझा जो रा इतिहास भाग 1 पृ 287 रेऊ उपयु क्त, पृ 117 18

46 आसोपा इतिहास नीबाज पृ 31

47 मालदेव री बात पृ 41 आसोपा आसोप का इतिहास पृ 24

48 आसोपा आसोप का इतिहास पृ 26 27 मु न ख्यात भाग 2 पृ 157

49 वही मागीलाल उपयु क्त पृ 103 कानूनगो शेरशाह व उसका समय पृ 374

50 परम्परा भाग 11 पृ 41 रेऊ उपयु क्त पृ 127

51 रेऊ उपयु क्त पृ 121 परम्परा भाग 11 पृ 63

52 रेऊ वही पृ 123 पाद टिप्पणी स 2

53 वीर विनोद भाग 2 पृ 808 मु न ख्यात खण्ड 1 पृ 56 रेऊ उपयु क्त पृ 124 भगवतसिंह चापावत राठोड पृ 24

54 आसोपा आसोप का इतिहास पृ 35 दयालदास री ख्यात (डा शर्मा) भाग 2 पृ 59 वीर विनोद भाग 2 पृ 483 रेऊ, उपयु क्त पृ 125 26

55 शर्मा जी एन , राजस्थान का इतिहास पृ 314 15

56 कानूनगो, शेरशाह और उसका समय, पृ 389 हुमायू नामा पृ 114 मुगलकालीन भारत हुमायू, भाग 1 रिजवी पृ 539

57 शर्मा जी एन उपयुक्त पृ 315-17, ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 1 पृ 299 ईश्वरीप्रसाद द लाइफ एण्ड टाइमस ग्राफ हुमायूँ पृ 214 15 कानूनगो शेरशाह एण्ड हिज टाइमस पृ 369

58 रेऊ उपयुक्त, पृ 123 कानूनगो, उपयुक्त पृ 381 82

59 निगम एस बी पी सूर वश का इतिहास भाग1 अलबदायूनी मुत ग्वबुत्तवारीख पृ 261 (अनुवाद)

60 वही तारीखे शरशाही पृ 214 जेम्स टाड भाग 2 पृ 21 वीर विनोद पृ 810

61 कानूनगो उपयुक्त पृ 421

62 मा प री विगत भाग 2 पृ 57, राव मालदेव री वात परम्परा भाग 11 पृ 42, आसोपा आसोप का इतिहास पृ 37 38

63 आसोपा, वही पृ 37, मा प री विगत, भाग 2 पृ 57 निगम एस बी पी (तबकाते अक्वरी) पृ 251 तारीख फरिश्ता पृ 282 तारीखे दाऊदी प 421

64 निगम उपयुक्त तारीख फरिश्ता पृ 282 मु तखबुतवारीख पृ 261-62, रेऊ, उपयुक्त पृ 129

65 निगम उपयुक्त तारीखे फरिश्ता पृ 282, रेऊ वही, पृ 129

66 आसोपा उपयुक्त पृ 38 39

67 जाधपुर राज्य की ख्यात पृ 82

68 मु न ख्यात भाग 2 पृ 157 58

69 मा प री विगत भाग 2 पृ 57

70 मारवाड का इतिहास, भाग 1, पृ 129 (पाद टिप्पणी)

71 आसोपा आसोप का इतिहास पृ 38 40

72 देवीप्रसाद राव मालदेव जी का जीवन चरित्र पृ 3 4 वीर विनोद पृ 810 दयालदास री ख्यात भाग 2 पृ 19

73 निगम उपयुक्त पृ 262 और 282-83

74 रेऊ उपयुक्त भाग 1 प 130 तबकात अकबरी म 20 000 सनिक लिखे है। वहाँ यह भी लिखा है कि इन बीस हजार सवारो म से रात म रास्ता भूल जाने के कारण सिर्फ 5 या 6 हजार सवार शरशाह की सेना के करीब पहुचे। (निगम पृ 251)

75 (।) गौ ही ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास पृ 305 06 दृष्ट य पाद टिप्पणी स 2 यह युद्ध गिररी सुमेल के बीच हुआ उसके प्रमाण म एक दोहा प्रस्तुत है—

गिर्री तोरे गार म लबी वधी खजूर।
जत कू प आखिया सग नडो घर दूर॥

(॥) निगम उपयुक्त मु तखबुतवारीख पृ 262 63

76 ऊदावत किशनसिंह ऊदावत राठौड इतिहास पृ 38

77 निगम उपयुक्त तारीख शरशाही पृ 215

78 (।) निगम उपयुक्त तारीखे शेरशाही पृ 215 मुतखबुतवारीख पृ 263 तारीख फरिश्ता पृ 283

(॥) ऊदावत किशनसिंह उपयुक्त पृ 39 40 पर लिखा एक प्राचीन छप्पय—

प्रमुख छ साम ता
खागडेल भिड खीम खला दल त्रिजडो खड।
सबल जतसी सूर थटा पतसाही थड॥
जेता कूपा जोध गयन्द दुरवारा गज।
अखेराज चहुआण मिडा दल दिल्ली मज॥
पचायण सूरो प्रबन किलमाणा कलहन कर।
मान जसा मुन्धिया पछ सावत छ साथ मर॥१॥

79 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 83 84 रेऊ मारवाड का इतिहास भाग 2 पृ 658 59 मुरारीदानजी की ख्यात भाग 2 पृ 120 22 वीर विनोद पृ 811 ऊदावत किशनसिंह उपयुक्त पृ 41 42 (इसम पाच अतिरिक्त नाम है) मा प री विगत भाग 1 पृ 56 57

80 'इतिहास नीवाज ग्रथ मे ताजीमी सरदारो के जो युद्ध म काम आये नाम दिय। ये 20 नाम हैं प 41 42

81 मा प री विगत भाग 2 पृ 58

82 वही, भाग 1, पृ 56

83 परम्परा भाग 11, पृ 42

84 शेरशाह पृ 329

85 शेरशाह और उसका समय, प 429

86 सारडा, अजमेर पृ 152 तथा शेरशाह और उसका समय पृ 434

87 ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ 306 पाद टिप्पणी 2

88 वीर विनाद पृ 810

89 बाकीदास की ख्यात पृ 13

90 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 82

91 रामकरण आसोप का इतिहास पृ 43 इतिहास नीबाज पृ 42
शिवनाथसिंह कूपावत राठौडा का इतिहास पृ 145

92 ऊदावत किशनसिंह ऊदावत राठौड इतिहास पृ 43

93 यह जानकारी हम ठाकुर भीमसिंहजी के सौजन्य से प्राप्त हुई है।

94 जोधपुर राज्य की ख्यात (रघुवीरसिंह) पृ 86 नणसी ने चार माह
रहना ही लिखा है (मू नै ख्यात भाग 2 पृ 158)

—पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग, ज ना व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर